INTERNATIONAL MAGAZINE
RNI NO. 64884/96

30/-

ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीअै एकु एकु वखाणीअै।।
आतम पसारा करण हारा प्रभ बिनां नहीं जाणीअै।।

आत्म मार्ग

JANUARY 2018

टूटी गाढनहार गोपाल।।.....

खिदराणे दी ढाब (श्री मुक्तसर साहिब) में क्षमाकर्त्ता सतगुरू धन्य श्री गुरू गोबिंद सिंह जी महाराज,
बेमुखा फाड़कर भाई महा सिंह जी को जीवन के अन्तिम समय में अपनी पावन गोद की गर्माहट देकर टूटे हुए सम्बन्ध को पुनः जोड़ते हुए।

आत्म मार्ग

वर्ष बाइसवां - अंक बारहवां, जनवरी 2018

गुरद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहिब

संचालक

श्रीमान सन्त बाबा वरियाम सिंह जी महाराज (ब्रह्मलीन)
तथा संत माता (बीजी) रणजीत कौर जी (ब्रह्मलीन)

चेयरमैन
सन्त बाबा लखबीर सिंह जी

एडिटर-इन-चीफ
सन्त बाबा हरपाल सिंह जी

प्रबन्ध सम्पादक
भाई सुखविंदर सिंह

मुख्य सम्पादक
डा. जगजीत सिंह (97798 16909)

मासिक पत्रिका न पहुँचने सम्बन्धी पूछताछ

यदि आपको माह की 15 तारीख तक आत्म मार्ग पत्रिका प्राप्त नहीं हो पाती है तो आप कृप्या निम्नलिखित सम्पर्क नम्बरों पर कार्यलय समय प्रात: 10.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक सम्पर्क करने की कृपा करें -

सम्पर्क न. - **9417214391, 9417214379**
8437812900,
Email : atammarg1@yahoo.co.in

Postal Address for any Enquiry, Money Order's :

'ATAM MARG' MAGAJINE
Gurdwara Ishar Parkash, Ratwara Sahib
(New Chandigarh) P.O. Mullanpur
Garibdas, Teh. Kharar, Distt. S.A.S.
Nagar (MOHALI) - 140901, Pb. India

SUBSCRIPTION - शुल्क (देश)

वार्षिक	आजीवन सदस्यता	प्रति कापी
300/-	3000/-	30/-
320/-	3020/-	(For outstation cheques)

SUBSCRIPTION FOREIGN (विदेश)

	Annual	Life
U.S.A.	60 US$	600 US$
U.K.	40 £	400 £
Canada	80 Can$	800 Can$

समस्त प्रकाशन अधिकार सुरक्षित हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक सन्त बाबा हरपाल सिंह जी ने 'आत्म मार्ग' जै आफ सैट प्रिंटर्ज, 905 इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज़-2, चण्डीगढ़ से छपवा कर मुख्य कार्यालय 'आत्म मार्ग' रतवाड़ा साहिब, डाकखाना मुल्लांपुर, तहसील खरड़, एस.ए.एस. नगर (मोहाली), पंजाब से प्रकाशित किया।

Please visit us on internet at :-
For Atam Marg Email : atammarg1@yahoo.co.in,
Website & Live video -

www.ratwarasahib.in
www.ratwarasahib.org } **(Every sunday)**

Email :sratwarasahib.in@gmail.com

विदेशों में आत्म मार्ग की शाखाएँ

अमेरिका - बाबा सतनाम सिंह अटवाल
फोन तथा फैक्स : 001-408-263-1844

कैनेडा - भाई सरमुख सिंह पंनू, वैनकूवर
फोन : 001-604-433-0408

भाई तरसेम सिंह बैंस - मोबाइल 001-604-862-9525
फोन : 001-604-288-5000

भाई जसबीर सिंह राणू - फोन : 001-604-589-9189

इंगलैंड - बीबी गुरबख्श कौर तथा भाई जगतार सिंह जग्गी
फोन:0044-121-200-2818 फैक्स :0044-121-200-2879,
भाई अरविंदर सिंह (राज) मोबाइल:0044-7968734058

आस्ट्रेलिया : बीबी जस्प्रीत कौर: मोबाइल-0061-406619858

रतवाड़ा साहिब की संस्थाओं के सम्पर्क नम्बर

* आत्म मार्ग मैगज़ीन (पंजाबी, हिन्दी तथा अंग्रेजी)
9417214391, 9417214379, 8437812900

* गुरू गोबिंद सिंह विद्या मन्दिर सीनियर सैकण्डरी स्कूल
(CBSE) - 0160-2255003

* माता साहिब कौर मुफ्त सिलाई सैंटर - **96461-01996**

* सन्त वरियाम सिंह मैमोरियल पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल
(PSEB) अंग्रेजी माध्यम - **95920-55581**

* सन्त वरियाम सिंह चैरिटेबल अस्पताल (मुफ्त)
98786-95178, 92176-93845

* इंटरनैशनल डिवाइन स्कूल आफ़ नर्सिंग -
94172-14382

* इंटरनैशनल डिवाइन कालेज आफ़ ऐजूकेशन (बी. एड.)
94172-14382

* अकाल वृद्ध आश्रम (मुफ्त) **98157-28220**

विशेष जानकारी के लिए

श्री मान जी	-	98551-32009
श्री आखण्ड पाठ साहिब बुकिंग	-	94647-12900
आडियो-वीडियो लाईब्रेरी	-	98728-14385, 98555-28517
केवल टी.वी. नेटवर्क	-	94172-14385

अन्य सम्पर्क नम्बर
98889-10777, 96461-01996, 9417214381

विषय-सूची

1. सम्पादकीय 5
डा. सुखविन्दर सिंह

2. बारहमाहा 7
डा. जगजीत सिंह

3. बाबाणियाँ कहानियाँ 11
सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

4. श्री गुरू नानक देव जी 13
सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

5. धर्म हेत साका जिन कीआ 17
सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

6. माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि जानिआ।। 25
सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

7. इंग्लैंड में 'संगत टी.वी.' पर साक्षात्कार 44
सन्त बाबा हरपाल सिंह जी

8. टूटी गाढनहार गोपाल ... 48
डा. जगजीत सिंह

9. गुरू गोबिंद सिंह रचित - जफरनामा 50
सन्त निरंजन सिंह नूर

10. गुरु नानक आगमन 52
डा. भाई वीर सिंह जी

11. गुरबाणी अर्थ भण्डार 55
सन्त हरी सिंह जी रन्धावे वाले

12. नौवें रत्न - सन्त ईशर सिंह जी महाराज, राड़ा साहिब 57
ज्ञानी मेहर सिंह जी

13. स्वामी राम जी के प्रेरणात्मक विचार 61
डा. स्वामी राम जी

14. विशेष जानकारी - बैंक खाता, आत्म मार्ग मैगजीन सदस्यता प्रारूप, अस्पताल जानकारी, तथा पुस्तक सूची 63

सम्पादकीय

डा. भाई सुखविन्दर सिंह

टूटी गाढनहार गोपाल ॥
सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥ *अंग - 282*

अंगीकारु कीओ प्रभि अपुनै भगतन की राखी पाति॥
नानक चरन गहे प्रभ अपने सुखु पाइओ दिन राति॥
अंग - 681

अपने दास का हलतु पलतु सवारै ॥
पतित पावन प्रभ बिरदु तमारै ॥ *अंग - 866*

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै
इहु बिरदु सुआमी संदा ॥ *अंग - 544*

दिव्य वाणी की उपर्युक्त पंक्तियों में समर्थ सतगुरू जी की महिमा, उनका सारी सृष्टि के साथ तारात्म्य तथा उनके क्षमा कर देने वाले स्वभाव की प्रत्यक्ष झलक दृष्टिगोचर हो रही है। अपने सिक्ख के अवगुणों पर कोई भी ध्यान न देते हुए बस अपना बिरद पालने वाले तथा उसका लोक तथा परलोक संवार देने वाले केवल तथा केवल समर्थ सतगुरू श्री गुरू गोबिंद सिंह जी महाराज।

प्रकृति द्वारा सृजित प्रत्येक समय, इतिहास के आगोश में प्रत्येक नव-सन्देश को सम्भाल कर रखता है। सदियों व दशकों का विभाजन वर्षों के माध्यम से किया जाता है, वर्षों का विभाजन महीनों तथा हफ्तों का दिनों, दिनों का घंटों तथा घंटों का मिनटों व सैकंडो में किया जाता है। इनसे समय की छोटी इकाई पल, चसुए तथा विसुए माने गए हैं। बहुत सारा इतिहास बीत चुके समय ने अपनी आगोश में सम्भाल कर रखा होता है। इसके हवाले से यदि गौरवशाली सिक्ख इतिहास को सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो बहुत सारे तत्वों की रूपमानता होती है जो कि मानवता का मार्गदर्शन करने वाले हैं। भारतीय मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार एक वर्ष में दो-दो महीने वाली छः ऋतुएं मानी गई हैं। यदि हम अंग्रेजी महीनों के हिसाब से देखें तो वर्ष का आरम्भ जनवरी माह से होता है। इसी क्रम में गौरवशाली इतिहास व स्वाभिमानयुक्त जीवन जीने की पराकाष्ठा का संदेश देने आ रहा है - जनवरी का महीना। जनवरी तथा फरवरी ठंड व कोहरे की ऋतु मानी गई है। यदि हम सिक्ख इतिहास पर अपनी सूक्ष्म दृष्टि से दृष्टिपात करें तो जनवरी माह में माघी वाले दिन कलगीधर पातशाह जी ने अपने प्यार की गर्माहट देकर टूटे हुओं को पुनः अपने गले के साथ लगाया था यानि कि उन्हें अपने साथ जोड़ा था। जैसे कि इस समय को पतझड़ वाला समय कहा जाता है, इस माह में सारी वनस्पति ठण्ड व कोहरे की लपेट में आकर पूरी तरह से सिकुड़ चुकी होती है। वनस्पति के लगभग सारे पौधों व वृक्षों के पत्ते मुरझा कर व सूखकर अपने मूल से टूट जाते हैं। इस प्रकार से अपने मूल से टूट व सूख चुके सिक्खों को पुनः अपना प्यार प्रदान करके उनमें नई कोपलों को फूटने का अवसर प्रदान किया भावार्थ ठंडी व कोहरे वाली ऋतु में सतगुरू जी ने अपने प्यार की गर्माहट प्रदान करके 40 मुक्तों के लोक व परलोक में नवीन कोपलों रूप नवीन सुबह की शुरुआत की तथा उन्हें आवागमन से पूर्णतः मुक्त कर दिया। इस ऋतु के बाद मार्च तथा अप्रैल के महीने आते हैं। जिस प्रकार से पतझड़ के बाद बसन्त ऋतु आती है, उसी प्रकार से कौम के अन्दर भी गुरू जी ने बसन्त ऋतु की भांति नया उत्साह, नई रूह, नया जलाल तथा नए रूप का प्रतीक होला-महल्ला प्रदान किया। खालसा पन्थ का प्रकट दिवस भी इसी ऋतु में, अस्तित्व में आया। मई तथा जून के महीने अत्यन्त तपिश वाले महीने माने गए हैं। इन महीनों में सारी वनस्पति, जीव-जन्तु व मनुष्य आदि गर्मी से त्राहि-त्राहि कर रहे होते हैं और ठंडी वायु की जरूरत सबसे जरूरी प्रतीत होने लगती है। किसी समय भारत के राजनैतिक वातावरण में भी इसी प्रकार की तपिश थी और भारत के राजभाग के तख्त पर बैठा हुआ जहाँगीर भी तप रहा था, चन्दू तप रहा था, बादशाह के अहिलकार, वजीर, शेख अहमद सरहंदी, मुर्तजा खान तथा बादशाह के चारों तरफ घिरे रहने वाले सारे लोग तप रहे थे, आग से भी लाल गर्म लोहे की तवी भी दहक रही थी लेकिन इस तवी पर शोभायमान पाँचवें सतगुरू श्री गुरू अरजन देव महाराज जी बर्फ की अपेक्षा भी अधिक ठंडे थे। जुलाई व अगस्त को वर्षा ऋतु माना जाता है। वनस्पति को वर्षा के माध्यम से नया जीवन प्राप्त होता है और चहुँ ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई पड़ती है। सिक्ख इतिहास के अन्दर इन महीनों में मानवता तथा रूहानियत के केन्द्र श्री हरिमन्दिर साहिब में पाँचवे महाराज जी ने इलाही वाणी के पहले प्रकाश आदि ग्रन्थ के रूप में करवाए, तप्त लोकाई को अमृतमयी वाणी की वर्षा से शरशार किया भावार्थ हरा-भरा किया। सितम्बर व अक्टूबर को हुमस का समय माना गया है, इस समय में चौथे पातशाह धन्य श्री गुरू रामदास महाराज जी के प्रकाश हुए। इस महीने में दूसरे चौथे तथा पाँचवें महाराज जी को गुरुगद्दी भी प्राप्त होती है। मानवता के अन्दर पड़ी हुई अज्ञानता की

हुमस को गुरू साहिबान ने दूर करके ज्ञान के प्रकाश के माध्यम से ठण्डक प्रदान की। नवम्बर तथा दिसम्बर के महीने मौसम के परिवर्तन के बाद ठंडक की शुरूआत के महीने हैं। इस समय के दौरान नौवें पातशाह जी ने तिलक व जनेऊ की रक्षा करके सम्पूर्ण मानवता के मानवीय अधिकारों की रक्षा करने का सन्देश अपनी शहादत देकर किया। भारतवर्ष के राजनैतिक ताने-बाने में मौसम परिवर्तन की भांति परिवर्तन आया। 'धरम हेति साका जिनि कीआ सीस दीआ पर सिररु न दीआ।।' के सिद्धान्त की पूर्ति हुई। सारी सृष्टि को धर्म की चद्दर के साथ ढका। बदलते हुए राजनैतिक मौसम के जुल्म व अत्याचार से धन्य गुरू तेग बहादर महाराज जी ने शहीदी देकर सारे हिन्दुस्तान को बचाया। दशम पिता साहिब श्री गुरू गोबिंद सिंह महाराज जी इस राजनैतिक मौसम में एक अत्यन्त नया परिवर्तन लेकर आए। इस परिवर्तन को स्थापित करने के लिए आपने जगत माता गुजर कौर जी, चारों साहिबजादे तथा अनेकों प्यारे गुरसिक्खों को अन्याय, अत्याचार तथा शोषण के विरुद्ध शहीद करवाया। परिवार के बिछोड़े पड़े। सतगुरू जी ने धर्म व देश पर अपना सब कुछ न्यौछावर करके, अनेकानेक विषम परिस्थितियों से जूझते हुए तथा बुलन्दावस्था में रहते हुए, धार्मिक वातावरण में एक नया परिवर्तन स्थापित किया। 'सूरा सो पहिचानीऐ जो लरै दीन के हेति।। पुरजा पुरजा कट मरै कबहू न छाडै खेति।।' का मानदंड स्थापित करते हुए स्वाभिमान, सम्मान, इज्जत व सच्चे धार्मिक होने का सन्देश आपने देशवासियों को दिया।

उपर्युक्त विचार से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बदलते मौसम में सतगुरू जी ने नए सन्देश प्रदान करके मानवता के लिए अत्यन्त नवीन मानदंड स्थापित किए। सतगुरू जी द्वारा प्रदत्त इन नए सिद्धान्तों व मानवता के लिए उनके द्वारा किए गए उपकारों को हमें सदैव ही याद रखना चाहिए।

विशेष रूप से सिक्ख इतिहास में जनवरी का महीना माघी वाला महीना है। खिदराणे की ढाब के अन्दर जुल्म तथा जालिम के विरुद्ध जूझते हुए 40 सिंहों ने शहादतें प्राप्त कीं। सबके गुनाहों को माफ कर देने वाले तथा टूटे हुओं को जोड़ने वाले सतगुरू जी ने उन सिक्खों पर असीम कृपा की तथा उन्हें असीम आशीर्वाद दिए। आप जी ने अपने प्यारे शहीद सिक्खों के शीशों (सिरों) को अपनी गोद में रखते हुए ये आशीर्वाद दिए कि यह मेरा पाँच हजारी है, यह मेरा दस हजारी है। जितने कदम किसी ने मोर्चे से आगे बढ़कर युद्ध किया और युद्ध करते हुए शहादत प्राप्त की तो सतगुरू जी उतना ही बड़ा उसे आशीर्वाद देते जाते। 39 सिक्खों को इस प्रकार के आशीर्वाद देते हुए आप चीलसवें सिक्ख योद्धा व जरनैल महा सिंह जी के पास पहुँचे तथा उसे अपने पावन आशीर्वादों द्वारा निवाजा। भाई महा सिंह को आपने वचन किया कि मेरे प्यारे महा सिंह तुम्हारे लिए मुक्ति, भोगों की दुनिया व युक्तियों का संसार यानि की सब कुछ हाजिर है, जो माँगना है, माँग लो। भाई महा सिंह जी ने प्यार व वैराग्य में सराबोर व सजल नेत्रों के द्वारा आपके दर्शन करते हुए विनती की कि महाराज जी! आपके दर्शनों के माध्यम से हमें सब कुछ प्राप्त हो गया है, अब हमें और कुछ भी नहीं चाहिए बस सच्चे पातशाह जी! टूटे हुओं को पुनः अपने चरणों के साथ जोड़ने की कृपा कर दीजिए। महाराज जी ने अपनी गोद में भाई महा सिंह का शीश रखते हुए, उनके द्वारा लिखे हुए बेदावे को वहीं पर फाड़ कर उसके लिए मुक्ति का दरवाजा खोला तथा टूटे हुओं का पुनः अपने साथ जोड़ लिया। इस प्रकार उन चालीस सिक्खों को चालीस मुक्तों की पदवी प्रदान करने के बाद सच्चे पातशाह जी ने अपने अगले पड़ाव के लिए प्रस्थान किया।

सतगुरू सच्चे पातशाह जी ने इलाही वाणी के पावन सिद्धान्त 'टूटी गाढनहार गोपाल सरब जीअ आपे प्रतिपाल' की पूर्णता की। शरण में आने वाले की लाज रखना आप जी का स्वभाव ही है। इसी विरद या दायित्व का पालन आप जी ने 'खिदराणे की ढाब' पर किया। इस आशीर्वाद प्राप्त धरती को आज श्री मुक्तसर साहिब के नाम से सम्मानित व याद किया जाता है। आओ! हम सब भी इस प्रार्थना में जुड़ें कि हे महाराज जी! अपने बिरद की लाज रखते हुए हमें भी अपने साथ जोड़ लो, हम टूटे हुओं को भी अपने साथ जोड़ लो। हमें भी अपना प्यार व गुरवाणी की प्रीति प्रदान कर दो, हमें भी परमेश्वर के प्यारों का मिलाप प्रदान कर दो, हमें भी धर्म की आजीविका व मिल बाँट कर ग्रहण करने का व्यवहारिक जीवन प्रदान कर दो, हमें भी पूजा अकाल की, दीदार खालसे का तथा पर्चा शबद का प्रदान कर दो। कौम में एकसुरता व पारस्परिक प्रेम भर दो एवं पारस्परिक मिल बैठने का सौभाग्य प्रदान कर दो। इसके अतिरिक्त आप तो अन्तर्यामी व घट-घट की जानने वाले हो, इसलिए आप अपने खालसे को बुलन्दावस्था वाला जीवन प्रदान कर दो, लोक व परलोक संवार दो। अपने साथ जोड़कर अपने विरद व भेषवूषा का लाज रखो।

गुरू जी कृपा करें समस्त पाठकजनों व श्रद्धालुजनों को अंग्रेजी कैलेण्डर के अनुसार वर्ष 2018 के आगमन की लाखों-लाखों मुबारकबाद हो। साल 2018 आप सभी के लिए गुरू-प्यार, ईश्वरीय प्यार व सुखों से भरा हुआ हो। लोक व परलोक में गुरू जी आप सबकी रक्षा करें।

अपने दास का हलतु पलतु सवारै ॥
पतित पावन प्रभ बिरदु तमारै ॥

यही हार्दिक अरदास (प्रार्थना) आप सबके लिए आत्म मार्ग संस्था तथा रतवाड़ा साहिब ट्रस्ट के मुखी सन्त बाबा लखबीर सिंह जी की तरफ से है। सतगुरू जी समस्त प्रेमीजनों को सेवा व सिमरन की दात प्रदान करें जिसकी बदौलत चहुँओर सुखों का ही वातावरण स्थापित हो।

माघि सुचे से काढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु

(माघि माह की संक्रान्ति - 14 जनवरी, 2018 दिन रविवार)

डा. जगजीत सिंह
मुख्य सम्पादक

राग तुखारी में प्राप्त गुरु नानक देव जी के बारहमाहा में से तथा राग माझ में उच्चारण किए गए बारहमाहा में से माघ महीने का पाठ तथा उसकी सरल व्याख्या -

माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि जानिआ ॥
साजन सहजि मिले गुण गहि अंकि समानिआ ॥
प्रीतम गुण अंके सुणि प्रभ बंके तुधु भावा सरि नावा॥
गंग जमुन तह बेणी संगम सात समुंद समावा ॥
पुंन दान पूजा परमेसुर जुगि जुगि एको जाता ॥
नानक माघि महा रसु हरि जपि अठसठि तीरथ नाता ॥
अंग - *1109*

पद अर्थ - माघि = माघ नक्षत्र वाली पूर्णमाशी का महीना। मजनु = डुबकी, दानु = नाम का दान, जनम करम मलु = कई जन्मों के किए गए कर्मों से पैदा हुई विकारों की मैल, गुमानु = अहंकार, कामि = काम में, करोधि = क्रोध में, मोहीअै = ठगे जाना, सुआन = कुत्ता, परवानि = स्वीकृत (धार्मिक कार्य), करि = करके, सुजानु = सयाना, कोढीअहि = कहे जाते हैं।

पौष के माह में ठंडक, पाला, कोहरा खूब पड़ता है, अत्यन्त तीव्र सर्दी पड़ती है और मनुष्य की काफी शक्ति सर्दी से बचने में ही खर्च हो जाती है लेकिन जो प्राणी नाम की गर्मी को अनुभव करते हैं, जिनके हृदय में गुरु-प्यार तथा मिलाप की लगन होती है, उनके मार्ग में वर्षा, पाला या आँधी कोई रुकावट नहीं बनती है, गुरु जी का फुरमान है -

झखड़ु झागी मीहु वरसै भी गुरू देखण जाई ॥ १३ ॥
समुंदु सागरू होवै बहु खारा
गुरसिखु लंघि गुर पहि जाई ॥ १४ ॥
जिउ प्राणी जल बिनु है मरता
तिउ सिखु गुर बिनु मरि जाई ॥ ***अंग -*** *757*

माघ का महीना तीर्थों के स्नान के लिए बहुत ही शुभ व पावन माना जाता है। लोग प्रयाग आदि तीर्थों पर विशेष रूप से स्नान करने के लिए जाते हैं। श्री गुरु महाराज जी ने बाह्य रस्मों-रिवाजों तथा कर्मकाण्डीय रीतियों की जगह पर अपने मन के अन्दर की शुद्धता पर अधिक बल दिया है, सारी धार्मिक क्रियाएँ, परमेश्वर की प्रसन्नता लेने के लिए की जाती है। श्री गुरु जी 'जपु' वाणी में फुरमान करते हैं-

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी॥
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥
अंग - *2*

अर्थात तीर्थों पर जाकर मैं स्नान तभी करूँ यदि ऐसा करने से वह परमात्मा मेरे ऊपर प्रसन्न हो सके लेकिन यदि ऐसा करने से वह प्रसन्न नहीं होता है तो मैं तीर्थों पर जाकर क्या हासिल कर सकूँगा? अकाल पुरुष द्वारा उत्पन्न की हुई जितनी भी दुनिया को मैं देखता हूँ, इसमें परमात्मा की कृपा के बिना किसी को कुछ भी प्राप्त नहीं होता है और न ही कोई कुछ ले सकता है। जपुजी साहिब की इक्कीसवीं पउड़ी में आप जी समझाते हैं -

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥
जे को पावै तिल का मानु ॥
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ ***अंग -*** *4*

अर्थात तीर्थ यात्रा, तीर्थ स्नान, तप साधना जीवों पर दया करनी, दिया हुआ दान, इन कर्मों के बदले में यदि किसी को कोई बड़ाई मिल भी जाए तो वह बहुत थोड़ी सी ही मिलती है लेकिन जिस मनुष्य ने अकालपुरुष के नाम में अपनी सुरति को जोड़ा है, जिसका मन नाम में पसीज गया है तथा जिसने अपने मन में अकालपुरुष के प्यार को बसाया हुआ है उस मनुष्य ने तो मानो अपने आन्तरिक तीर्थ में मल-मल कर स्नान कर लिया है तथा अपने अन्दर निवास कर रहे अकालपुरुष के साथ जुड़कर अपने मन की अच्छी तरह से मैल उतार कर उसे पूर्णरूपेण साफ कर लिया है।

इसी दृष्टि से गुरु जी माघ माह के आरम्भ में ही फुरमान करते हैं -

माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि जानिआ॥
साजन सहजि मिले गुण गहि अंकि समानिआ॥
अंग - *1109*

अर्थात माघ माह में जिस जीव ने अपने हृदय रूपी तीर्थ

की पहचान कर ली है तथा नाम के पावन अमृत सरोवर में स्नान कर लिया है, उसकी देह व जीवात्मा पूर्णतः पावन हो जाती है। दरअस्ल वास्तविक तीर्थ स्नान है परमात्मा के गुणों को अपने हृदय में बसाना तथा उसके चरणों में लीन हो जाना जिसके फलस्वरूप पूर्ण स्थिर व सहजावस्था प्राप्त होकर प्रभु सज्जन का मिलाप प्राप्त हो जाता है।

माघ के माह में बहुत सारे भारतवासी गंगा, यमुना व सरस्वती तथा जहाँ पर इन नदियों का मिलाप होता है, उस संगम पर स्नान करने को बहुत बड़ा पुण्य कर्म मानते हैं लेकिन गुरु जी उपदेश करते हैं कि हे मेरे सुन्दर प्रियतम! यदि तेरे गुणों को अपने हृदय में बसाकर, तेरा यशगान सुनकर, नाम-सिमरन करके मैं, तुम्हें अच्छा लगने लग पड़ूँ तो मानो मैंने अनेकों तीर्थों पर स्नान कर लिया है (प्रीतम गुण अंके सुणि प्रभु बंके तुधु भावा सरि नावा) अर्थात प्यारे प्रभु जी के चरणों में लीनता की अवस्था ही गंगा, यमुना व सरस्वती तीनों नदियों के मिलाप अर्थात त्रिवेणी या संगम की अवस्था है और वहीं पर मैं सातों समुद्रों को समाया हुआ मानता हूँ। (गंगा, जमुना तह बेणी संगम सात समुंद समाना) नाम जप-सिमरन के द्वारा, प्रभु-गुण गायन के द्वारा जो मनुष्य प्रभु जी के साथ प्यार डाल लेता है, प्रत्येक युग में व्यापक एक परमेश्वर को जान लेता है, मानो उसने सारे तीर्थों के स्नान तथा सारे पुण्य कर्म, दान व पूजा आदि कर लिए हैं। (पुंन दान पूजा परमेसुर जुगि जुगि एको जाता।।) यही नहीं बल्कि मानो उसने अड़सठ तीर्थों का महात्म्य भी प्राप्त कर लिया है। नानक माघी पदारसु हरि जपि अठसठि तीरथ नाता।। अतः वास्तविक तीर्थ स्नान तो नाम सरोवर में स्नान करना ही है। श्री गुरु नानक देव जी का फुरमान है-

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है॥
तीरथु सबद बीचारू अंतरि गिआनु है॥ अंग - 687

अर्थात मैं भी तीर्थ पर स्नान करने के लिए जाता हूँ लेकिन मेरे लिए परमात्मा का नाम ही बड़ा तीर्थ है। गुरू के शब्द को विचार-मण्डल में टिकाना ही मेरे लिए महान तीर्थ है क्योंकि इसकी बरकत से मेरे अन्दर परमात्मा के साथ गहरा सम्बन्ध जुड़ता है। सतगुरु द्वारा प्रदत्त यह ज्ञान मेरे लिए सदैव कायम रहने वाला तीर्थ स्थान है, यही मेरे लिए दस पावन दिवस (अमावस्या, संक्रान्ति, पूर्णमाशी, प्रकाश, रविवार, सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, दो अष्टमी तथा दो चौदष) है तथा यही मेरे लिए दसाहरा (दस पापों का हरण करने वाला दिन है एवं यही मेरे लिए गंगा का जन्म दिन है। इसलिए मैं तो प्रभु जी के नाम की ही याचना करता हूँ और सदैव यह प्रार्थना करता हूँ कि हे धरती के आधार प्रभु जी! मुझे अपना नाम प्रदान करो क्योंकि यह सारा संसार विकारों के अधीनस्थ रोगी हुआ पड़ा है और इनका सही उपचार केवल प्रभु जी का नाम ही है। सच्चे नाम के बिना मन के विकारों का अन्य कोई भी उपचार है ही नहीं और इसके अभाव में तो उल्टा मन को विकारों की मैल लग जाती है। गुरु का पावन शब्द मनुष्य को सदैव आत्मिक ज्ञान प्रदान करता है और यही शाश्वत तीर्थ है यही शाश्वत तीर्थ स्थान है।

रागु माझ बारहमाहा महला ५
माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥
जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ भाभी गुमानु ॥
कामि करोधि न मोहिऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥
माघि सुचे से काँढीअहि जिन पूरा गुरू मिहरवानु ॥
अंग - 135

माघ माह का पहला दिन अर्थात माघ नक्षत्र वाली पूर्णमाशी वाले महीने का प्रथम दिवस हिन्दू शास्त्रों के अनुसार अत्यन्त पावन माना जाता है। माघी के दिन हिन्दू सज्जन प्रयाग तीर्थ पर स्नान करने को अत्यन्त पुण्य कर्म समझते हैं। लेकिन गुरु जी बाह्य सारी क्रियाओं को निरर्थक कर्मकाण्ड मानते हैं क्योंकि कोई व्यक्ति जितना अधिक तीर्थों पर भ्रमण करता है, तीर्थ स्नान करता है, वह उतना ही अधिक अहंवादी प्रवृत्ति का धारणी बन जाता है और वह अन्य लोगों को अपनी तीर्थ यात्राओं के बारे में बताता फिरता है। गुरु जी का फुरमान है -

बहु तीरथ भविआ तेतो लविआ॥ अंग - 467

जितना भी कोई तीर्थों की यात्राएँ करता है, उतना ही जगह-जगह पर बताता घूमता है कि मैंने अमुक-अमुक स्थान की यात्रा कर ली है, फलस्वरूप तीर्थ यात्रा लाभकारी होने की जगह पर अहंकारी होने का कारण बन जाती है। इसीलिए इस महीने के माध्यम से गुरु जी उपदेश करते हैं कि हे प्राणी! तुम इस माह में तीर्थों पर स्नान करने की जगह पर गुरुमुखों व गुरु प्यारे साधुजनों की संगत करो, तुम्हारे लिए यही तीर्थों का स्नान है, मन में नम्रता लाओ और इस प्रकार से उनके चरण-रज का स्नान करो। (माघि मजनु संगि साधुआं धूड़ी करि इसनानु) उन गुरुमुख प्यारों की संगत में नाम जपो, परमात्मा का यशगान करो क्योंकि नाम-अभ्यासीजनों, गुरुमुखों, सन्त जनों व महापुरुषों की संगत में नाम सिमरन

अभ्यास वाला स्नान करने का बहुत बड़ा महात्म्य है। इस प्रकार की संगत बहुत बड़े भाग्यों के कारण ही प्राप्त हो पाती है।

संत का संग वडभागी पाईऐ॥

सन्तजनों व नाम अभ्यासी गुरुमुखजनों की संगत में घोर पापों का नाश हो जाता है।

महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता॥
मैलु खोई कोटि अघ हरे निरमल भए चीता॥
अंग - 809

श्री गुरू अरजन देव जी का फुरमान है -

अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मनकी पूरे।
नानक दासु इहै सुखु माँगै
मो कउ करि संतन की धूरै॥ *अंग - 13*

तथा अन्य सबको भी यह नाम का अमूल्य उपहार बाँटो (हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु।।) श्री गुरु राम दास जी गुरसिक्ख की परिभाषा ही यह कथन करते हैं कि गुरसिक्ख, ब्रह्ममुहुर्त में उठकर नाम स्मरण करता है, स्वयं नाम जपता है तथा अन्य लोगों को नाम जपने के लिए प्रेरित करता है। रसना (जिह्वा) के द्वारा नाम का जप करना है तथा कानों के द्वारा वाहिगुरू-वाहिगुरू गुरमन्त्र को सुनना है। इस प्रकार से हमारा मन जुड़ने लगता है। गुरवाणी को भी ध्यानपूर्वक पढ़ना, कानों के द्वारा सुनना तथा उसे जीवन में धारण करना ही नाम जपना है। गुरवाणी का स्पष्ट उपदेश है कि स्वयं नाम का जप करना है तथा अन्य लोगों को नाम जपने के लिए प्ररित करना है। गुरुमुख स्वयं नाम जपता है तथा दूसरों को नाम जपने के लिए प्रेरित करता है। ऐसे गुरसिक्ख की चरण धूल को प्राप्त करने के लिए गुरु जी स्वयं लालायित रहते हैं अर्थात वे उनकी चरण रज को अत्यन्त सम्मान देते हैं -

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥
.....
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की
जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥ *अंग - 305*

ऐसा करने से यानि कि नाम स्मरण के द्वारा कई जन्मों में किए गए कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न हुई विकारों की मैल तुम्हारे मन से उतर जाएगी और मन में से अहंकार दूर हो जाएगा। (जनम करम मलु उतरे मन ते जाइ गुमानु) जपुजी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी फुरमान करते है कि पानी के स्नान से केवल शरीर की ही मैल दूर होती है और कपड़ों की मैल उतारने के लिए साबुन का प्रयोग करना पड़ता है लेकिन यदि मनुष्य का मन व बुद्धि पापों के द्वारा मलिन हो जाए तो उन पापों की मैल अकालपुरुष के नाम स्मरण व नाम प्यार के माध्यम से ही साफ की जा सकती है -

भरीऐ हथु पैरू तनु देह ॥
पाणी धोतै उतरसु खेह ॥
मूत पलीती कपड़ु होइ ॥
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥
पुंनी पापी आखणु नाहि ॥
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥ *अंग - 4*

जब कोई भी अभ्यासी, जिज्ञासु या गुरू प्यारा साधक, किसी सन्त, साधू या नाम अभ्यासी की संगत में नाम-सिमरन में अपने ध्यान को जोड़ता है तो उसकी कई जन्मों से मन के ऊपर एकत्र हुई कर्मों की मैल उतर जाती है, नाम के अन्दर बस जाने से मन में हउमै व अहंकार का नाश हो जाता है क्योंकि जहाँ हउमै है, वहाँ पर नाम नहीं हो सकता है। हउमै तथा नाम दोनों एक स्थान पर नहीं बसते हैं, ऐसा गुरवाणी का विधान है -

हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ॥
अंग - 560

नाम अभ्यासी, काम, क्रोध की मार से भी बचा रहता है, लोभ रूपी कुत्ता भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता है, आशा-तृष्णा के रोग उससे दूर ही रहते हैं। इस प्रकार की कृपा नाम अभ्यासी के ऊपर हो जाती है -

सबदि रते से निरमले तजि काम क्रोधु अहंकारु ॥
नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहि उर धारि ॥
अंग - 58

गुरमुखि हरि जीउ सदा धिआवहु
जब लगु जीअ परान ॥
गुर सबदी मनु निरमलु होआ चूका मनि अभिमानु ॥
अंग - 1334

सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥
अंग - 136

तीर्थों के स्नान से शरीर तो भले ही साफ हो जाए लेकिन मन के विकार दूर नहीं हो पाते हैं अर्थात काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार पूर्ववत् कायम रहते हैं लेकिन नाम-स्मरण की बरकत के द्वारा काम, क्रोध में नहीं फँसता है तथा लोभ के प्रभाव में मनुष्य कुत्ते की भांति दर-दर भटकता है, यह भटकन भी नाम-सिमरन के द्वारा समाप्त हो जाती है

(कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु) प्रभु जी की शरण में जाने से नाम-सिमरन के अभ्यास के माध्यम से सारे विषय विकार नियन्त्रण में आ जाते हैं। गुरवाणी का फुरमान है -

काम क्रोध अरू लोभ मोह बिनसि जाइ अहंमेव ॥
नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ॥

अंग - *269*

नाम-स्मरण के सच्चे मार्ग पर चलने से सारा संसार उसकी स्तुति करता है। (सचे मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु)। नाम स्मरण करने वाले प्राणी को धार्मिक कर्मकण्डों व रस्मी क्रियाओं से भी छुटकारा मिल जाता है। अड़सठ तीर्थों के स्नान, सारे पुण्य कर्म, जीवों पर दया करनी आदि जो ऊंची धार्मिक क्रियाएँ मानी जाती हैं, ये सारी क्रियाएँ नाम-स्मरण में ही आ जाती हैं। (अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु) नाम स्मरण भी उसी की दात है लेकिन जिसके ऊपर उसकी कृपा हो जाती है, उसी को यह दात प्राप्त हो पाती है -

दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि॥

अंग - *83*

इहु पिरम पिआला खसम का जै भावै तै देइ॥

अंग - *947*

माया के मोह का मार्ग झूठ, पाखण्ड व फरेब का मार्ग है। धन जोड़ने की लालसा, पदवियाँ प्राप्त करने का लालच, जर, जोरू और जमीन सम्बन्धी लड़ाई-झगड़े, मनुष्य की सारी आयु इस झूठ की दुनिया में बरबाद हो जाती है।

सतगुरू से सच्चे, सत्य के मार्ग, परमात्मा के नाम मार्ग की समझ उत्पन्न होती है, जिस पर चलते हुए अपने निज-स्वरूप, परमात्म स्वरूप की पहचान होती है, परमात्मा की कृपा तथा मिलाप प्राप्त होता है तथा लोक व परलोक में सच्ची शोभा प्राप्त होती है। सासांरिक शोभा, झूठी, मतलबी व लालच से भरी होती है। मतलब पूरा न होने पर दोस्ती, दुश्मनी में बदल जाती है। सच्चा प्यार, प्रभु प्यार, नेक कमाई में बरकत होती है, मिल बाँट कर ग्रहण करने में प्रभु-प्रेम प्राप्त होता है और यह एक सच्ची क्रिया है। शेष सारे कर्म काण्ड, अड़सठ तीर्थों के स्नान, पापों की कमाई करके किए गए अनेकों दान इत्यादि करने से मन निर्मल नहीं होता है। नेक कमाई, महापुरुषों की संगत में जपा हुआ नाम तथा अन्य लोगों को नाम के साथ जोड़ने की प्रेरणा करनी ही सच्ची दया है जो कि प्रभु जी के दरबार में स्वीकार्य होती है -

जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥

अंग - *136*

परमात्मा अपनी कृपा करके जिस मनुष्य को नाम स्मरण की दात प्रदान कर देता है, उसी मनुष्य को वास्तविक अर्थों में सयाना कहा जा सकता है क्योंकि उसने जीवन के सही लक्ष्य व सही मार्ग की पहचान कर ली होती है (जिसनो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु) गुरु जी ऐसे गुरु-प्यारे, गुरसिक्खों, गुरुमुखों व हरिजनों से बलिहार जाते हैं, जिन्हें नाम स्मरण के द्वारा प्रभु जी का मिलाप प्राप्त हो जाता है। (जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबान) गुरु जी उपदेश करते हुए फुरमान करते हैं माघ माह में केवल उन्हीं प्राणियों को सुच्चे कहा जा सकता है, जिनके ऊपर पूरा सतगुरु दयावान होकर नाम-स्मरण की दात प्रदान करता है-

माघि सुचे से काढीअहि जिन पूरा गुरू मिहरवानु॥

अंग - *135*

केवल सांसारिक ज्ञान हासिल करना ही वास्तविक सच्चा ज्ञान नहीं है। सांसारिक ज्ञान वाला ज्ञान अपनी दिमागी चालाकियों के माध्यम से संसार को ठगता है, कारों, कोठियों, जमीनों, जायदादों का मालिक बनकर शोहरत हासिल करता है तथा अपने आपको एक कामयाब इन्सान मानता है।

बाहर से झूठी शोभा होने के कारण वह माया में मस्त रहता है, लेकिन गुरू जी उसकी सच्चाई प्रकट करके बतलाते हैं -

पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई॥

अंग - *417*

गुरू जी के अनुसार वास्तविक व सच्चा ज्ञान गुरू जी की कृपा के द्वारा ही प्राप्त होता है, जिसके द्वारा अपने वास्तविक स्वरूप की पहचान होती है -

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु॥

अंग - *441*

असली ज्ञान वान तो वही है जिसे परमात्मा ने अपनी कृपा के द्वारा सच्चा नाम प्रदान कर दिया है। साधु संगत में नाम अभ्यास के द्वारा की गई साधना को गुरू-कृपा का फल लगता है और प्रभु जी का मिलाप प्राप्त होता है। ऐसे गुरुमुख और नाम अभ्यासी जनों से गुरू जी कुरबान जाते हैं। माघ के महीने में वास्तविक रूप में सच्चे-सुच्चे व सयाने पुरुष वही हैं जो गुरू-कृपा के पात्र बनते हैं तथा प्रभु जी के नाम में अपने ध्यान को जोड़कर रखते हैं।

मुख्य सम्पादक
डा. जगजीत सिंह

बाबाणियाँ कहानियाँ

सन्त वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक अक्टूबर, अंग - 25)

राड़ा साहिब वाले महापुरुषों का जीवन बहुत ही गुप्त रूप से बीता। उनकी तपस्या का फल देखना हो तो आज देखो उनके साथ रहने वाले प्रेमी उनके द्वारा दिये गये आत्म ज्ञान द्वारा संसार में प्रकाश फैला रहे है, जिनमें जरग वाले महापुरुष बाबा भुपिन्दर सिंह जी, सन्त बाबा महेन्द्र सिंह जी जत्थेदार, सन्त तीर्थ सिंह जी शाम चौरासी, सन्त बाबा बलवन्त सिंह जी राड़ा साहिब, लंगर के श्री मान; सन्त बाबा तेजा सिंह जी भौंरे वाले, सन्त सुखदेव सिंह जी अलोरा वाले, सन्त साधु सिंह जी संगरूर वाले तथा और अनेक महात्माओं का ज़िक्र आता है। मुझे किसी ने बताया कि सन्त भुपिन्दर सिंह जी अमेरिका गये, किसी गुरद्वारे में उनका कीर्तन चल रहा था और वहाँ पर उन्होंने न तो अपने बाजे पर किसी को पैसे रखने दिये और न ही गुरद्वारा साहिब से कोई सरोपा लिया। इस घटना के बारे में मुझे अमेरिका से टैलिफोन पर पता चला और मुझे यह सुनकर अति प्रसन्नता हुई कि आप डालरों के लालच में न फंसे, बल्कि महापुरुषों द्वारा चलाई गई परम्परा को सर्वोत्तम समझते हुये सारे पैसे वापिस कर दिये। ऐसे महापुरुषों को कैसे निन्दित किया जाये तथा इन्हें भी इसी रस्सी में लपेट लिया जिसमें कई भेषी बुरी तरह से फंसे पड़े हैं।

जत्थेदार महेन्द्र सिंह का जीवन एक आदर्शमयी जीवन है, वह बचपन में ही महाराज जी के पास राड़ा साहिब पहुँच गये थे। जब मैं सन्त महाराज जी की सेवा में पहुँचा था उन्हें वहाँ पर आये अभी बहुत कम ही समय हुआ था। उस समय वह सीधे सादे स्वभाव के जिज्ञासु थे पर उनमें ऐसी दृढ़ता पाई गई कि सन्त महाराज जी का एक एक वचन दृढ़ता तथा दलेरी से कमाया उनकी बन्दगी एक रस चलती रही। चाहे उन्होंने स्कूल की शिक्षा बहुत कम ही पूरी की थी पर सन्त महाराज जी का एक एक वचन उनकी याद में समा गया, जिसे सन्त महाराज जी के ब्रह्मलीन होने के बाद संगतों ने सुनकर वही आनन्द प्राप्त किया जो सन्त महाराज जी के शरीरधारी होते हुये लूटा करते थे।

इसी प्रकार बाबू रला सिंह जी दभलान वालों का जीवन भक्ति का अवतार था। वह सारी जिन्दगी अपने प्रीतम के प्यार में आकूषत हुये जीवन में श्वांस बिताते रहे और भक्ति का नमूना हमारे जैसों के सामने रखा। जब से वह सन्त महाराज जी की सेवा में आये तभी उनका जीवन कठिन तितिक्षा में से गुज़रा। सन्त महाराज जी के तपोस्थान के मुख्य द्वार के सामने एक बोरी बिछा कर पड़े रहते और सेवा से कभी भी गफलत न की। हर समय वैराग की गहरी अवस्था में रहा करते। उनके सभी श्वास भजन रूप बने हुये थे क्योंकि वह प्यारे के बगैर एक क्षण मात्र भी जी नहीं सकते थे। उनकी हालत ऐसी थी जैसे मछली की पानी के बिना हुआ करती है उन्होंने अपने पास अपने निज का कुछ भी न रखा। सारी जायदाद दभलान के आश्रम में भेंट कर दी। सन्त महाराज जी के शरीर छोड़ने के बाद आप जी ने दभलान में डट कर उच्च आदर्श की पूर्ति के लिये पहरा दिया। मेरे साथ तो जब भी उनका मिलाप होता था वह विरह की साक्षात मूर्ति ही नज़र आया करते थे और बातें तो क्या करनी थी उनके सारे वचन सन्त महाराज जी के वजूद के चौर्गिद घूमते रहते थे। उन्होंने बहुत लम्बी आयु बिताई, पर एक श्वास के लिये भी संत महाराज जी लिव से बाहर न आये। उनका जीवन सचमुच ही इस महावाक्य के अनुकूल ढलता था-

साचु कहौं सुन लेहु सभै
जिन प्रेमु कीओ तिन ही प्रभु पाइओ।
तव परसादि सवैये

इसी प्रकार बहुत सारे प्रेमियों के जीवन बीते जिन्होंने महापुरुषों की छत्र छाया तथा संगत प्राप्त करके लिव की अवस्था में संसार में विचरते रहे। जिन में सन्त महेन्द्र सिंह पटवारी, सन्त उजागर सिंह जी, भाई साहिब सन्त गुरबचन सिंह जी के नाम वर्णन योग्य हैं तथा आजकल सन्त ध्यान सिंह जी, सन्त त्रिलोक सिंह जी, सन्त जसवन्त सिंह जी उन आदर्शों पर ही अपना जीवन गुरू सेवा में बिता रहे हैं। उनके नाम सुमिरन की अवस्थाओं को मैं जानता हूँ वे अच्छे सन्तों की तरह गुप्त रूप में विचर रहे हैं। सन्त रणजोध सिंह जी पटियाला के निकट डैंठल में सेवा कर रहे हैं। जिनका मैंने ऊपर ज़िक्र किया है वे सभी अपना जीवन समर्पण करके

उच्च अवस्थाओं में विचर रहे हैं। उनके अन्दर राग द्वैष का कोई अंश नज़र नहीं आता, न ही उन्हें कोई अभिमान है। वे महापुरुषों के प्यार में रहते हुए, हर समय हरि रस में लिवलीन रहते हैं तथा गुप्त रह कर एक मार्ग प्रदर्शन कर रहे हैं। ये सभी सन्त बाबा ईश्र सिंह जी की कठिन कमाई, तप, तपस्या तथा कठिन परिश्रम के फलस्वरूप है। सन्त बाबा किशन सिंह जी जिन्हें छोटे सन्त कहा जाता था उन्होंने कर्म योग में रह कर प्रभु प्राप्ति का आनन्द लूटते हुये अनेक भूले भटके राहियों को प्रभु के साथ मिलाया। आपके वचन अमोघ बाण हुआ करते थे। जब उन का ज़िक्र आयेगा तो उनकी कहानी भी संगत के साथ विस्तार से सांझी की जायेगी।

राड़े वाले बड़े महापुरुषों ने जो कमाई की, वह सदा ही संसार में प्रकाश करती रहेगी। मेरे जैसे अनजान आदमी भी उनकी कृपा के कारण गृहस्थ में उलझे हुये भी आत्म मार्ग के प्रकाश में चलने योग्य बना दिये।

इस लेख में परम सन्त ईशर सिंह जी महाराज राड़े वालों का ज़िक्र चल रहा है। आप ने जो कठिन कमाई, ''आदि सचु जुगादि सचु।'' की प्राप्ति के लिये की वह अनेक जिज्ञासुओं को मार्ग दर्शन करती है। महापुरुष (सन्त अतर सिंह जी रेरू साहिब) की हज़ूरी में उनकी ऐसी हालत थी कि सोना, पेट भर कर खाना भूल ही गये थे। महापुरुषों की अति कठोर सेवा में हर समय लीन रहना तथा रात को चौकड़ी मार कर बैठ जाना यदि नींद का बहुत जोर हो तो उसी तरह बिना धरती पर पीठ टिकाये अपनी नींद पूरी कर लेते।

एक बार महाराज जी ने मुझे सहज स्वभाव ही बताया कि जीवन में बाहरी घटनाएं तो दर्ज की जा सकती हैं पर अन्तरात्मा में जो कठोर संघर्ष कलयुग के साथ करना पड़ता है उसे कोई विरला ही जानता है। इस मार्ग में आलस बहुत विघ्नकारी हुआ करता है।

एक कहानी आपने सुनी होगी कि गुरू नानक देव जी, भाई बाला और मरदाना सहित एक स्वस्थ साफ, सुन्दर स्थान देख कर विराजमान हैं। एक बड़े विकराल कद वाला प्रेमी, बहुत सारा भार उठाये पास से गुज़र रहा है। भाई मरदाना जी ने अनुमान लगाया कि कौन हो सकता है? जब उसे कुछ न समझ आया तो गुरू महाराज जी के पास प्रार्थना की कि पातशाह! यह कौन है? आप जी ने फ़रमान किया कि भाई मरदाना यह कलयुग है।

सच्चे पातशाह! ''यह क्या उठा कर ले जा रहा है?''

कहने लगे, ''आवाज़ लगाकर पूछ लो और अपना संशय दूर कर लो।''

उस समय भाई मरदाना जी ने आवाज़ लगाई, ''ऐ प्रेमी! ज़रा दर्शन देने की कृपा करो मैं कुछ आप से पूछना चाहता हूँ। कलयुग ने आकर गोदड़ी रख दी और प्रणाम करके बैठ गये। अपना परिचय देते हुये भाई मरदाना को कहा कि ''मैं इस युग का राजा हूँ। मेरे राज्य का समय 4 लाख 32 हज़ार साल है। मेरे से पहले मेरे तीन भाई राज्य कर चुके हैं। कुल मिलाकर हम चार भाईयों का राज्य काल 43 लाख 20 हज़ार साल है। हम बारी बारी अपने समयानुसार राज्य करते हैं। समय आने पर, पहला भाई एक ओर हट कर बैठ जाता है, दूसरा तख्त पर बैठ कर राज्य करता है। मेरे सब से बड़े भाई जिसे 'सतयुग' कहते हैं उसका राज्य संसार में 17 लाख 32 हज़ार साल रहा। उसके राज्य में जो मनुष्य रहते थे उनका जीवन बहुत उच्च था। वे सत्य बोलते थे, कोई भी पुरुष निगुरा नहीं होता था, धर्म के चारों पैर कायम थे, उस समय सभी सच बोलते थे, झूठ नाम की कोई वस्तु नहीं होती थी। परमेश्वर की भक्ति किया करते थे, अपने गुरू की सेवा करके अपना जीवन सफल किया करते थे। इतना समय बीत जाने के बाद एक शक्ति (पैर) धर्म का दूर हो गया, संसार में दिखावा बढ़ गया तथा पाखंड ने जीवन में प्रवेश कर लिया। सतयुग में सभी जानते थे कि वाहिगुरू जी हाज़िर नाज़िर, घट घट में व्याप्त हैं, वह हर तत्व में पूरी तरह से व्याप्त है। वह स्वयं ही एक से अनेक रूप होकर संसार में अपना खेल दिखा रहे हैं। वे नाम की उच्च अवस्था में अपना जीवन व्यतीत किया करते थे। पर 'त्रेता' में वाहिगुरू जी को भूलना शुरू हो जाता है और उसे दूर समझा जाने लगा। यदि कोई समरथ गुरू की सेवा करता था, उसे उस ज्ञान की प्राप्ति हो जाया करती थी और नाम अवस्था प्राप्त करके सुखी रहता था। 12 लाख 96 हज़ार साल का समय बीतने के बाद तीसरे भाई की बारी आई जिसका नाम 'द्वापर' है। इस युग में मानसिक स्तर और भी नीचा हो गया और मन में दुविधा पैदा हो गई। प्रत्यक्ष रहते वाहिगुरू पर शंका पैदा होनी शुरू हो गई कि वाहिगुरू जी आप ही आप हैं या वाहिगुरू जी के साथ एक और शक्ति जिसे मूल प्रकृति कहा जाता है, उसका भी अस्तित्व कायम है? इस युग में एक से दो बन गये। दोनों ही अनादि चेतन तत्व अपनी अपनी जगह पर अनादि थे। मूल प्रकृति अपने स्थान पर अनादि थी। दोनों तत्वों ने संसार में द्वैतवाद पैदा कर दिया तथा भेद भ्रम, संग भ्रम, कृतत्व भ्रम मन में पूरी तरह से अपना अन्धेरा लेकर छा गये तथा सन्देह पड़ गया कि वाहिगुरू जी कोई और है, मूल प्रकृति कुछ और है संसार और है, प्रभु और है। इससे भी आगे चलकर संसार को हरि रूप समझने की बजाये दुखों

(शेष पृष्ठ 16 पर)

श्री गुरू नानक देव जी

सन्त वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक दिसम्बर, पृष्ठ - 46)

बाबा राम सिंह जी नामधारी एक बार दीवान में कीर्तन कर रहे थे कि एक शंकावादी ने तर्क कर दी कि आप कभी भी वाहिगुरू नहीं कहते हो बल्कि सतिनाम ही कहते हो। आप कहने लगे, भद्रपुरुष! यह जो तुम वाहिगुरू मन्त्र की बात कर रहे हो यह गोपनीय मन्त्र है। यह बाहर रखने से फल नहीं देता है जबकि अन्दर रखने से ही फल देता है। इसे आप जितना अधिक गुप्त रख लोगे यह उतना ही अधिक फल देगा। आप कहने लगे, अच्छा ऐसा करना कि सुबह एक रस्सी लेकर आना। सभी लोग एक बड़ी रस्सी लेकर आ गए। बाबा जी खड़े होकर कीर्तन करने लगे तथा बोले प्रेमीजनो! अब छत्तीस युगों का जपा हुआ नाम बोलने लगा हूँ, इसलिए लो उसे सम्भालो। रस्सी सबको पकड़ा कर आपने ऊँची आवाज में वाहिगुरू बोल दिया। वह वाहिगुरू बोलने की देर थी कि सारी संगत निःशब्द होकर खड़ी हो गई, सबकी समाधियां लग गईं।

इस प्रकार से जब श्री गुरू नानक देव जी ने बगदाद में एक उद्घोष किया तो उस समय सारे स्थिर होकर खड़े रह गए। भाई गुरदास जी लिखते हैं -

फिरि बाबा गइआ बगदाद नो
बाहर जाइ कीआ असथाना।
इक बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना।
भाई गुरदास जी, वार 1/32

ब्रह्मवेला में जपुजी पढ़ने के बाद नमाज कह लो या पूजा कह लो एक ही बात हुआ करती है -

दिती बांगि निवाजि करि सुंनि समानि होआ जहाना।
सुंन मुंनि नगरी भई देखि पीर भइआ हैरान।।
भाई गुरदास जी, वार 1/32

कहने लगा यह तो एक फकीर आ गया है और वह है भी बहुत शक्ति वाला है, उस समय पीर उनमें आ जाता है तथा कहता है कि सब लोग इसे ईंट-रोड़े मारो। अब पीर आगे-आगे है और जनता पीछे-पीछे है। जब ऊपर हाथ करके रोड़े मारने लगे तो उस समय गुरू जी ने ऊपर की ओर दृष्टि कर दी फलस्वरूप सब ज्यों के त्यों रुक गए न कोई हिलता है, न डुलता है, जिसके पैर व हाथ जैसे थे वह वैसे ही रुक गया। सभी जड़वत् खड़े हैं। जिसने रोड़ा मारने के लिए बाँह को घुमाया था उसकी बाँह वैसे ही रुक गई। अब पीर ने अपना सारा ही जोर लगा लिया लेकिन वह न तो स्वयं हिल पा रहा है और न ही दूसरों को हिला पा रहा है। उस समय पीर का सारा अहंकार रफूचक्कर हो गया और वह मन ही मन प्रार्थनाएं कर रहा है कि पीर जी! (नानक जी) मैं आपसे बात करना चाहता हूँ। पीर ने दिल से नहीं माना इतना तो मान गया कि इसमें मुझसे अधिक शक्ति है लेकिन गुरू जी ने उसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए उस पीर की जड़ता को खोल दिया तथा पीर, गुरू नानक जी के पास आकर बैठ गया।

महाराज जी कहने लगे, पीर जी! क्या हुआ? इतना क्रोध?

पीर जी - आपने तो शरह की धज्जियां उड़ा दीं।

गुरू जी - तो फिर क्या किसी को मार डाला करते हैं? कोई भी आपत्ति है तो सम्बन्धित व्यक्ति के साथ विचार किया करते हैं जो व्यक्ति बिना सोचे समझे किसी को दण्ड देता है तो वह तो पागल होता है। तुम्हें विचार करनी चाहिए थी न कि पत्थर उठा कर सामने वाले को मार डालने का ही हुक्म दे देना चाहिए था।

पीर जी कहने लगे, महाराज जी! इनके ऊपर कृपा दृष्टि करो ये पत्थर फेंक देते हैं। महाराज जी ने उनके ऊपर दृष्टि कर दी। पीर ने उन्हें कहा कि पत्थर फेंक दो और यहाँ पर आकर बैठ जाओ। सारे लोग गुरू जी के चारों तरफ नम्रतापूर्वक बैठ जाते हैं। बीच में गुरू नानक जी बैठे हैं और सामने पीर बैठा है, उसका लड़का बैठा है, अन्य सारे मुखी बैठे हैं और शेष सारा शहर बैठा है। बिल्कुल शान्ति हो चुकी है और सभी लोग उत्सुकतापूर्वक उन दोनों महान हस्तियों के परास्परिक वार्तालाप को सुनने के लिए उतावले हैं। उस समय महाराज जी कहने लगे, पीर जी! बताओ आपको क्या एतराज है? पीर जी बोले, आप रवाब (सरोद) बजाते हो? गुरू जी ने जवाब दिया कि इसमें कौन सी बुरी बात है? संगीत तो रूह की खुराक है। यदि इसका दुरपयोग किया जाए यह तभी

बुरी है अर्थात यदि इसके सहयोग से इश्क-ए-मजाजी के गीत गाए जाएं यह तभी हमारी बुद्धि को विचलित करती है लेकिन यदि इसके विपरीत इसके सहयोग से इश्क-ए-हकीकी का कीर्तन किया जाए तो फिर यह आत्मा को उर्ध्वगामी करके अपने देश ले जाती है। आपके इस्लाम धर्म में ही लिखा हुआ है कि खुदा ने जब मानव शरीर की रचना करने के बाद इसमें रूह को टिकाना चाहा तो वह इसमें टिकी ही नहीं बल्कि बाहर निकल आई। खुदा ने कहा, ऐ रूह! तुम शरीर के अन्दर क्यों नहीं टिकती हो? रूह ने जवाब दिया अल्लाहताला! मैं इसके अन्दर क्या टिकूँ क्योंकि इसके अन्दर तो अन्धेर गुबार पड़ा है। अब खुदा ने कहा, जाओ मैंने अब इसके अन्दर अपने दरगाह के नाद डाल दिए हैं, इसलिए अब तुम इसके अन्दर स्थित हो जाओ। उसके बाद जब रूह, शरीर के अन्दर गई तो इसे अनहद नादों की मस्ती चढ़ गई। लेकिन वह पुनः बाहर आ गई। खुदा ने पूछा, अब क्या हुआ? रूह बोली, महाराज! अन्धेरा बहुत है। खुदा ने कहा अच्छा फिर मैं इसके अन्दर अपनी दरगाह की रौशनी डाल देता हूँ।

साधुसंगत जी! जो अनहद नाद व प्रकाश, अकाल पुरुष की दरगाह में है, वही इस शरीर में हैं क्योंकि यहाँ भी दसवें द्वार में छोटी दरगाह ही है।

अतः गुरू जी कहने लगे उस समय से ही यह रूह उस दिव्य नाद को सुनकर इस शरीर में रही है, इसलिए राग तो बुरा नहीं है? दूसरी बात यह है कि अब यह नीचे उतर गाई है, इसलिए इसे वापिस ले जाने का केवल एक ही साधन है और वह है - कीर्तन। यथा -

कलजुग महि कीरतनु परधाना॥
गुरमुखि जपीअै लाइ धिआना॥
आपि तरै सगले कुल तारे
हरि दरगह पति सिउ जाइदा॥ *अंग - 1076*

पीर इस बात को मान गया। गुरू जी ने पूछा, पीर जी! आपका दूसरा ऐतराज क्या है?

पीर ने कहा, आपने एक अत्यन्त झूठी बात कही है आपने कहा है -

धारना - सत पताल ते आकाश सारे आखदे,
दस काहनूं कुफर बोलदैं।

पीर कहने लगा, नानक जी! सारा हिन्दू धर्म चौदह लोकों का ही जिक्र करता है। सात आकाशों व सात पातालों के बारे में वे सभी लोग बात करते हैं जिन्हें कि अतल, बितल, सतल, भव, भूत आदि नामों से पुकारा जाता है लेकिन आपने तो झूठ की इन्तहा करते हुए कह दिया कि लाखों पाताल व लाखों आकाश हैं। आप तो सुनने वालों को भी गुमराह कर दोगे? महाराज जी! मुस्कुरा कर कहने लगे, पीर जी! यह तो केवल दृष्टि की बात है। जिसकी दृष्टि में सात आकाश व सात पाताल दिखाई पड़ते हैं, वह सात आकाश व सात पाताल ही कहेगा लेकिन जिसकी दृष्टि में लाखों आते हैं, वह लाखों ही कहेगा।

धारना - जिहनूं लखां ही आकाश नज़र आए
लखां दी उह गल्ल करदा।

पाताला पाताल लख आगासा आगास॥
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात॥
सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु॥
लेखा होइ ते लिखीअै लेखे होइ विणासु॥ *अंग - 5*

पीर जी! आप लाखों की बात करते हो? ये तो गिनती से बाहर की बात है, इनकी तो गिनती ही नहीं की जा सकती है, इसका कोई हिसाब किताब ही नहीं है। जिसे असंख्य कह दिया हो उसका हिसाब किताब आप कैसे लगा लोगे?

पीर जी! देखो जब आपके पैगम्बर साहिब को खुदावन्दताला ने बुलाया तो उसे ले जाने के लिए जिब्राइल आता है। जब पैगम्बर जा रहा है तो रास्ते में एक ऊँटों की कतार आ गई। उन्हें देखकर पैगम्बर खड़ा हो गया। उस समय जिब्राइल कहने लगा, पैगम्बर जी! एक ऊंट की गुहार ऊपर को उठा लो और नीचे से निकल जाओ। पैगम्बर बोला जब यह कतार समाप्त हो जाएगी तो उसके बाद हम लोग निकल लेंगे। उस समय जिब्राइल ने कहा, पैगम्बर साहिब यह पंक्ति तो इसी प्रकार युगों से चल रही है, जब मैं पैदा हुआ था उस समय भी यह इसी प्रकार से चलती थी और मेरी उम्र सोलह करोड़ खरब सालों की है मुझसे भी पहले यह चलती थी। पैगम्बर ने कहा, इनके ऊपर क्या लदा हुआ है? जिब्राइल ने कहा, एक ऊँट को बाहर निकाल कर देख लेते हैं। उन्होंने एक ऊँट को बाहर निकाल लिया और उसे नीचे बैठा लिया। उन्होंने क्या देखा कि प्रत्येक ऊँट के ऊपर दो बक्से लदे हुए हैं। जब एक बक्सा खोला तो उसमें से एक अण्डा निकला, जब उस अण्डे को फोड़ा गया तो उसमें से सारा ब्रह्मांड दिखाई पड़ा। उसने कहा इतने ब्रह्मांड? परमेश्वर का तो कोई अन्त ही नहीं है। उसकी कुदरत का कोई अन्त नहीं है। यहाँ पर तो वाहिगुरू वाहिगुरू के बिना और किसी बात का कोई लाभ नहीं है। उसका अन्तिम नाम भी वाहिगुरू ही है। पीर सारी बात सुनकर चुप रहा। फिर कहने लगा, हम तो तभी मानेंगे यदि तुम हमें दिखला दोगे। भाई गुरदास जी लिखते हैं -

पुछे पीर तकरार करि एह फकीर वडा अताई।
एथे विचि बगदाद दे वडी करामाति दिखलाई।
पाताला आकास लख ओड़कि भाली खबरि सुणाई।
फेरि दुराइण दसतगीर असी भि वेखा जो तुहि पाई।
भाई गुरदास जी, वार 1/36

नानक! हम तो तभी मानेंगे यदि तुम हमें इतने आकाश व पाताल दिखला दोगे? गुरू जी बोले, पीर जी! चलो हम तुम्हें दिखला देते हैं। पीर कहने लगा, लाखों पाताल व लाखों आकाश हैं, मेरी तो उम्र ही बुढ़ापे वाली है, कहीं ऐसा न हो कि मैं देखते ही देखते परलोक सिधार जाऊँ? अतः वह बोला, आप कृप्या मेरे बेटे को ले जाओ। गुरू जी बोले, तुम्हें अपने बेटे पर भरोसा है? पीर ने कहा, शत प्रतिशत। यह बहुत ही काबिल है। जैसे कि गुरू नानक देव जी को श्री गुरू अंगद देव जी पर पूरा भरोसा था। पीर के बेटे का नाम बहिलोल था। उस समय गुरू नानक देव जी ने कहा, अच्छा पीर जी! आप यहीं पर बैठना हम लोग अभी लौट कर आते हैं। गुरू जी ने उसकी बाँह पकड़ ली और कहा, आप अपने नेत्रों को बन्द कर लो। नेत्र बन्द करने के बाद उसने देखा कि असंख्य आकाश हैं, वह दिन रात चलता जाता है लेकिन आकाश ही आकाश हैं। दिन रात बीतते जाते हैं लेकिन आकाश समाप्त ही नहीं होते हैं। वह थक गया। गुरू जी बोले, चलो अब तुम्हें पाताल दिखलाएं। कहने लगा महाराज जी! अपने लोगों को पता नहीं कितने साल हो गए हैं हमारे अब्बाजान व अन्य लोग भी शायद मर गए हों, अतः चलो अब वापिस चलें। गुरू जी बोले, वे लोग मरे नहीं हैं, यह तो समय का ही हेरफेर है। इस बात को संसार समझ ही नहीं सकता है। बेटा! अब तुम ऐसा करो तुम्हारे अब्बाजान ने मानना नहीं है यह देखो अपनी संगत है। जब आगे गए तो वहाँ पर संगत गुरू नानक का यश कर रही है। जिस समय संगत ने गुरू नानक के दर्शन किए तो वे सब नमस्कारें करने लगे। महाराज जी संगत में बैठ गए तथा कहने लगे, प्रेमीजनो! प्रसाद वितरित करो। संगत ने प्रसाद वितरित किया, पीर के बेटे बहिलोल को भी प्रसाद दिया गया, फिर अगले पाताल में गए वहाँ भी प्रसाद। वह जहाँ देखे वहीं पर गुरू नानक की संगत। वह सोचने लगा कि ये तो करोड़ों ब्रह्मांडों में एक ही गुरू नानक हैं। ये तो स्वयं निरंकार ही हैं, अल्लाताला ही हैं। अब वह एक दिव्यानन्द में प्रवेश कर गया। उस समय गुरू नानक ने कहा कि बहलोल! आओ अब वापिस चलें। उसके पास जो पात्र था, वह प्रसाद से भरा हुआ है क्योंकि जगह-जगह पर प्रसाद उसे मिला था। वह (बहिलोल) कहने लगा, महाराज! ये समस्त श्रद्धालुजन! गुरू जी बोले, इस समय अकाल पुरुष ने सारे ब्रह्मांडों में हमारी ड्यूटी लगाई हुई है।

साधुसंगत जी! गुरू नानक केवल हम लोगों का ही नहीं है, बल्कि वह तो सारे खण्डों व ब्रह्मांडों का, जितनी भी आबादियां हैं, सबका ही है। हो सकता है कि अन्य ब्रह्मांडों के लोगों ने उसकी अधिक कद्र पा ली हो जबकि हम लोग तो उसकी कद्र करते ही नहीं हैं। हम तो शराब ही नहीं छोड़ते हैं, नाम ही नहीं जपते हैं।

अतः जब उसने नेत्र खोले तो वह क्या देखता है कि अभी तो थोड़ा सा समय ही व्यतीत हुआ है। भाई गुरदास जी लिखते हैं -

नालि लीता बेटा पीर दा
अखी मीटि गड़आ हावाई।
लख आकास पताल लख
अखि फुरंक विचि सभि दिखलाई।
भरि कचकौल प्रसादि दा
धुरो पतालो लई कड़ाही।
जाहर कला न छपै छपाई।

भाई गुरदास जी, वार 1/36

उसकी कला कैसे छिप सकती थी? बहलोल ने अब गुरू जी को सिजदा करना शुरू कर दिया तथा कहने लगा, अब्बाजान! इन्हें सिजदा करो ये तो खुदावन्द ताला स्वयं हैं। मैंने तो अपनी आँखों से ही सब कुछ देख लिया है। ये जो भी कहते हैं वह सब ठीक है। पातालों व आकाशों का कोई अन्त नहीं आ सकता है। अब कौन है जो इस प्रकार से कर सकता था -

धारना - वाहवा वाहवा बई
झल्ले किहड़ा झाल गुरां दी।

साधुसंगत जी! दुनिया के अन्दर कौन ऐसा था जो गुरू नानक के सामने ठहर सकता था? उनका मुकाबिला कोई भी नहीं कर सकता था और इस प्रकार से गुरू जी ने 'वाहिगुरू' नाम का, 'सतिनाम' का डंका सारे संसार में बजा कर आज सारे संसार को जीत लिया -

धारना - सतिनाम वाला डंका वाज के,
बाबे जिती सारी दुनीआं।

गड़ बगदादु निवाइकै
मका मदीना सभे निवाइआ।
सिध चउरासीह मंडली
खटि दरसनि पाखंडि जिणाइआ।
पाताला आकास लख जी धरी जगतु सबाइआ।
जी नउखंडि मेदनी सतिनाम दा चक्र फिराइआ।
देव दानों राकसि दै सभ
चिति गुपति सभ चरनी लाइआ।
इंद्रासणि अपछरा राग रागनी मंगलु गाइआ।
भइआ अनंदु जगतु विचि
कलितारन गुर नानक आइआ।
हिंदू मुसलमाणि निवाइआ।

भाई गुरदास जी, वार 1/37

धारना - वाहवा-वाहवा बई कलजुग तारने नूं।
सतिगुर नानक जग विच इआ।

अतः गुरू नानक ने आकर शबद सुरति के मार्ग को प्रचलित किया। आपने संसार को गृहस्थ धर्म में रहते हुए, कारोबार को करते हुए, नेक दृष्टि रखते हुए, परमेश्वर के द्वार पर पहुँचने का मार्ग बताया। आपने जिन्दगी को सरल बना दिया और संसार को वहमों व भ्रमों में से बाहर निकाल दिया। मनुष्य कैसा भी हो यदि उसका चित्त परमेश्वर की तरफ हो जाए तो वह परमेश्वर के द्वार पर स्वीकार्य हो जाता है। उन्होंने हमें निरर्थक कर्मकाण्डों से बाहर निकाल दिया। यदि आपने जनेऊ को देखा तो कह दिया कि यह जनेऊ सच्चाई का नहीं है। आपने कहा कि जनेऊ वह डालो जो दरगाह में साथ जाए। माथे पर चिन्ह वह लगाओ जो दरगाह में दिखाई पड़े अर्थात नाम का चिन्ह लगाने की ताकीद की। इसी तरह से आपने कहा कि यदि नमाज पढ़नी है तो चित्त को एकाग्र करके पढ़ो, केवल अक्षरों की गिनती मत करो। आपने अक्षरों की गिनती करने से हटा दिया। आपने धर्म के अन्दर जान डाल दी, नए ख्यालों को पैदा कर दिया। जानदार मनुष्यों को पैदा करके उन्हें खालसा की पदवी प्रदान कर दी। उन्हें ब्रह्मज्ञानी बना डाला तथा संसार के उद्धार के लिए श्री गुरू ग्रन्थ साहिब का प्रकाश करके संसार का मार्गदर्शन कर दिया। अब यह हम लोगों का दायित्व बन जाता है कि हम लोग गुरवाणी पर चल कर कितनी कमाई करते हैं? कितना साधन करते हैं? सबसे पहले तो अपने आप को शुद्ध करो-

प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछै अवर रीझावै।।
अंग - 31

पहले स्वयं को शुद्ध करो तब दूसरों को समझाने की बात करो। यदि अपने ऊपर तो कोई प्रभाव न हो और दूसरे लोगों को उपदेश किया जाए तो फिर उसका असर नहीं पड़ता है। असर तो केवल उसी बात का पड़ता है जो अपने अमल में हो। गुरू नानक ने निरंकार की आवाज मारी और सारा शहर निःशब्द व जड़ हो गया लेकिन हम जितनी भी आवाज मारें एक चिड़िया भी नहीं उड़ती है। अतः साधुसंगत जी! गुरू नानक को पहचानो। वे तो स्वयं परमेश्वर थे -

आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ।।
अंग - 1359

वे तो हमारे सामने हाजिर हैं, उनका ध्यान करो। ध्यान करके परमेश्वर का नाम स्मरण करो तथा अपने जीवन को सफल करो। अब समय अनुमति नहीं दे रहा है, इसलिए यहीं पर समाप्ति है।

(पृष्ठ 12 का शेष)

का घर समझ कर इसे प्रभु का बेगार समझा गया। ज्ञान का अनुभव दूर रह गया। इसमें समरथ गुरू द्वारा कर्म, उपासना तथा ज्ञान के साधनों द्वारा विरले विरले को ज्ञान का प्रकाश होने लगा। संसार कर्म काण्ड में फंस गया, धर्म के दो पैर कायम रह गये। संसार के जो साधन थे उनमें सतयुग में सत्य का बोल बाला था, त्रेता में अनेक प्रकार के यज्ञ किये जाते थे। द्वापर में पूजा की प्रथा शुरू हुई। इसमें समरथ गुरू की बहुत ही अधिक आवश्यकता महसूस की गई क्योंकि नाम को दृढ़ करने के लिये उसकी कृपा की जररूरत थी। सो भाई मरदाना जी! यह वार्ता जो हमारे भाईयों के युगों के रूप से चलती आ रही है इसे तुम चाहे समय कहो या जो नाम मैंने दिये हैं वह कह लो, या यह समझो कि मनुष्य कर्ता पुरूष को भूल गया और उसके मन पर माया का प्रभाव हो गया। वह अपनी मूल अवस्था से धीरे धीरे इतना निम्न स्तर पर पहुँच गया कि मेरे युग तक पहुँचते पहुँचते वह पूरी तरह से प्रेत बन गया।

गुरू तीसरे पातशाह महाराज जी ने इस अवस्था के बारे में फरमान किया है कि समय समय पर मनुष्य के स्वभाव बदलते रहते हैं। सतयुग में त्यागी तथा विचारवान लोग थे तथा पूर्ण ज्ञान में प्रभु को घट घट में व्याप्त देखते थे। सृष्टि को प्रभु रूप ही देखते थे अज्ञान का कोई भी अंश उनके मन में नहीं था। सभी बुराइयों से दूर थे तथा वाहिगुरू जी के नाम रूप में लीन, अपना जीवन व्यतीत करते थे। आवश्यकताएं बहुत कम थीं, वासनाओं से छुटकारा पा लिया था। राजा लोग धर्म का राज्य करते थे, प्रत्येक वर्ग सुखों से सम्पन्न वाहिगुरू के साथ मिला हुआ अपना अपना समय व्यतीत करता था। द्वापर तथा त्रेता युग में मनुष्य इस देव पदवी से नीचे खिसका, वाहिगुरू जी के ज्ञान में से दिखाई देने वाली माया की ओर आकर्षित होने लगा और मनुष्य की हालत में प्रकट हुआ। पर सच की ओर बहुत झुकाव रहता था जीवन सत्य पर आधारित था। कलयुग में मनुष्य की सुरत इतनी निम्न स्तर की हो गई कि वह भूत ही बन गया जैसा कि गुरू महाराज जी फ़रमान करते हैं -

कली अंदरि नानका जिंनां दा अउतारु।
पुतु जिनूरा धीअ जिंनूरी जोरू जिंना दा सिकदारु॥
अंग - 556

'चलता'

धर्म हेत साका जिन कीआ

(नौवें पातशाह श्री तेग बहादर जी की शहीदी के सम्बन्ध में)

सन्त वरियाम सिंह जी

संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक दिसम्बर, पृष्ठ - 46)

हम विचार कर रहे थे कि श्री आनन्दपुर साहिब में जब कश्मीरी पंडितों ने गुरू दशमेश जी के दर्शन किए तो उनके मन में आया कि ये तो हमारे हमदर्द हैं। उस समय साधु संगत जी! उनका रोना निकल गया और सभी ऊँची आवाज में रो रहे हैं। उस समय गुरू जी कहते हैं प्रेमीजनो! बैठ जाओ। उन्हें देख कर सारी संगत हैरान है कि बड़े-बड़े विद्वान पुरुष आए हैं। इन्हें कोई बहुत बड़ा कष्ट पड़ गया है। उस समय महाराज जी कहने लगे कि आप अपना हाल सुनाओ क्या बात है? कौन सा संकट आप पर आ गया है? कहने लगे पातशाह जी! आप सब जानते हो। हम शिव मन्दिर में गये थे, अमरनाथ की गुफा के अन्दर बर्फ में गए थे। पातशाह! हमारा कोई सहारा नहीं है, इस संसार में। हम आप की शरण में आये हैं। हमें देवते ने कहा है कि आप ही हमारी पुकार सुनोगे। आप ही हमारा बेड़ा पार लगाओगे और कोई नहीं। कहने लगे-

केवल इको आप हो, केवल इको आप हो
मेटहु हिंदू धरम ते बणिआ जो संताप।
जिदां लाज द्रोपती विच भरे दरबार।
दे के आपणा हथ सी रखी क्रिशन मुरार।
उवें रखो लाज हुण सतिगुर क्रिपाधार।
बणिआ भारत वरश अज दुरयोधन दरबार।

गुरू जी कहने लगे कोई बात नहीं, आप चिन्ता मत करो, वाहिगुरू सभी की रक्षा करता है।

सच्चा साहिब आप ही करके कोई उपाअ
डुबदा बेड़ा धरम दा दे सी बंने ला।

चिन्ता न करो, परमेश्वर ने सब कुछ कर देना है।

उस समय गुरू जी चुप हो गये। सभी चुप हो गये, आँसू आ रहे हैं, अपनी व्यथा नहीं सुना सकते। पाँच सौ आदमी बैठे आसूँ बहा रहे हैं। आहें भर रहे हैं। तभी दशमेश पिता बाहर से आते देख रहे हैं कि महाराज जी भी चुप बैठे हैं, यह क्या हो रहा है? सभी रो रहे हैं। उस समय तख्त पर जाकर गुरू जी के ऊपर चढ़ गये। गुरू तेग बहादुर जी गम्भीर होकर बैठे हैं। उस समय दशमेश जी ने पीछे से जाकर दोनों हाथों से गुरू जी को आलिंगनबद्ध कर आकर गोद में बैठ गये। महाराज जी ने नेत्र खोले, और प्यार किया उस समय गोबिन्द राय जी की उम्र नौ वर्ष की है।

पिता जी! ये कौन हैं? ये इतने दुखी हैं, रो रहे हैं? इन्हें क्या संकट पड़ गया? आप तो समर्थ हो, सबके दुख जानते हो। आपके घर आकर तो रोते हुए भी हँस पड़ते हैं। पातशाह! यह क्या बात है? ये तो बहुत समझदार लग रहे हैं, इनके माथे पर तिलक लगे हैं, देखने को भी शोभनीय पुरुष लग रहे हैं। परन्तु ये मुरझाये क्यों हैं? क्यों रो रहे हैं? आप कृपा करके इनके दुख का इलाज करो।

उस समय गुरू जी कहने लगे, लाल जी! यह सारे भारतवर्ष का डेपुटेशन आया है, सारे हिन्दू धर्म का डेपुटेशन आया है, सारे भारतवर्ष का 500 नुमाईंदा यहाँ पहुँचा है, और इनका धर्म खतरे में है। इनका तिलक और जनेऊ भी खतरे में है। जबरन उसे उतारा जा रहा है। इसलिये ये गुरू के दरबार में पहुँचे हैं।

आप कहने लगे, गुरू पिता जी! फिर आपने इनके दुख को दूर करने के बारे में क्या सोचा है? आप तो समर्थ पुरुष हो। श्री गुरू जी कहने लगे, लाल जी! इनका दुख दूर करने के लिए जो कुछ करना पड़ेगा उसे ध्यानपूर्वक सुनो -

धारना - तिलक जंञू दी राखी नहीओं होणी,
बिनां दिते सीस लाल जी।

श्री गुरू तेग बहादुर जी कहने लगे, लाल जी! मैं यह सोच रहा था कि इनका दुख दूर करने के लिए किसी महापुरुष को अपना बलिदान देना पड़ेगा और मैंने यह बात इनसे कह दी है कि कोई पूर्ण महापुरुष अपना बलिदान दे। लेकिन ये सभी अपनी गर्दनें झुकाकर बैठे हुए हैं -

नौवें सतिगुर आखिआ मेरे सुत सुजान
ठल्ह सकदा है देश विच, जुलमां दा तुफान
जे कोई अणखी सूरमा जोधा कोई महान
डट खलोवे साहमणे आपणी छाती ताण।

कोई पवितर आतमा निरभै ते बलवान।
तिआगे मोह सरीर दा करेक ससती जान।
अगनी दे इस कुंड विच दे आपणा बलीदान।
लेखे धरम असूल दे अरपण करे प्राण।

उस समय दशमेश पिता जी सुनते ही कहने लगे, पिता जी! इस समय इस संसार में आपसे बड़ा बहादुर दूसरा कोई नहीं है। अर्थात इतनी पावन आत्मा दूसरी कोई नहीं है, फिर और किसी की तरफ क्यों देखना है? आप ही अपना बलिदान दो। पिता जी! भले ही जनेऊ व तिलक पर अपना विश्वास नहीं है लेकिन धर्म के नाम पर धक्का किया जा रहा। धक्का न होने देने का ही तो अपना धर्म है। आप अपना बलिदान दो। गुरू पिता जी बोले, बेटा! ये जो विपरीत परिस्थितियां चल रही हैं, हमारा बलिदान देने से तो गुरू घर का बादशाही के साथ सीधा विरोध हो जाएगा। पहले पाँचवे महाराज जी को दहकती तवियों पर बैठाकर शहीद कर दिया। फिर आठवें गुरू जी को अल्पायु में ही अपने शरीर का परित्याग करना पड़ा। हमारे द्वारा अपने प्रण की पालना करते हुए अपना बलिदान देने के बाद पुनः वैसे ही होगा अर्थात फिर तुम्हें बुलाएंगे और तंग करेंगे तथा गुरू घर से उनका सीधा वैर पड़ जाएगा। महाराज जी ने उनकी परीक्षा लेने के लिए उनसे यह सवाल किया, आप चुप हो गए। उस समय दशमेश जी कहने लगे, पिता जी! जब मेरा कोई वश नहीं चलता था, मैं हाथ पैर भी हिला नहीं सकता था, अर्थात मैं माता के गर्भ में था -

माता के उदर महि प्रतिपाल
करे सो किउ मनहु विसारीऐ।। *अंग - 920*

वहाँ पर मेरी पालना अकालपुरुष ही तो करता था फिर उसने मेरे लिए माँ के स्तनों में दूध पैदा कर दिया क्योंकि उस समय मैं कुछ भी खा नहीं सकता था। जब मेरे दांत उग आए तो उसने मेरे लिए खुराक बना दी। माता पिता के हाथ दे दिए। अब तो मैं नौ साल का हो गया हूँ, अतः आप मेरी चिन्ता न करो क्योंकि मेरी चिन्ता तो स्वयं अकालपुरुष ही कर रहा है -

मूल करो गुरदेव ना, मन अंदर संसा,
आपे पुरख अकाल नूं है मेरी चिंता।
इको उहदा आसर ते इको उहदा परना।
रच्छा मेरी करेगा उह साहिब सच्चा।

पिता जी मेरी रक्षा करने वाला तो परमेश्वर स्वयं ही है-

रोगन ते अर सोगन ते जल जोगन ते बहु भांति बचावै॥
सत्रु अनेक चलावत घाव तऊ तन एक न लागन पावै॥
राखत है अपनो कर दै कर पाप समूंह न भेटन पावै॥
और की बात कहा कह तो सों, सु पेट ही के पट बीच बचावै॥ *अंग - 682*

मेरी रक्षा तो वे स्वयं ही करेंगे। गुरू पिता जी ने लाल जी (गोबिन्द राय) को कसकर अपने आलिंगन में ले लिया। आपने लाल जी का माथा चूमा, उन्हें प्यार किया तथा देख लिया कि यह तो इनके दिल की गहराई से आवाज उठी है। उस समय महाराज जी कहने लगे, प्रेमीजनो! रोना बन्द करो तथा प्रसन्नचित्त हो जाओ क्योंकि गुरू घर में से आज तक कोई रोता हुआ नहीं लौटा है।

सन्त महाराज जी (सन्त ईशर सिंह जी महाराज) के पास एक प्रेमी आ गया जिसका नाम रतन सिंह था, वह दोराहे पर उतरा और महाराज जी के चरणों में राड़ा साहिब आ गया। महापुरुष कहने लगे आओ भद्रपुरुष! कैसे आए हो? वह बोला महाराज! मैं तो मरने के लिए आया है। महापुरुष कहने लगे गुरू घर में प्राण देने नहीं बल्कि लेने के लिए आया करते हैं। यहाँ पर जिन्दगी देने नहीं बल्कि लेने के लिए आया करते हैं। कहो तुम्हें परेशानी क्या है? उसने बताया कि मुझे तो तीसरे स्टेज की टी. बी. है। आप कहने लगे, कोई बात नहीं, तुम मुँह पर कपड़ा बाँध कर बर्तन मांजने की सेवा किया करो, मूल मन्त्र का पाठ किया करो तुम्हें जीवन मिल जाएगा। फलस्वरूप वह कुछ दिन में स्वस्थ हो गया। जब उसने एक्सरे करवाया तो डाक्टर कहने लगे तुम्हें तो टी. बी. कभी हुई ही नहीं है। अतः गुरू घर में जो रोता हुआ आता है वह हँसता हुआ ही लौटता है। उज़ड़ा हुआ आता है तथा यहाँ से आबाद होकर वापिस जाता है।

आप कहने लगे, प्रेमीजनो! रोना बन्द करो। तुम्हारे धर्म की रक्षा हो जाएगी। जाओ! जाकर एक पत्र औरंगजेब को लिखकर भेजो जिसके ऊपर आप सभी लोग, जितने भी आप भारतवर्ष से आए हो, यानि कि हिन्दू धर्म के सारे नुमाइन्दे अपने हस्ताक्षर लिख कर भेज दो। पत्र में लिखो कि बादशाह सलामत! आप एक-एक व्यक्ति के पीछे मत घूमो, एक-एक को मत उजाड़ो, हमारे गुरू श्री तेग बहादुर जी हैं, यदि वे इस्लाम में आ गए तो हम लोग स्वयं ही इस्लाम में आ जाएंगे। यह सबसे सरलतम विधि आपको बतला रहे हैं, कृप्या इस पर गौर फरमाने की कृपा करें।

उन हिन्दू धर्म के सारे प्रतिनिधियों ने ऐसा ही किया पत्र लिखा गया और हस्ताक्षर करके बादशाह के पास पत्र वाहकों के माध्यम से भेज दिया गया। बादशाह ने हुक्म कर दिया कि कत्ल बन्द कर दो। एक को ही बना लेते हैं यदि एक बन गया तो फिर अन्य किसी को मारने की जरूरत ही नहीं है। मन्दिरों को भी मत गिराओ क्योंकि फिर तो ये स्वयं

ही मन्दिरों को मस्जिदों में परिवर्तित कर देंगे। इस घटना के बाद भारतवर्ष में सुख का श्वास आ गया कि अब हमारा इलाज हो गया क्योंकि श्री गुरू महाराज जी तो समर्थ हैं। यदि उन्होंने एक दृष्टि ही कर दी तो सारी फौज गरक हो जाएगी। लेकिन गुरू साहिब का आशय यह नहीं था, उनका आशय यह था कि बलिदान देने से इनकी सुप्त आत्मा जागृत हो जाएगी यदि फिर भी नहीं जागृत हुई तो फिर गुरू दशमेश जी के रूप में शस्त्र तैयार हैं, वहाँ कौन सा किसी और गुरू ने आना था। उन्होंने ही तो दोबारा आना था। अतः इस प्रकार से पत्र लिखकर बादशाह के पास भेजा गया। बादशाह ने पत्र पढ़ा और आगे का निर्णय लिया।

आज श्री गुरू जी को आदेश प्राप्त होता है। औरंगजेब के सन्देशवाहक आते हैं। उनके साथ बहुत सारे शस्त्रधारी सेना के व्यक्ति भी हैं। सभी ने श्री आनन्दपुर साहिब के दर्शन किए। दर्शनों के प्रभाव से जो बात कहनी थी, उसे कह न सके। भाई मतीदास और भाई सतीदास ने उनके साथ बहुत देर तक बातचीत की। आखिर वे कहने लगे, देखो! वैसे तो हम लोग गुरू तेग बहादुर जी को गिरफ्तार करने के लिए आए हैं, परन्तु इतनी बड़ी हस्ती को गिरफ्तार करने का हमारा मन नहीं कर रहा है बल्कि हम तो इतनी बड़ी हस्ती को सलाम करते हैं, हम इन्हें सिजदा करते हैं। परन्तु दूसरी तरफ हमारी नौकरी का प्रश्न है। अब उन्हें महाराज जी के पास भेज दिया गया। श्री गुरू जी कहने लगे, प्रेमीजनो! हम तो स्वयं ही बादशाह के पास जाने वाले थे इसलिए आप लोग चिन्ता मत करो, हम तो स्वतः ही आ रहे हैं। हमारा अब समय आ गया है, हमने अब यही काम तो करना है। जाओ! औरंगजेब को कह दो कि हम आ रहे हैं। उस समय श्री गुरू जी ने सन्देशवाहकों को वापिस भेज दिया। अब आप माताओं के पास जाते हैं। जब माता नानकी जी को पता लगता है कि मेरे पुत्र के जिम्मे इतना कठिन काम आ गया है तो वे वैराग्य करते हैं क्योंकि उन्हें पता था कि औरंगजेब तो माफ नहीं करेगा। उन्हें पिछला दृश्य याद आ गया कि किस प्रकार से उनके ससुर पिता जी को यानि कि पाँचवें महाराज जी को दहकती तवियों पर बैठा कर शहीद कर दिया गया था। वे समझ गए कि मेरे पुत्र का भी यही हाल होगा। मन में थोड़ा वैराग्य आ रहा है। माता गुजरी जी को जब पता चलता है कि मेरा साथ अब अलग हो जाएगा तो वे भी वैराग्य धारण करती हैं कि मेरा बच्चा अभी छोटा है और ये एक मुगल सल्तनत के साथ टक्कर ले रहे हैं। उनके मन में कुछ शंका आया। लेकिन महाराज जी ने कहा कि आप चिन्ता मत करो, यह गुरू नानक की गद्दी है, हमारा यह दायित्व है कि जहाँ पर हम इनके मन के अन्धकार को दूर करते हैं, तो वहीं पर हम इनके दुखों का उपचार भी करें। दूसरी तरफ आत्मा तो अजर, अमर है, वह तो कभी मरती ही नहीं है और न ही कहीं जाती है तथा शरीर कभी सदा के लिए रहता नहीं है। उस समय आपने माता जी को ब्रह्मज्ञान प्रदान कर दिया। इसके बाद जब श्रद्धालुजनों को पता चला तो बहुत सारी एकत्रता हो गई। सभी विनती करते हैं कि महाराज! आप समर्थ पुरुष हो, कोई ऐसी कला प्रकट करो जिससे कि बलिदान न देना पड़े। आप तो एक दृष्टि के द्वारा ही सब कुछ ठीक कर सकते हो। श्री गुरू जी कहने लगे, नहीं प्रेमीजनो! हमने यह ठीकरा (शरीर) औरंगजेब के सिर पर ही फोड़ना है क्योंकि जब इन्हें राजभाग दिया था तो कहा था कि सात बादशाहियों के बाद सात शीश देकर राजभाग वापिस ले लेंगे। अतः अब हमने उस प्रण को पूरा करना है। आप कोई फिक्र मत करो। गोबिन्द राय जी प्रत्येक प्रकार से आपकी मदद करेंगे। उन्होंने बड़े-बड़े काम करने हैं, इन पर भरोसा रखना, इन्हें बच्चा मत समझना। इन्हें धुर दरगाह से यानि कि अकालपुरुष द्वारा भेजा गया है, उनकी ड्यूटी इसी काम को करने के लिए लगी हुई है।

उस समय सारी संगत को वैराग्यभाव में छोड़कर आप विदा होते हैं। आपने, अपने साथ दस सवार ले लिए। उधर संगत दौड़-दौड़ कर साथ मिलने की कोशिश कर रही है कि जहाँ तक गुरू जी के दर्शन हो सकें, वहाँ तक करने चाहिए लेकिन एक जगह पर जाकर महाराज जी ने सबको रोक दिया कि आपने इससे आगे नहीं आना है। अब हमारे वचन को मानो। उस वक्त बैरागी लोगों के मन में से इस प्रकार की आवाज निकल रही है -

धारना - कदे होणगे सबबां नाल मेले,
नदीअं दे वहिण विछड़े।

नदीआ वाह विछुंनिआ मेला संजोगी राम॥
जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जोगी राम।।

अंग - 439

सबके नेत्र सजल हैं, वे विरह व्यथा को झेल पाने में असमर्थ प्रतीत होते हैं। श्री गुरू जी जा रहे हैं और सारी संगत टिक टिकी लगा कर देख रही है।

साधुसंगत जी! संगत से बिछुड़ना कितना कठिन होता है, इसका वर्णन बहुत मुश्किल हुआ करता है।

इस प्रकार श्री गुरू जी अपने साथियों सहित जा रहे हैं, पहले आप भरतगढ़ में आकर रात्रि व्यतीत करते हैं, उसके बाद रोपड़ जाते हैं, फिर मुकारांपुर, कबूलपुर, ननहेड़ी,

सैफाबाद, शैफअली के पास पटियाला के पास एक हवेली में ठहरते हैं। उस समय इसका नाम पटियाला नहीं था बल्कि पटी-आला यानि कि आला की पट्टी था। वह हवेली औरंगजेब के किसी रिश्तेदार की ही थी। वह कहने लगा महाराज! आप आगे मत जाओ क्योंकि मैं उसे जानता हूँ, वह मेरा रिश्तेदार है। उसका स्वभाव अत्यन्त क्रूर है, वह आपको शहीद कर देगा। गुरू जी बोले, वह शहीद किस चीज को करेगा? इस तन ने तो जाना ही है -

कबीर इहु तनु मिथिआ जानउ।।
या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो।।
अंग - 1186

इसे तो कोई तलवार काट ही नहीं सकती है, उसे कोई पानी डुबो नहीं सकता है, आग जला नहीं सकती है क्योंकि आत्मा तो शाश्वत है। बाकी शरीर जो है, यह तो कपड़े की भांति है, इसे तो छोड़ना ही पड़ता है क्योंकि संसार पर तो आजतक कोई रहा ही नहीं है। यह संसार तो जाने वाली ही जगह है। यहाँ पर तो आदमी आता ही जाने के लिए है, यहाँ पर सदा के लिए रहने के लिए नहीं आता है। इसका नाम ही मृत्यु मण्डल है। यह तो मण्डल ही मृत्यु का है। यहाँ हमेशा ही रहना है -

रहणु न पावहि सुरि नर देवा।। *अंग - 740*

यहाँ से तो सभी चलते ही जाते हैं। इस प्रकार से सैफअली को आपने समझाया।

इसी बीच पता चला कि गुरू साहिब यहाँ पर हैं तो वहाँ पर मुगल सेना के सिपाही आते हैं, सेना का अधिकारी आता है। जब सैफ अली को पता चला तो उसने गुरू जी को मोहम्मद बख्श, जो समाना की गढ़ी वाले थे, के पास भेज दिया। जब गुरू जी मोहम्मद बख्श के पास पहुचे तो वह श्री गुरू जी को कहने लगा, महाराज! आप कृपा करके अन्दर चलो। गुरू जी बोले, मोहम्मद बख्श! अन्दर जाने की क्या जरूरत है? वह कहने लगा, महाराज! आपका जो शरीर है, वह इतना सस्ता नहीं है, इसका संसार को बहुत लाभ है। आप तो निःशंक रूप से ब्रह्म में ही लीन रहते हो, आपको कोई परवाह नहीं है, न तो आपको दुख की कोई परवाह है और न ही सुख की कोई इच्छा। आपको हानि व लाभ से भी कोई वास्ता नहीं है। क्योंकि वहाँ पर उसने जीवन मुक्त पुरुषों के लक्षण भी पूछे। महाराज जी ने बताया कि वैसे तो जीवन मुक्त पुरुषों के लक्षण श्री सुखमनी साहिब में भी बताए हुए हैं लेकिन हम तुम्हें सरल करके बताते हैं -

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै।।
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै।।
नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना।।
हरख सोग ते रहे निआरउ नाहि मान अपमाना।।
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा।।
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा।।
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी।।
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी।।
अंग - 633

प्रभ की आगिआ आतम हितावै॥
जीवन मुकति सोऊ कहावै॥
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु॥
सदा अनंदु तह नही बिओगु॥
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी॥
तैसा अंम्रितु तैसी बिखु खाटी॥
तैसा मानु तैसा अभिमानु॥
तैसा रंकु तैसा राजानु॥
जो वरताए साई जुगति॥
नानक ओहु पुरखु कहीअै जीवन मुकति॥ अंग - 275

इसके बाद उसने विनती की महाराज! आप कृपा करो अरदास को स्वीकार करो। विनती करके वह महाराज जी को गढ़ी के अन्दर ले गया। यहाँ पर आकर जब सेना के सिपाहियों ने पूछ पड़ताल की तो मोहम्मद बख्श ने उन्हें वापिस लौटा दिया कि यहाँ पर कोई नहीं है। महाराज जी कहने लगे, आपने ऐसे नहीं कहना था क्योंकि हमने तो जाना ही है। अतः तुम उन्हें ऐसे मत कहो। वह कहने लगा, नहीं महाराज! मैं अपने जीते जी ऐसे नहीं होने दूँगा। मेरे जीवन के बाद वे चाहें तो आपको गिरफ्तार कर लें, मेरी आँखों के सामने वे ऐसा न करें।

अब दोबारा सेना के जवान पुनः आ गए। इस बार मोहम्मद बख्श ने डाँटते हुए कहा कि तुम विश्वास ही नहीं करते हो। मैंने गुरू तेग बहादुर से क्या लेना है? यदि वे गिरफ्तार हो जाते हैं, तो हमें तो बहुत प्रसन्नता होगी। तुम लोग जाते क्यों नहीं हो? इस प्रकार श्री गुरू जी चलते-चलते जा रहे हैं। बहुत स्थानों पर संगत आपकी प्रतीक्षा कर रही थी। इसी प्रकार से एक साधू बड़ी तपस्या कर रहा था, वह नारनौल की तरफ गाँव कनौड़ा का रहने वाला था। आप वहाँ पर पहुँच जाते हैं। जब उसे पता चला कि श्री गुरू तेग बहादुर जी आए हैं, तो उसने तन, मन व धन से सेवा की। वह बहु ही सिद्ध पुरुष था तथा असंख्य रिद्धियों व सिद्धियों का स्वामी था। उस समय उसने विनय की महाराज! मैं जप भी करता हूँ, तप भी करता हूँ, प्राणायाम भी करता हूँ तथा अन्य साधन भी करता हूँ, लेकिन मुझे शान्ति नहीं आ रही

है। कृपा करके मुझे नाम वस्तु प्रदान करो। उस समय श्री गुरू जी ने उसे नाम दान देने के बाद उसे ब्रह्मज्ञान प्रदान किया। यानि कि उसके ऊपर कृपा करके उसके बज्र कपाट खोल दिए। जब उसके बज्र कपाट खुल गए तो वह क्या देखता है कि श्री गुरू जी तो अपना बलिदान देने के लिए जा रहे हैं। उस समय वह काँप गया उसने दौड़कर गुरू जी के चरण पकड़ लिए। कहने लगा महाराज! इतना भयानक नाटक करने के लिए आप जा रहे हैं। महाराज जी कहने लगे, योगिराज! तुम्हें दिखाई पड़ गया? वह बोला, हाँ महाराज! श्री गुरू जी कहने लगे, हाँ हमने जाकर औरंगजेब के सिर पर अपने शरीर का ठीकरा तोड़ना है। वह कहने लगा, महाराज! मेरे अन्दर आपने इतनी शक्ति भर दी है कि मैंने औरंगजेब समेत जो भी सामने आ गया उसे नष्ट कर देना है। श्री गुरू जी कहने लगे, योगिराज! हम लोगों ने यह काम नहीं करना है। फिर ध्यान लगा कर देखता है कि गुरू तेग बहादुर तो शक्तियों का समुद्र हैं, भण्डार हैं। इसी भण्डार में से तो मेरे अन्दर थोड़ी सी शक्ति आई है। ये तो अपने आप ही सब कुछ कर सकते हैं। उस समय रजा में राजी होकर मान गया। महाराज जी ने कहा, योगिराज! तुम्हारे पास डोल नाम का जिज्ञासु आएगा, उसे यह ब्रह्मज्ञान प्रदान कर देना। इसके बाद एक महिला आई जो दिन रात उसकी सेवा में रहा करती थी। उसके ऊपर कृपा कर दी, वह भी बहुत शक्तियों की मालिक हुई। उसका नाम नानकी था। उसके बाद एक और महिला आई, जिसने भी उस क्षेत्र में गुरसिक्खी का बहुत प्रचार किया इस प्रकार उस क्षेत्र में तीन महिलाओं को ब्रह्मज्ञान हुआ। इस प्रकार महाराज जी सबका उद्धार करते हुए सिक्खी का प्रसार करते हुए जा रहे हैं। बहुत सारे जिज्ञासु प्रार्थनारत है। इसी प्रकार से एक सय्यद अरदासें कर रहा है कि श्री गुरू महाराज जी का बहुत इनाम रखा हुआ है। यदि कहीं गुरू जी मेरे द्वारा गिरफ्तार हो जाएं तो मुझे भी कुछ धन मिल जाए। महाराज! उसी के बाग में पहुँच गए और अपनी लीला प्रकट कर दी। महाराज जी अपना कीमती दुशाला, जो कि हजारों रुपयों का था, तथा अंगूठी उसे देते हैं तथा आपने कहा कि जाओ, इस अंगूठी की मिठाई ले आओ और इस दुशाले में डाल लेना। जिस समय उसने वह दुशाला देखा तो उसने कोटवाल को खबर कर दी कि यह तो कोई चोर है और चोरी करके दुशाले को लेकर आया है। कोतवाल ने आकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया। श्री गुरू जी बोले पहले इसे इनाम के पैसे दिलवाओ जो कि पाँच हजार रुपया रखा हुआ था। पाँच हजार रुपए को आजकल के 10-15 लाख के बराबर समझ लो।

इसके बाद श्री गुरू जी दिल्ली चले जाते हैं और औरंगजेब के साथ बहुत लम्बी चौड़ी वार्ता होती है। वह कहने लगा कि मैं तो एक धर्म ही करना चाहता हूँ, तुम्हारे लिए तो सारे धर्म एक ही हैं, जिस प्रकार से हिन्दू हैं, उसी प्रकार से आपके लिए मुसलमान हैं। श्री गुरू जी बोले राजन्! तभी तो हम ऐसा नहीं होने देना चाहते हैं क्योंकि ये अकालपुरुष की रजा में चल रहे हैं और तुम धक्का कर रहे हो। महाराज जी कहने लगे, अच्छा फिर मिर्चें मंगवा लो। मिर्चों को आग में जलाकर देख लेना यादि एक मिर्च बच गई तो एक धर्म हो जाएगा लेकिन यदि एक से अधिक मिर्चें रह गईं, तो उतने ही धर्म हो जाएंगे। फलस्वरूप मिर्चें जलाई गईं, जब राख को छाना गया तो क्या देखते हैं कि तीन मिर्चें साबुत निकल आईं। महाराज कहने लगे, औरंगजेब! तुम तो दो से एक कर देना चाहते थे लेकिन ये तो दो से तीन हो जाने हैं। अब तो जल्दी से जल्दी खालसा भी प्रकट हो जाना है। अतः इस प्रकार के कौतुक हो रहे हैं।

आखिर यह आदेश हो गया कि इन्हें बाहर मत जाने दो और खाना भी बन्द कर दो। इन्हें कोई भी रोटी न पहुँचे। उधर श्रद्धालुजन धन्ना भक्त की तरह से प्रार्थनाएं कर रहे हैं कि महाराज! मेरे घर में आकर आप चरण डालो, मेरे घर आकर भोजन ग्रहण करो। रिपोर्टें जाती हैं कि वे तो बाहर घूम रहे हैं। जब सी. आई. डी. वाले कहते हैं कि वे तो अमुक गुरसिक्ख के घर बैठे हैं, उसी समय पड़ताल होती है कि वे तो अमुक हवेली में बैठे हैं। हुक्म जारी हो गया कि इन्हें पिंजरे में बन्द कर दो, पिंजरा बहुत सख्त सजा होती है। कोई व्यक्ति दस मिनट भी उसमें काट नहीं सकता है। उसमें व्यक्ति सीधा भी नहीं हो सकता है क्योंकि चारों तरफ बहुत नुकीली शूलें (लोहे की) लगी होती हैं व्यक्ति जरा सा हिलता है तो वे शरीर में घुस जाती है। जब मैं इंग्लैंड गया तो देख कर हैरान हो गया कि यह पिंजरा है? उसमें तो व्यक्ति पराकाष्ठा तक दुखी हो जाता होगा। इस प्रकार जब दुख देने की सारी सीमाएँ पार होती चली गईं तो भाई मतीदास जी ने महाराज जी से आज्ञा माँगी कि महाराज! आज्ञा दो मैं दिल्ली व लाहौर की ईंट से ईंट बजा दूँ? महाराज जी कहने लगे, तुम्हारे अन्दर यह शक्ति कहाँ से आई? कहने लगा, महाराज! आपके चरणों में से। उसके बाद आप बोले, सबसे बड़ी शक्ति शहीदी की होती है। इसलिए इस शक्ति का प्रयोग मत करो। संसार में से तो हमने जाना ही है और यह तो घटना घटित होनी ही है। दिव्य दृष्टि से महाराज जी ने उसे सब कुछ दिखला दिया, फलस्वरूप भाई मतीदास जी शान्त हो गए।

उस समय भाई मतीदास जी के पास काजी आता है,

वह फतवा दे देता है कि मतीदास! तुम्हारे सामने दो चीजें हैं, एक तरफ तो आरे से दो फाड़ करके दर्दनाक भरी मौत और दूसरी तरफ यदि इस्लाम धारण कर लो तो जान बख्शी। उस वक्त आप कहने लगे, काजी साहिब! अपना धर्म सबको प्यारा है, फिर मृत्यु से डर कर धर्म परिवर्तन? गुरू जी ने कहा है-

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन।।

अंग - 1427

काजी ने कहा मतीदास! जान को मत गंवाओ। तिलक व जनेऊ का दूर का भी वास्ता तुम्हारे धर्म से है नहीं। तुम व्यर्थ में इनके लिए अपनी जान क्यों दे रहे हो? उस समय आप कहने लगे, मेरा सतगुरू जो है, वह सबका सांझा है और सबको सांझा उपदेश करता है -

खत्री ब्राहमण सूद वैस
उपदेसु चहु वरना कउ साझा॥ *अंग - 748*

मेरा गुरू तो सबका सांझा है लेकिन आप लोग जो बलपूर्वक कर रहे हो, इस रीति की हम विरोधता करते हैं, वैसे तुम्हारे साथ हमारा कोई विरोध नहीं है। जाति या नस्ल के साथ हमारी कोई विरोधता नहीं है क्योंकि सभी व्यक्ति परमेश्वर का ही रूप है लेकिन जो तुम्हारी नीति है हम इसका तो डटकर विरोध करेंगे। दूसरा जो तुम मृत्यु की बात करते हो, तो वह तो गुरू ने हमें इससे पार कर दिया है। उसने जहाँ पर हमें पहुँचा दिया है, वहाँ पर मृत्यु पहुँच ही नहीं सकती है। इस प्रकार से पढ़ लो -

धारना - जिहड़ी मौत तों डरे जग सारा,
मेरे मन आनंद है पिआरिओ।

कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरै मनि आनंदु॥
मरने ही ते पाईअै पूरनु परमानंदु॥ *अंग - 1365*

उसने आरा के साथ चीर दिया जाना कबूल कर लिया। लकड़ी के तख्तों में उन्हें जकड़ दिया गया। उधर सामने पिंजरे के अन्दर गुरू जी को बन्द किया हुआ है। गुरू जी सारे दृश्य को देख रहे हैं। गुरू जी की तरफ उसकी पीठ कर दी। उस समय जब आरा उसके शीश पर रखने लगा तो जल्लाद कहने लगा, मतीदास! मुझे एक हैरानी हो रही है क्योंकि आरे से लोगों को चीरना तो मेरा रोज का ही कृत्य है और न जाने कितने लोगों को मैं चीर चुका हूँ। लेकिन वे सब तो चीरने से पहले ही मर चुके या बेहोश हो चुके थे। परन्तु एक तुम हो कि तुम्हारे नेत्रों की चमक और भी बढ़ गई है। चेहरे पर लाली आ गई है। क्या तुमने कोई नशा पी लिया है? तुम बताओ कि तुम्हारे चेहरे पर उदासी क्यों नहीं आई? तथा यदि तुम्हारी कोई अन्तिम इच्छा हो तो तुम वह भी बतलाओ जो कि मेरे अधिकार क्षेत्र में हो।

उस समय भाई मतीदास जी कहने लगे, जल्लाद! ये बातें समझने समझाने का अब समय नहीं है। तुम आरा मेरे सिर पर रखकर चीरना शुरू करो। यह सवाल तुम मुझसे मत पूछो। कहने लगा, मतीदास! मेरे मन में यह बात रह जाएगी, कृपा करके मेरे इस सवाल का जवाब दे दो। क्या तुमने कोई नशा पी लिया है? भाई मती दास जी कहने लगे, नशा हमने एक बार पिया था जो कि अब तक उतरा ही नहीं है -

धारना - चड़ी रहे दिन रात,
नाम खुमारी-नाम खुमारी।

पोसत मद अफीम भंग उतर जाए परभाति।
नाम खुमारी नानका चड़ी रहे दिन राति। *जनमसाखी*

कहने लगे, जल्लाद! यह बात तुम्हारी समझ से परे है, हमने अमृत का प्याला पिया हुआ है, नाम अमृत का प्याला पिया हुआ है। हम लोग मृत्यु से पार हो चुके हैं। अमृत कहते ही उसे हैं, जहाँ पर कि मृत्यु की पहुँच न हो। अतः हम अपने घर को जा रहे हैं। इसलिए चिन्ता किस चीज की है? हाँ, जो तो सेवा की बात या अन्तिम इच्छा की बात कर रहे हो तो मैं एक विनती करता हूँ जिसके लिए मैं तुम्हारा शुक्रगुजार ही हूँगा। वह विनती यह है कि आरा चलाते समय तुम मेरी पीठ गुरू की तरफ मत करो क्योंकि जिस समय तुम्हारा आरा मेरे शीश पर चल रहा हो, तो उस समय मेरे अन्दर श्री गुरू तेग बहादुर जी का निवास हो और मैं उनके सुन्दर चेहरे को देखता देखता शरीर का परित्याग कर जाऊँ। इस प्रकार भाई मतीदास जी के शरीर के दोफाड़ करके फेंक दिए गए।

इसके बाद भाई दयाला जी की बारी आई। फतवा लग गया कि या तो इस्लाम कबूल करो और या फिर देग में उबाल दिए जाओगे। पानी उबल रहा था तथा देग के किनारों से बाहर उबल-उबल कर गिर रहा है। कहने लगे भाई दयाला! यह तुम्हारा अन्जाम है। वे कहने लगे, कोई बात नहीं है, यह तो ठीक ही है। उस समय देग में डाल देने का हुक्म हो गया। भाई दयाला जी बोले, तुम लोग पकड़ कर क्यों डालोगे, मैं तो स्वयं ही इसमें बैठ जाता हूँ। आपने अपना कदम पानी में डाला और साथ ही श्री गुरू तेग बहादुर जी के चरणों में अरदास इस प्रकार से करते हैं -

धारना - मेरी टुटी ना प्रीत वाली डोरी,
मिठा तेरा भाणा लगदा।

चंद चकोर परीत है लाइ तार निहाले।
चकवी सूरज हेत है मिलि होनि सुखाले।
नेहु कवल जल जाणीअै खिड़ि मुह वेखाले।
नारि भतार पिआरु है मां पुत समाले।
पीर मुरीदा पिरहड़ी ओहु निबहै नाले॥

भाई गुरदास जी, वार 17/4

हे प्रभु जी! मेरा प्यार तुम्हारे साथ निभ जाए। इस प्रकार से उसे पानी में इस प्रकार से उबाल दिया जैसे कि आलू को उबाल दिया जाता है। आलू की भांति शरीर गल गया।

इसके बाद भाई सतीदास जी की बारी आ गई। तीन सिक्खों को गुरू जी ने पहले ही भेज दिया था। भाई जेठा जी और भाई गुरदित्ता जी को आपने कहा कि तुम लोग जाकर गोबिन्दराय को तिलक दो। भाई ऊधौ तथा भाई जैता जी की ड्यूटी लगा दी कि तुम लोग हमारे शीश को यहाँ से लेकर आनंदपुर साहिब चले जाना। बाकी शरीर को ले जाने का भी हमने प्रबन्ध कर दिया है। तुम लोग कोई चिन्ता न करना बाहर भीड़ के अन्दर जाकर खड़े हो जाना।

इस प्रकार उस समय हुक्म हो गया कि भाई सती दास जी को रूई में लपेट कर आग लगा दो, फलस्वरूप उसे रूई में लपेट कर आग लगा दी गई। उसके मुख से हाय-हाय की जगह एक ओंकार की आवाज आ रही है। अतः तीनों ने गुरू जी के सामने शहीदी दे दी। गुरवाणी का कथन है कि मरना तो सबने है लेकिन मरना कोई विरला ही जानता है। इस प्रकार से पढ़ लो -

धारना - मरदा मरदा सभ जग मोइआ,
मरना कोईओ जाणदा।

कबीरा मरता मरता जगु मुआ मरि भि न जानै कोइ।।
अैसी मरनी जो मरै बहुरि न मरना होइ।। अंग - 555

कबीर मुहि मरने का चाउ है मरउ न हरिकै दुआर।
मति हरि पूछै कउनु है परा हमारै बार॥ अंग - 1357

श्री गुरू जी की महान खुशियों व कृपा दृष्टि को प्राप्त करते हुए तीनों ने अपने क्षणभंगुर शरीर को अलविदा कर दिया तथा गुरू के लोक में पहुँच गए। दूसरा दिन हुआ यह अगहन मास की 13 तारीख थी। उस समय श्री गुरू महाराज जी के साथ वचन होते हैं। श्री गुरू जी कहने लगे कि भाई जो आपने इस शरीर के साथ करना है, वह कर लो। यह 1732 विक्रमी संवत् का 13 अगहन वाला दिन था। सारे शहर में ढिंढोरा पिटवा दिया गया कि कोई भी व्यक्ति घर न रहे, कल को गुरू तेग बहादुर को शहीद किया जाना है। सभी लोग आकर नजारा देखो। वे एक प्रकार से दहशत फैलाते थे। महाराज जी को एक बात कही गई कि तुम करामात दिखलाओ। गुरू जी बोले, प्रेमीजनो! वाहिगुरू जी की चल रही दुनिया में हम रुकावट कैसे डाल दें? करामात तो कहर का नाम है, इसलिए करामात दिखाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। हमने तो औरंगे के सिर पर ठीकरा फोड़ देना है ताकि इसके अधर्म में कुछ रुकावट पड़ सके। करामातें दिखाने के लिए तो हम यहाँ पर आए ही नहीं हैं -

नाटक चेटक कीए कुकाजा।
प्रभ लोगन कह आवत लाजा।

प्रभु भक्तों को तो करामात नाम कहने में ही लज्जा आती है कि इस प्रकार के कार्य हम करें? करामातों का तो कोई अन्त ही नहीं है, करामातें तो एक गुरसिक्ख ही दिखला सकता है। अतः उस समय फतवा लग गया। चाँदनी चौक में श्री गुरू जी को ले आया जाता है। कुँए के पानी से बरगद के पेड़ के नीचे आपने स्नान किया। शहरवासियों का एक बहुत बड़ा घेरा चारों तरफ फैल जाता है, जैसे कि आखाड़े के चारों तरफ लोग खड़े होते हैं। इसी प्रकार से बहुत दूर तक विशाल संख्या में जन समूह एकत्र है। सभी अरदास कर रहे हैं कि हे प्रभु जी! ऐसा कुछ न हो जाए। सारी जनता रो रही है। हिन्दू धर्म रो रहा है कि हमारी रक्षार्थ कितनी बड़ी कुर्बानी दे रहे हैं। अपना सर्वस्व न्यौछावर करने जा रहे हैं। उस समय श्री गुरू तेग बहादुर जी चौकड़ी मार कर बैठ जाते हैं और ब्रह्मलीन हो जाते हैं।

उस समय जब कहते हैं कि करामात दिखाओ तो आपने कहा कि बाद में तुम्हें पता चल जाएगा। एक कागज गर्दन के ऊपर लिखा पड़ा है उसके ऊपर लिखा हुआ है -

बांहि जिना दी पकड़ीए
सिर दीजै बांहि न छोडीए।
तेग बहादर बोलिआ धरि पईए धरम न छोडीए।

तलवार का वार होता है, कच्चा धागा बँधा हुआ है लेकिन हैरानी होती है कि तलवार बाद में आती है और शीश पहले ही उड़ जाता है, साथ ही साथ आँधी आ जाती है, काली अंधेरी रात पड़ जाती है, कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता है। सभी हैरान हो जाते हैं। भाई जैता तथा ऊधौ के पास शीश पहुँच जाता है। उस समय बहुत शौर पड़ जाता है। सारी दिल्ली हिलने लग जाती है, उधर गुरू जी के धड़ को लक्खी बनजारा ले जाता है।

इस प्रकार महाराज जी ने आज के दिन बहुत बड़ी कुर्बानी दी। उद्देश्य था - एक उसूल पर पहरा देना। अपने-अपने धर्म की रक्षा तो सारा संसार करता है लेकिन आपने हिन्दू की रक्षार्थ अपने प्राणों की आहुति दे दी। यदि आप उस समय बलिदान न देते तो न आज किसी मन्दिर में शंखध्वनि होती, और न कोई जनेऊ पहनता बल्कि सबके नाम दीन व मोहम्मद ही होते। फिर हिन्दोस्तान का नक्शा कुछ और ही होना था। श्री गुरू तेग बहादुर महाराज जी ने यह अहसान भारतवर्ष के सिर पर रखा तथा गुरू दशमेश जी ने तो अपने चारों साहिबजादों को इसी बलिदानी की पंक्ति में

खड़ा करके भारतवर्ष की अस्मिता को बचा लिया। सभी लोग इस प्रकार से पढ़ो -

धारना - वाहवा वाहवा बई सीस दे हिंद रख लई।
अैसी करनी किसे ना कीती - 2

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीआ पयान।
देग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन।

बचित्र नाटक

सारे संसार के इतिहास में ऐसी क्रिया किसी ने नहीं की है। लड़ाइयां तो बहुत सारे महापुरुषों ने की, पूर्ण पुरुषों ने बहुत सारे युद्ध किए, कुर्बानियां भी बहुत दीं। श्री रामचन्द्र जी का युद्ध, रावण के साथ हुआ परन्तु कारण? कारण सीता जी थीं। महारभारत का बहुत भयानक युद्ध हुआ, श्री कृष्ण जी ने दिशा निर्देश दिए, लेकिन कारण? कारण द्रौपदी जी थी। पाप की समाप्ति के लिए युद्ध करवाया गया। इसी प्रकार बहुत सारे महापुरुषों ने बहुत सारे युद्ध किए व कुर्बानियां दी लेकिन संसार के इतिहास में यह कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता है कि किसी दूसरे धर्म की रक्षार्थ किसी ने सुप्रीम कुर्बानी दी हो -

तेग बहादर के चलत, भयो जगत को सोक।

हिन्दू व मुसलमान यानि कि सबके मन शोक में डुब गए कि यह तो बहुत ही बुरी बात हुई है क्योंकि श्री गुरू तेग बहादुर जी पर असंख्य मुसलमान यकीन व श्रद्धा रखते थे, इसलिए वे सभी रो रहे हैं। जबकि हिन्दुओं ने तो रोना ही था। अर्थात सारे संसार में शोक छा गया। दूसरी तरफ-

है है है सभ जग भयो, जै जै जै सुर लोक।

बचित्र नाटक

देवताओं के मण्डल में जय जयकार हो रही है। जिधर से भी आप गुजरते हैं, उधर से ही जय-जयकार होती जा रही है।

निरंकार के देश मे ंसर्वत्र जय-जयकार हो रही है -

तिलक जंजू राखा प्रभ ताक।
कीनो बडो कलू महि साका। *बचित्र नाटक*

श्री गुरू जी ने कारण भी लिख दिया है क्योंकि बाद में बहुत गलत इतिहास भी लिखे गए हैं। गुलामदीन ने लिखा है कि गुरू तेग बहादुर साहिब डकैतियां डाला करते थे, इसीलिए उन्हें पकड़ कर सजा दी गई। कई हमारे इतिहासकारों ने भी उसकी नकल करके लिख दिया। इस बात की बहुत चर्चा भी होती रही। पंजाबी यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर ने भी ऐसा ही लिख दिया था।

अत: श्री गुरू जी अपने हाथ से लिखते हैं कि उनके शहीदी का कारण था -

तिलक जंजू राखा प्रभ ताक।
कीनो बडो कलू महि साका।
साधनिहेति इती जिनि करी।
सीसु दीआ पर सी न उचरी। *बचित्र नाटक*

इस प्रकार से साधुसंगत जी! आज का यह महान दिन केवल सिक्खों के लिए ही महत्व नहीं रखता है और न ही केवल भारतवर्ष के लिए ही महत्व रखता है बल्कि यह तो सारी दुनिया के लिए एक साझा दिन है, जिस दिन एक ऐसी घटना घटित हुए कि एक बेगाने धर्म की रक्षार्थ शहादत दी गई। भले ही उसेक बाद हम बदला भी चाहते थे कि पहाड़ी राजा लोग श्री गुरू जी के साथ मिलाप रखते, उनके ऊपर सेना न चढ़ाते, साहिबजादों की शहादत का कारण न बनते, लेकिन यह संसार तो ऐसा ही है। बावन राजाओं को गुरू हरिगोबिन्द साहिब ने उम्रकैद से निकलवाकर वापिस उनकी गद्दियों पर बैठाया परन्तु कितने थे जिन्होंने श्री गुरू जी की मदद की? कितने उनके अपने लोग थे, कि जब दशमेश जी उनके पास गए तो उन्होंने कह दिया कि दरवाजा नहीं खुल सकता है। दूसरी तरफ इस्लाम वाले हैं। मैं यह विनती इसलिए कर रहा हूँ कि हमारे मनों में घृणा पैदा हो जाती है कि शायद मुसलमान ही बुरा है। नहीं, मुसलमान बुरा नहीं है बल्कि राजमद बुरा होता है। व्यक्ति तो कोई भी बुरा नहीं होता है। जितनी मदद मुसलमानों ने गुरू दशमेश जी की है वह उल्लेखनीय है। कहीं पर वे दशमेश जी को चारपाई पर बैठा कर घूम रहे हैं तो कहीं पर गवाहियां दे रहे हैं, कहीं पर निहंगखान अपने किले में ले जाकर दूसरे लोगों को मारने पर उतारू हो जाता है। रायकोट का जो मीर कल्ला (मुसलमान) था, उसे नवाब सरहिन्द जोर लगाता रहा कि तुम मुझे गुरू गोबिन्द सिंह को पकड़वा दो लेकिन उसने अपनी जिन्दगी के अन्तिम श्वास तक भी ऐसा करने से मना कर दिया। आज के युग में किसी के अन्दर यह हिम्मत है कि वह अपने ही बड़े राज्य के खिलाफ ऐसी बात सोच भी सके? ये तो वे ही थे, जिन्होंने दशमेश जी के साथ दिए। यह न सोचो कि इस्लाम वाले बुरे थे। नहीं उनमें भी बहु गुण हैं, हिन्दुओं में भी बहुत गुण हैं। व्यक्ति जो अच्छा है, वह सब धर्मों के अन्दर ही है। एकदम किसी कौम को ही निरस्त कर देना गलत बात है। दो, चार, दस लोगों की गलती से सारी कौम को निरस्त कर देना एक गलत बात ही हुआ करती है।

अब समय अनुमति नहीं दे रहा है इसलिए अब यहीं पर समाप्ति है।

माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि जानिआ।।

सन्त वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

सतिनामु श्री वाहिगुरू
धंन श्री गुरू नानक देव जीओ महाराज॥
डंडउति बंदन अनिक बार सरब कला समरथ॥
डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे करि हथ॥ अंग - 256

फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ॥
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ॥अंग - 289

धारना - प्रभ सभ किछु तेरा जी
मै किछु नाही मैं किछु नाही।

मै नाही प्रभ सभु किछु तेरा॥
ईधै निरगुन ऊधै सरगुन
केल करत बिचि सुआमी मेरा॥
नगर महि आपि बाहरि फुनि आपन
प्रभ मेरे को सगल बसेरा॥
आपे ही राजनु आपे ही राइआ
कह कह ठाकुरु कह कह चेरा॥
का कउ दुराउ का सिउ बलबंचा
जह जह पेखउ तह तह नेरा॥
साध मूरति गुरु भेटिओ नानक
मिलि सागर बूंद नही अन हेरा॥ अंग - 527

माघ की संक्रान्ति भारतवर्ष में अपना एक विशेष स्थान रखती है। यह कोई ऐसी वैसी बात नहीं है, बल्कि एक वैज्ञानिक बात है। इस माह के आने से पहले वनस्पति का जितना रस सूखना था, वह सूख चुका है तथा आज धरती का जो झुकाव है, वह कुछ डिग्रियां बदला है, उसकी गति में परिवर्तन आया है। सूर्य की गति बदलने से उसका प्रभाव सारी वनस्पति पर पड़ता है, पशुओं व पक्षियों पर पड़ता है, तथा सारे मनुष्यों पर पड़ता है। इन दो महीनों को बसन्त की ऋतु कहते हैं। इस ऋतु में आप आजमाकर देख सकते हैं कि इसमें कुदरती तौर पर चित्त के अन्दर खुशी उठती है। जिसका मन चिन्ताओं आदि के कारण जल चुका है, उसकी तो बात छोड़ दो, वैसे तो उसके अन्दर भी खुशी का वेग उठता है, अन्य सबके हृदय के अन्दर तो इच्छा उत्पन्न होती है कि चलो उठें और घूमें। मन के अन्दर स्वतः ही प्यार जागृत हो जाता है। स्तसंग प्यारी लगती है, गुरू प्यारा लगता है और जो जलन व कुढ़न होती है, वह अपने आप ही इस ऋतु के अन्दर समाप्त हो जाती है। इसके साथ ही ऐसा शास्त्रों का कथन है कि इस ऋतु में नाम का जप किया हुआ, भजन किया हुआ, बहुत अधिक फलदायक हुआ करता है। यही कारण है कि भारतवर्ष में बहुत पहले से ही, जब घरों में पानी आदि का प्रबन्ध नहीं हुआ करता था, तो उस समय दूर दराज तलाबों पर, सरोवरों पर, नदी नालों पर स्नानार्थ जाया करते थे। स्नान का अपना महात्म्य हुआ करता है। इस ऋतु में व्यक्ति के अन्दर वैसे ही कुछ परिवर्तन होने लगता है, उसका मन नाम जपने के लिए उतावला होने लगता है, परमेश्वर प्यारा लगने लगता है, गुरू प्यारा लगने लगता है। वह जो दीपक, अन्दर की ओर बुझा हुआ था, उसमें दोबारा रोशनी आने लगती है। अतः इस महीने को सर्वाधिक महात्म्य मिला हुआ है, फिर भी श्री गुरू महाराज जी ने हमारा मार्गदर्शन करते हुए कहा है कि ऐ प्रेमीजनो! हम तुम्हें एक बहुत बड़ी बात बताते हैं कि दरिया पर नहाने का फल स्पेशल हुआ करता है।

एक बार श्री गुरू नानक देव महाराज जी को श्री गुरू अंगद देव जी ने पूछा कि महाराज! भारतवर्ष के अन्दर स्नान को विशेष महत्व दिया गया है क्या इसका भी कोई पुण्य होता है? यदि होता है तो कृप्या इसे खोल कर समझाने की कृपा करें।

श्री गुरू महाराज जी कहने लगे, ऐ भद्रपुरुष! यह तुमने बहुत ही महत्वपूर्ण बात पूछी है, इसमें सबसे जरूरी है विधिपूर्वक स्नान करना। यदि कोई व्यक्ति एक पहर रात रहते ही उठकर स्नान करता है तो उसे सवा मन सोना दान करने के बारबर पुण्य फल प्राप्त हो जाता है। राजा कर्ण नित्य प्रतिदिन सवा मन सोना दान किया करता था, आज तक बड़े दानी सज्जनों के अन्दर उसका नाम अंकित है। परन्तु यदि एक पहर रात के रहते कोई स्नान करता है तो उसे इसके बराबर ही फल प्राप्त हो जाता है। यदि कोई उस समय से

दो घड़ी बाद स्नान करता है, यानि कि पचास मिनट बाद तो फिर उसे सवा मन चांदी दान करने जितना फल प्राप्त हो जाता है। यदि कोई उससे दो घड़ी बाद स्नान करता है, तो उसे सवा मन तांबा दान करने जितना फल प्राप्त होता है। इससे भी दो घड़ी बाद जो स्नान करता है तो उसे सवा मन दूध या सवा मन अनाज दान करने जितना फल प्राप्त होता है। यह सारा फल केवल स्नान करने से ही प्राप्त होता है। इसी प्रकार श्रद्धालुजन महीनों के हिसाब से तीर्थों पर जाकर स्नान करते हैं। लेकिन श्री गुरू जी हमें कुछ अलग प्रकार से समझाने की कोशिश करते हैं जो कि हमें पता ही नहीं है और जिसके द्वारा हम सचमुच ही पवित्र हो जाते हैं। किसी भी तीर्थ पर स्नान करने से केवल एक पाप ही दूर हुआ करता या यूँ कह लें कि तीर्थ करने से केवल एक फल ही प्राप्त हुआ करता है लेकिन जो तरीका श्री गुरू जी हमें बताते हैं, उसके द्वारा इतना फल प्राप्त हो जाता है कि जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। आदमी को यह यकीन करना ही मुश्किल हो जाता है कि क्या इतना फल भी मिल सकता है? सबसे बड़ी बात यह है कि व्यक्ति अहंभाव की मैल के कारण मैला हो चुका है। इसके अन्दर जो भावना है कि 'मैं हूँ' उसके द्वारा ही यह मैला हो चुका है। वैसे तो सारी दुनिया के अन्दर यह दृढ़ भावना है कि 'मैं हूँ' और यही हउमै भाव (अहंभाव) व्यक्ति को मैला करता है।

जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी
काला होआ सिआहु॥
खंनली धोती उजली न होवई
जो सउ धोवणि पाहु॥ *अंग - 651*

वह मैल किसी भी तरीके से उतरती नहीं है। तीर्थस्नान से तो वह मैल और भी चढ़ जाती है। जब तक वह मैल उतरती नहीं है, तब तक इस जीवात्मा का कल्याण नहीं हो पाता है और फलस्वरूप यह आवागमन के चक्रव्यूह में भटकती रहती है -

धारना - जंमदा ते मरदा है
हउमै दा बंनिआ होइआ।

हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि॥
हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि॥ *अंग - 466*

कई जनम भए कीट पतंगा॥
कई जनम गज मीन कुरंगा॥
कई जनम पंखी सरप होइओ॥
कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ॥ *अंग - 176*

यह आवागमन का चक्र इस जीव के गले में सदैव पड़ा ही रहता है क्योंकि हउमै ने उसे बाँध लिया है। हउमै (अंहभाव) की मैल इतनी गाढ़ी है कि इसके प्रभाव के कारण परमेश्वर पास में रहता हुआ भी दिखाई नहीं पड़ता है। परमेश्वर का जो प्रकाश है, उसका कोई अन्त नहीं है कि इसकी इतनी वोल्टेज है। यदि उस प्रकाश की तुलना में यह कह दें कि यह करोड़ों सूर्यों के प्रकाश से भी अधिक प्रकाशयुक्त है तो फिर भी यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। लेकिन इतने गहरे प्रकाश को भी यदि कोई ढकने वाली चीज है, कोई कालापन है, तो वह है अहंभाव। इसके अन्दर से इतनी शक्तिशाली लाइट भी पास नहीं हो पाती है तथा पास में रहता हुआ परमेश्वर भी दिखाई नहीं पड़ता है क्योंकि -

धन पिर का इक ही संगि वासा .....॥अंग - 1263

'धन' कहते हैं - जीवात्मा को तथा पिर कहते हैं - वाहिगुरू को। एक पलंग पर ही पास-पास रहते हैं और दोनों के बीच फर्क कितना है?

भांभीरी के पात परदो बिनु पेखे दुराइओ॥ अंग - 624

यह जो प्लास्टिक का पतला पेपर होता है, पतले से पतला पेपर। बस, इतना ही दोनों के बीच फर्क है। परन्तु कहते हैं कि -

..... विच हउमै भीति करारी॥

गुरि पूरै हउमै भीति तोरी
जन नानक मिले बनवारी॥ *अंग - 1263*

अहंभाव की अत्यन्त शक्तिशाली दीवार दोनों के बीच है, यह कितनी बड़ी चीज परमेश्वर ने बना दी है, जिसके प्रभाव से पास में रहता हुआ परमेश्वर भी दिखाई नहीं पड़ता है। हम लोग प्रायः महापुरुषों से, गुरुओं-पीरों से, सन्तजनों से, आरिफों से, आलमों से, पीर पैगम्बरों से, सुनते रहते हैं कि परमेश्वर तो हमारे बिल्कुल पास में ही रहता है परन्तु बीच में bad conductor होने के कारण वह इस विद्युत धारा को प्रवाहित होने ही नहीं होने देती है। गाड़ियों के अन्दर कारब्यूरेटर में कार्बन आ जाती है, इंजन की तरफ से तो सारी शक्ति जा रही है, बैटरी की तरफ से भी सारी करंट आ रही है, लेकिन उस करंट ने जहाँ आगे तारों को मिलना होता है, वहाँ पर यदि कार्बन लगी हुई है, तो फिर वहाँ से विद्युत धारा (करंट) गुजर ही नहीं पाती है। फलस्वरूप आपकी गाड़ी स्टार्ट नहीं हो पाती है। इसी प्रकार हमारे अन्दर अहंभाव की एक मैल लगी हुई है जो कि जीवात्मा और परमेश्वर को आपस में मिलने ही नहीं देती है। इस अहंभाव

की मैल को दूर करने का केवल एक ही तरीका है, जिसे श्री गुरू जी समझाते हुए कथन करते हैं कि ऐ प्रेमीजनो! तुम्हारे अन्दर वाहिगुरू जी ने एक ऐसा तीर्थ बनाया है जहाँ पर स्नान करने से यह मैल उतर जाती है अन्यथा यह मैल कहीं भी उतर नहीं सकती है। अब वह तीर्थ कहाँ पर है उसे आप ढूँढ़ लो कि वह तीर्थ कहाँ पर है -

सच तां परु जाणीअै जा आतम तीरथि करे निवासु॥
सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु॥अंग - 468

यदि आप वाहिगुरू जी को जानना चाहते हैं, तो वह तभी जाना जाएगा, जबकि आत्म तीर्थ के अन्दर तुम्हारा निवास हो जाए। उसे ही सत्यसर का स्नान कहते हैं और वह तीर्थ कहीं बाहर नहीं बल्कि हमारे अन्दर ही है। वहाँ से तीन नदियां निकलती हैं, वे तीनों नदियां जीवन-धारा लेकर इस शरीर को जीवित रखती हैं। इनके अन्दर ही जीवन की धारा है और उन नदियों से या उस अमृत सरोवर से हमारे अन्दर प्रवाह भी आता है, परन्तु हम उसे जान ही नहीं पाते हैं। हम बाहरी-बाहरी बात को तो जानते हैं, लेकिन हम अपने अन्दर की बात को नहीं जान पाते हैं। बाहरी तौर पर तो हम बहुत सुन्दर कपड़े पहन लेते हैं, नाच लेते हैं, साबुन भी बढ़िया से बढ़िया प्रयोग कर लेते हैं, सेन्ट लगा लेते हैं, लेकिन हमें यह तो पता नहीं चलता है कि हमारे अन्दर मैल कितनी भरी पड़ी है। गुरू जी कहते हैं कि हमारे अन्दर थोड़ी बहुत मैल नहीं बल्कि बहुत सारी मैल भरी पड़ी है -

जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी
काला होआ सिआहु॥
खंनली धोती उजली न होवई
जो सउ धोवणि पाहु॥ अंग - 651

कोल्हू के गन्दे कपड़े को आप जितना चाहो धो लो लेकिन वह सफेद रंग का नहीं हो पाता है, उसके अन्दर पीलापन तो बना ही रहता है, इसी प्रकार से अहंभाव की मैल न तो तीर्थ करने से दूर होती है न जप या तप करने से दूर होती है, न वह दान वगैरह करने से दूर होती है। वह तो तभी दूर होती है जबकि हम अपने अन्दर के अमृत सरोवर में स्नान करते हैं। इस आन्तरिक सरोवर को ही अमृतसर कह दिया गया है और यह अमृतसर, प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर है। श्री गुरू जी कहते हैं कि तुम उस अमृत सरोवर के अन्दर रोज स्नान करो।

गुरू जी कहते हैं कि तुम गुरू के सिक्ख हो।

वह कहता है, हाँ जी।

गुरू जी पुनः पूछते हैं कि तुम केवल मत्था टेकने वाले ही सिक्ख हो या फिर सचमुच के सिक्ख हो?

वह कहता है महाराज! मैं तो सचमुच का सिक्ख हूँ। गुरू जी कहते हैं कि अच्छा फिर हम तुम्हें बतला देते हैं कि सिक्खी के नियम व मर्यादाएं क्या होती हैं और तुम उनके अनुसार अपने आप ढालने की कोशिश करो फिर तुम्हें सिक्खी की प्राप्ति हो जाएगी। अभी तो तुम केवल सिक्खी के उम्मीदवार ही हो अभी तुम सिक्ख नहीं बन सके हो क्योंकि तुमने अभी सिक्खी के नियमों व मर्यादाओं का पालन नहीं किया है। वह कहता है कि महाराज! हमें तो पाँच प्यारों ने बहुत से नियम व मर्यादाएं बतलाईं हैं? गुरू जी कहते हैं कि वह तो ठीक है लेकिन जो मैं कह रहा हूँ उसे ध्यानपूर्वक सुनो! उसके बारे में गुरू जी इस प्रकार से कथन करते हैं -

धारना - भलके उठ के धिआवे हरी नाम नूं,
सिख जो कहावे गुरां दा।

गुरुमुखजनो! दो तरह के नियम व मर्यादाएँ होती हैं, एक तो वे होते हैं, जिन्हें शरीर के ऊपर धारण करना पड़ता है जबकि दूसरी वे होती हैं, जिन्हें मन पर धारण करना पड़ता है। जब तक तुम लोग इन नियमों व मर्यादाओं का पालन नहीं करोगे, तब तक सारी ऊर्जा की लीकेज होती रहती है और जब तक ऊर्जा की लीकेज (रिसाव) होती रहती है, तब तक सभी जानते हैं कि मशीनरी सुचारु रूप से चल ही नहीं पाती है अतः महाराज जी कथन करते हैं -

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै॥
उदमु करे भलके परभाती
इसनानु करे अंम्रितसरि नावै॥ अंग - 305

कहते हैं सूर्योदय के बाद नहीं बल्कि ब्रह्मवेला में उद्यम करके उठे। उसके बाद क्या करे? उसके बाद स्नान करे। अब यहाँ तक की बात तो सभी कर सकते हैं, लेकिन अगली बात कुछ मुश्किल प्रतीत होती है। वह क्या बात है? महाराज कहते हैं 'अम्रितसर नावै'। जो लोग अमृतसर शहर के अन्दर ही निवास करते हैं, वे भी नित्य प्रतिदिन उस सरोवर में स्नान नहीं कर पाते हैं, कहीं न कहीं उन्हें रुकना ही पड़ता है। दूसरी तरफ गुरू जी कहते हैं कि यदि वह रोज नहाता है तभी गुरसिक्ख कहलवा सकता है। जो बेचारे दूर-दराज के क्षेत्रों में बैठे हैं, वे तो गुरु की सिक्खी की परिधि से फिर बाहर ही हो गए। जो सयाने लोग हैं, वे सोचते हैं कि गुरू जी ने तो बाहरी चीजों को माना ही नहीं है, वे तो आन्तरिक

चीजों के बारे में ही बताते हैं। यह बात दूसरी है कि अन्दर की चीजों के नाम हमने बाहरी रख लिए हैं। श्री गुरू जी ने कहा है कि अमृतसर में स्नान करो और आसा दी वार में श्री गुरू जी ने कहा है कि -

सचु तां परु जाणीअै
जा आतम तीरथि करे निवासु॥ *अंग - 468*

वहाँ पर इस चीज का नाम आत्म तीर्थ बताया गया है।

सतिगुरू नो पुछि कै
बहि रहै करे निवासु॥ *अंग - 468*

उस तीर्थ पर बैठना भी अपने आप से नहीं आता है, वह भी सतगुरू को पूछना पड़ता है, तभी यह चीज प्राप्त हो पाती है। गुरू जी कहते हैं कि यदि तुम उस तीर्थ के अन्दर स्नान कर लोगे तभी तुम पवित्र हो पाओगे। पवित्र ही नहीं, फिर तो तुम पुनीत ही हो जाओगे। सौ बार पवित्र-पवित्र कहो तथा एक बार पुनीत कह दो, तो वह बराबर हो जाया करता है। अब हमें नहीं पता है कि वह तीर्थ किस स्थान पर है और हम वहाँ किस प्रकार पहुँचें? गुरू का हुक्म है कि वहाँ पर रोज स्नान करो। यदि हमें बचपन से ही यह लगन लगी होती, फिर तो हमें यह फिक्र लगा रहता है कि गुरू साहिब तो कहते हैं कि रोज अमृत सरोवर में स्नान करो लेकिन हमें तो अमृत सरोवर का पता ही नहीं चल सका है और मैं अमृतसर जा भी नहीं सकता हूँ। अब विचार करो कि गुरू जी हमें बाहर वाले तीर्थ के लिए कहाँ कहते हैं वे तो कहते हैं कि तीर्थ तो तुम्हारे अन्दर ही है -

घर ही महि अंम्रितु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइआ॥
जिउ कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाइआ॥
अंम्रितु तजि बिखु संग्रहै करतै आपि खुआइआ॥
अंग - 644

वह अमृत तो तुम्हारे अन्दर ही पड़ा है। अब हमारे अन्दर तो बहुत कुछ भरा पड़ा है। मैडिकल साइंस तथा योगीजन बताते हैं कि जिस प्रकार से ईंटें लगा कर मकान का निर्माण किया जाता है, उसी प्रकार से इस शरीर में दो खरब पन्द्रह अरब सेल्स लगे हुए हैं। यह गणना विज्ञान ने कम्प्यूटर की मदद से की है। लेकिन फिर भी इस संख्या को शत प्रतिशत सही नहीं कहा जा सकता है। बस, यूँ समझ लो कि असंख्य सेल्स इस शरीर के निर्माण में लगे हुए हैं। इसी प्रकार से योगियों ने योग बल के द्वारा देखा है, इस शरीर को जीवित रखने के लिए जो रक्त नलिकाएं लगी हुई हैं उनकी संख्या 72 करोड़ 72 लाख 72 हजार 200 है। परमेश्वर की रचना को देखकर आश्चर्य होने लगता है कि हे परमेश्वर! तुम्हें इतना फालतू समय कहाँ से मिल गया कि तुमने एक नहीं बल्कि करोड़ों ब्रह्मांडों में आबादियां बनाई या उनके शरीर बनाए? तुम कितने शक्तिशाली हो कि इस प्रकार की चीजें बनाते रहते हैं?

आज के अखबार में लिखा था कि वैज्ञानिकों ने (इजारायल के एक वैज्ञानिक ने) दिमाग की खोज करते हुए एक चीज ढूँढ़ ली है कि नींद कहाँ से आती है? व्यक्ति को नींद कहाँ से आती है तथा जाग कैसे आती है? यह व्यक्ति बिना जगाए ही क्यों जाग जाता है? तथा बिना सुलाए ही क्यों सो जाता है? उन्होंने देखा कि दिमाग के अन्दर नाड़ियों का एक छोटा सा गुच्छा है, उसमें एक स्विच लगा होता है जैसे कि हम लोग बिजली को चलाने के लिए स्विच लगा लेते हैं। जब वह स्विच दब जाती है तो उस समय नींद आ जाती है, जब वह ऑन हो जाती है तो उस समय शरीर को जाग आ जाती है। फलस्वरूप वह कारखाना खड़ा हो जाता है, जो नींद वाला कारखाना है, वह शरीर के काम को संभाल लेती है। वह मशीन न तो वह मेदे को रुकने देती है, न दिल को रुकने देती है, न रक्त निलकाओं में रक्त रुक पाता है, न यह हमारे शरीर के तापमान को रुकने देती है तथा न यह पाँचों प्राणों के कामों को रुकने देती है। जब व्यक्ति जाग जाता है तो फिर यह चुप कर जाती है, फिर यह जाग कर अपना काम करती रहती है। यह इस प्रकार की वाहिगुरू जी की विचित्र लीला है, जिसे जाना ही नहीं जा सकता है। अतः परमेश्वर ने उसमें बहत्तर करोड़, बहत्तर लाख बहत्तर हजार दो सौ रक्त नलिकाएं बनाई हैं। कहीं पर भी आप जोर से नाखून मार लो तो वहीं से रक्त निकल आ जाएगा क्योंकि परमेश्वर ने प्रबन्ध ही ऐसा किया हुआ है। परमेश्वर ने पाँच प्राणों vital forces को इसके अन्दर स्थापित किया हुआ है। एक तो प्रत्येक समय मल को ही शरीर से ही बाहर निकालता रहता है, वह हमारे साढ़े तीन करोड़ रोमकूपों के द्वारा मैल को बाहर निकालता रहता है। अभी नहाने के आधा घंटा बाद जीभ लगाकर देख लेना शरीर से नमकीन स्वाद आएगा क्योंकि तब तक शरीर से बाहर काफी मैल निकल चुकी होती है। यदि वह अपना काम धीमा कर दे तो शरीर बीमार हो जाता है। दूसरा रक्त संचार के काम को सुचारु ढंग से करता रहता है यदि वह रक्त को पहुँचाने में एक सेकेण्ड की भी देरी कर दे तो भी आदमी गश खाकर गिरकर जाता है, डाक्टर कहता है कि शरीर के अन्दर सही तरीके से खून नहीं पहुँच रहा है। तीसरा जो है,

वह आक्सीजन को अन्दर खींचता है तथा कार्बनडाइऑक्साइड को बाहर निकालता रहता है। अब आप ही देख लो कि हमारे अन्दर कितना बड़ा कारखाना लगा हुआ है? वह एकदम से हवा का छान कर ऑक्सीजन खींच लेता है तथा कार्बन को बाहर निकाल देता है। जो कार्बन हमारे शरीर से बाहर निकलती है, तो उसे खाने के लिए वृक्ष तैयार खड़े हैं, वे उसी समय उसे खा लेते हैं तथा उतनी ही तीव्रता से हमारे लिए ऑक्सीजन को पुनः बना देते हैं। इस प्रकार हम लोग इन पौधों व फसलों के साथ जुड़े पड़े हैं। वाहिगुरू जी ने हमारे लिए बहुत विचित्र प्रबन्ध कर रखा है। एक प्राण ऐसा है जो कि हमारे दिल को चालू रखता है यदि वह एक सैकेण्ड के लिए भी रुक जाए तो व्यक्ति उसी समय मर जाता है। पांचवां प्राण जो है, वह हमारे आहार से विभिन्न तत्व निर्मित करके उन्हें यथा स्थान पहुँचाने का कार्य करता है। हमारी आँखें दर्द कर रही हों और हम दवाई खा लें तो वह, दवाई को बाकी शरीर में नहीं पहुँचाता है बल्कि उसे वहीं पर पहुँचाता है, जहाँ कि आँखों में विकार है। वह भी बहुत छानबीन का कार्य करता है, वह गलत स्थान पर दवा को नहीं भेजता है। हमारे शरीर में जो कार्य जिगर का है, उसके स्थान पर यदि कोई मशीन बनानी हो तो कहते हैं कि वह कारखाना सैंकड़ों मीलों में लगाना पड़ेगा। वह इस प्रकार के कार्य करता है कि जिन्हें यदि वह करना बन्द कर दे तो शरीर लंगड़ा हो जाएगा। इसी प्रकार से वाहिगुरू जी ने एक व्यस्था इस प्रकार की बना रखी है कि जिसके प्रभाव से शरीर का तापमान 98 डिग्री रहता है। उसके बाद सबका सार, जो हम खाते हैं, जो हम पढ़ते हैं, जिन्हें हम मिलते हैं, जिन लोगों के बीच हम रहते हैं, उसके द्वारा बनता है - मन। जैसे अन्न तैसा मन। उसी से बनती हैं बुद्धि, उसी से बनता है चित्त, उसी से बनता है अहंभाव। अब यह तो है हमारे शारीरिक कारखाने का हिसाब-किताब। यदि हम गौर करें तो इसमें तो कहीं पर भी आत्म तीर्थ की बात ही नहीं आई है। हमने एक-एक चीज की छानबीन करके देख ली है लेकिन आत्म तीर्थ का जिक्र तो आया ही नहीं है। अब फिर हम कहाँ पर स्नान करें? गुरू जी कहते हैं -

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै॥
उदमु करे भलके परभाती
इसनानु करे अंम्रित सरि नावै॥ *अंग - 305*

इसके अन्दर आप तीन नाड़ियों को पकड़ लो। एक का नाम है इड़ा, दूसरी का नाम है पिंगला तथा तीसरी का नाम है सुखमना। यह नाड़ी बीच से होकर जाती है तथा दूसरी इसके दोनों तरफ जाती हैं। उन दोनों के बीच में रह कर सवारी करना शुरू कर दो। इस यात्रा के दौरान पाँच ऊर्जा केन्द्र आएंगे और छठा केन्द्र दोनों आँखों और नाक की जड़ में आएगा। यहाँ पर तीनों नाड़ियां इकट्ठी होकर एक मुँह के रूप में हो जाती हैं। इसी को याज्ञा चक्र कहते हैं। इसके ऊपर अमृत सरोवर है, जिसे कि गंगा यमुना का संगम भी कहते हैं -

कबीर गंग जमुन के अंतरे सहज सुंन के घाट॥
तहा कबीरै मटु कीआ खोजद मुनि जन बाट॥
अंग - 1372

बात को समझने का प्रयत्न करो। इस बिन्दु पर वृत्ति को टिका कर साधक यदि नाम का जप करता है, गुरू का ध्यान करता है तो गुरू कहता है कि ऐ भद्रपुरुष! तुम वाहिगुरू जी के ध्यान में रहो। यह कोई कठिन चीज नहीं है, यदि कोई साँप निकल आता है तो वह साँप के ध्यान में ही रह जाता है। यदि किसी ने बता दिया कि तुम्हारा दुश्मन, तुम्हारे फार्म के आस-पास घूम रहा था तो सारा दिन उसी के ध्यान में रहता है फिर रोटी भी अच्छी नहीं लगती है। अतः महाराज जी कहते हैं कि यदि इस अमृत तीर्थ को जानना है तो हम तुम्हें एक बात बताते हैं -

धारना - धरीए मन विच धिआन
गुरां दी मूरत दा।

गुर की मूरत मन महि धिआन॥

जब हम उस ध्यान को पक्का कर लेंगे जैसे कि किसी कक्षा को उत्तीर्ण किया जाता है यानि कि जब हम उसे सिद्ध कर लेंगे तो हमारा स्वरूप उसके अन्दर लीन हो जाएगा, फिर शेष कुछ नहीं रहेगा। उससे जो अगला स्थान आता है, उस स्थान से अमृत सरोवर शुरू हो जाता है, उसके अन्दर महान रस है, महान आनन्द है। उस समय स्वतः ही पता लग जाता है कि मन, उसके अन्दर स्नान कर रहा है। भजन बन्दगी करने वालों को पता चल पाता है केवल बातें करने वालों को पता नहीं चल पाता है। इस प्रकार वे आनन्द के सरोवर में स्नान करते हैं। इड़ा, पिंगला व सुखमना का जहाँ पर संगम है, वहाँ पर अमृत सरोवर है। सवाल यह पैदा होता है कि वहाँ पर पहुँचा कैसे जाए? श्री गुरू जी कहते हैं कि ऐ प्रेमीजनो! वहाँ पर केवल शब्द के बल से ही पहुँचा जा सकता है क्योंकि वह रास्ता बन्द पड़ा है और हमारी सुरति को मार्ग ही दिखाई नहीं पड़ता है -

बजर कपाट जड़े जड़ि

जाणे गुर सबदी खोलाइदा॥ अंग - 1033

वे बज्र कपाट सुरति को चढ़ने नहीं देते हैं, गुरू का शब्द हो तथा गुरू की कृपादृष्टि हो, तभी सुरति ऊपर की ओर चढ़ती है। अतः आत्म तीर्थ के अन्दर नित्यप्रतिदिन स्नान करने का हुक्म है -

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै॥
उदमु करे भलके परभाती
इसनानु करे अंम्रितसरि नावै॥ अंग - 305

उसके साथ क्या होगा? उसके द्वारा करोड़ों जन्मों के पाप उतर जाएंगे -

..... सभि किलविख पाप दोख लहि जावै॥अंग - 304

पाप तो उतर ही जाएंगे तथा जो बड़ी-बड़ी हत्याएं इसे लगी हुई हैं, दोष लगे हुए हैं, वे सभी तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार आदि के सारे दोष दूर हो जाएंगे।

फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै
बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै॥ अंग - 305

गुरवाणी का दामन नहीं छोड़ना है, गुरवाणी को सदैव ही गाते रहना है, पढ़ते रहना है, गुरवाणी की विचार करते रहना है। ''बहदिआं उठदिआ हरि नामु धिआवै॥'' यहाँ पर धिआना लिखा है, जपना नहीं। स्मरण कहते हैं - याद को तथा धिआना कहते हैं - ध्यान को अर्थात नाम का ध्यान करना है क्योंकि नाम ही परिपूर्ण शक्ति है।

जिमी जमान के बिखै समसति एक जोत है
ना घाट है न बाढ है न बाढ घाट होत है।
अकाल उसतति
नाम के धारे सगले जंत॥
नाम के धारे खंड ब्रहिमंड॥ अंग - 284

उस नाम की शक्ति ने प्रत्येक चीज को सम्भाल कर रखा हुआ है, उसके ध्यान में यह जब रहता है तो उसे पता लगता है कि यहाँ तो सर्वत्र नाम ही है, वाहिगुरू ही है। श्री गुरू जी कहते हैं वे तो श्वास-श्वास वाहिगुरू या नाम का ध्यान करते हैं और जो इस ध्यान में रहता है -

जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि
सो गुरसिखु गुरू मनि भावै॥ अंग - 306

एक विधि तो यह है कि जब श्वास अन्दर की ओर जाता है तो 'वाहि' कहो जब बाहर की ओर जाता है तो 'गुरू' कहो। यदि यह नहीं कह पाते हो तो अन्दर की ओर जाते हुए सतिनाम कहो तथा बाहर की ओर जाते हुए वाहिगुरू कहो। यह काम जीभ का है, ध्यान का नहीं। ध्यान का काम तो इससे सूक्ष्म हुआ करता है। कोई शब्द लेकर या कोई मन्त्र लेकर उसका जप कर लेना। हम लोग जपुजी साहिब पढ़ते हैं, बोल-बोल कर पढ़ते हैं, पता ही नहीं चल पाता है कि 'सुणिअै' की चार पउड़ियां पढ़ ली हैं, 'असंखु जपे' वाली पढ़ ली हैं या कौन सी पढ़ ली हैं? कौन सी छोड़ दी हैं? बात यह है कि हम लोग बोलते तो रहते हैं लेकिन ध्यान में नहीं रहते हैं। ध्यान, एक अलग चीज है और जप, एक अलग चीज है। गुरू जी कहते हैं कि हम जाप की बात नहीं करते हैं क्योंकि जपना जिह्वा का काम है। गुरू जी कहते हैं मुँह के साथ तुम कहते जाओ, तूँ ही, तूँ ही, तूँ ही लेकिन मन तो छलांगे लगाता घूम रहा है। वाहिगुरू-वाहिगुरू जीभ से कहते जाओ लेकिन मन तो टिकता ही नहीं है। गुरू जी कहते हैं कि क्या तुम्हारा मन टिकता है? कहता है, नहीं जी। ध्यान क्यों नहीं टिकता है? ध्यान इसलिए नहीं टिकता है क्योंकि ध्यान का पता ही नहीं लगा है। जो ध्यान में रहता है वह तो श्वास के अन्दर जाते व बाहर जाते, उसी के ध्यान में रहता है अर्थात वह तो बिना रुके ध्यान में रहता है। गुरू जी कहते हैं कि वह हमें बहुत ही प्यारा लगता है।

अब गुरू यह देखते हैं कि अब यह काबिल हो गया है, अब तो यह व्यापारी बन गया है, इस सौदे को खरीदने के यह काबिल हो गया है। पहले तो गुरू ने दुकान ही नहीं खोली थी बल्कि उसने बन्द रखी हुई थी, क्योंकि उस समय यह उचित खरीददार ही नहीं बना था -

राम पदारथु पाइ कै
कबीरा गांठि न खोल॥
नही पटणु नही पारखू
नही गाहकु नही मोलु॥ अंग - 1365

जब चारों बातें नहीं हैं तो गुरू फिर अपनी दुकान क्यों खोले? गुरू जी कहते हैं कि फिर सौदा क्यों बेचना है? वैसे कोई न कोई कद्रदान तो आ ही जाता है -

कोई आइ मिलैगो गाहकी लेगो महगे मोलि॥
अंग - 1376

कोई ऐसा ग्राहक आ जाएगा जो कि सिर के बदले तन, मन व धन को देकर, वस्तु ले जाएगा। फिर तो एक ही ग्राहक काफी है, हीरे जवाहरात देकर भी यदि जौहरी दुकान पर नहीं आता है उधर यदि ग्राहक आ जाता है, तो जौहरी का नौकर कहता है कि यदि तुम सचमुच ही ग्राहक हो तो फिर जौहरी को घर से बुला देता हूँ। ग्राहक कहता है कि मैंने ये चीजें खरीदनी हैं, नौकर निर्णय कर लेता है ठीक है,

(शेष पृष्ठ 39 पर)

विगत माह, पृथक-पृथक क्षेत्रों में सन्त बाबा लखबीर सिंह जी द्वारा आयोजित गुरमति समागमों के दृश्य

गु. बाबा बुड्ढा साहिब जी उत्तम नगर (उत्तराखण्ड)

राजपुरा
(गोबिंद कालोनी)

गु. साहिब मथना जपती पीलीभीत (यू. पी.)

गु. नानकसर बड्डापुरा (यू. पी.)

गुरुद्वारा गुरु तेग बहादर साहिब डेरा कार सेवा सवार (यू. पी.)

गु. संगतपुरा रामपुरा कलां शाहजहाँपुर (यू. पी.)

नेताजी नगर रुद्रपुर (उत्तराखण्ड)

गाँव गिल्ल (फरीदकोट)

स्थान छाहड़ (संगरूर)

मिशन की शाखा गु. सन्त बेला (श्री आनंदपुर साहिब) में चढ़ती पूर्णमाशी की रात्रि को मासिक कार्यक्रम के दौरान कीर्तन द्वारा कृतार्थ करते हुए

नीचे - क्षेत्रीय श्रद्धालुजन कीर्तन का रसास्वादन करते हुए

गु. ईशर प्रकाश सवालापुर में वार्षिक कार्यक्रम के दौरान सन्त बाबा हरपाल सिंह जी संगत को कीर्तन द्वारा कृतार्थ करते हुए

गु. ईशर प्रकाश सवालापुर में वार्षिक कार्यक्रम के दौरान सन्त बाबा हरपाल सिंह जी संगत को कीर्तन द्वारा कृतार्थ करते हुए

सन्त बाबा वरियाम सिंह जी महाराज तथा सन्त माता रणजीत कौर जी रतवाड़ा साहिब की पावन मधुर स्मृति में

वार्षिक रूहानी समागम, गाँव पैंतपुर (नजदीक रतवाड़ा साहिब)

दिनांक 24-25-26-27-28 जनवरी 2018

समय - प्रतिदिन दोपहर 12.00 बजे से 3.00 बजे

सन्त बाबा हरपाल सिंह जी संगत को कीर्तन द्वारा निहाल करेंगे।

(पृष्ठ 30 का शेष)

यह ग्राहक सही है। वह टैलीफोन कर देता है कि शाह जी! इस प्रकार का कोई व्यापारी आया है, वह हीरा, लाल या पन्ना लेना चाहता है। वह आ जाता है और एक लाल बेचने पर ही हजारों का मुनाफा हो जाता है। दूसरी तरफ एक भूसे का व्यापारी है, वह सारा दिन तौलता ही रहता है। लेकिन उसे अपेक्षाकृत बहुत थोड़ा सा ही लाभ हो पाता है। अतः नाम का व्यापारी तो कोई विरला ही आ पाता है। जिन्दगी भर में कोई एकाध मिल जाए तो मिल जाए। यदि एकाध भी मिल जाए तो यह खुशकिस्मत ही समझो। वह जो window shopping वाली दुनिया है, वह तो असंख्य आती है। यह सैक्टर 17 चण्डीगढ़ में शीशे के शो-केस में चीजें रखी होती हैं कि हमारे यहाँ ये-ये चीजें हैं। लोग खड़े हो-होकर उन्हें देखते रहते हैं कि इनके पास यह भी है, इनके पास वह भी है। इसे window shopping कहते हैं। लेना-देना कुछ भी नहीं है, बस देखते ही रहना है। ठीक इसी प्रकार से windows shopping वाले, महापुरुषों के पास बहुत से आते हैं, और सारी जिन्दगी आते ही रहते हैं जबकि वास्तविक व्यापारी तो कोई विरला ही आता है। अतः गुरू जी कहते हैं कि श्री गुरू जी उसी के ऊपर दयालु होते हैं कि वास्तविक व्यापारी अब आ जाता है तो फिर वह अपने दरवाजे को खोल लेता है -

जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी
तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै॥ *अंग - 306*

फिर सतगुरु उन्हें जीव तथा ब्रह्म की एकता वाला उपदेश, शक्ति सहित सुनाता है जोकि हृदय के अन्दर प्रवेश कर जाए तथा अन्धकार के चक्रों को वेध डाले। फिर उसकी अवस्था कितनी बड़ी हो जाती है -

जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की
जो आपि जपै अवरह नामु जपावै॥ *अंग - 305*

जो स्वयं भी नाम जपता है तथा दूसरों को भी जपाता है तो गुरू जी कहते हैं कि मैं उसके चरणों की धूल मांगता हूँ।

यह विनती मैं तब कर रहा हूँ क्योंकि हमें अमृतसर का पता नहीं है, जब हमें अमृतसर के स्नान का पता चल जाता है तो महाराज जी कहते हैं -

अंतरि तीरथु गिआनु है सतिगुरि दीआ बुझाइ॥
मैलु गई मनु निरमलु होआ अंम्रित सरि तीरथि नाइ॥
अंग - 587

जब तक हमें ज्ञान नहीं होता है उतनी देर तक कोई बात ही नहीं बनती है। ज्ञान का वह अनुभव है, हमारे अन्दर का तीर्थ। उसके अन्दर ही हमने स्नान करना है।

मैलु गई मनु निरमलु होआ
अंम्रित सरि तीरथि नाइ॥ *अंग - 587*

अब सारे जन्म जन्मान्तरों की मैल उतर कर मन निर्मल हो गया है। जब मन निर्मल हो गया तो फिर -

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु॥
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर॥
अंग - 1367

कबीर साहिब कहते हैं कि पहले तो हम कहते थे राम-राम। लेकिन अब परमेश्वर कहता है कबीर-कबीर। वह क्यों कहता है? वह इसलिए कहता है क्योंकि मन निर्मल हो गया है, मैल समाप्त हो गई तथा अहंभाव का अंश समाप्त हो गया है, अब तो पता ही नहीं चलता है कि -

राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी॥
अंग - 969

अब पता ही नहीं है कि राम कौन है और कबीर कौन है? दोनों एक स्वरूप हो गए हैं।

जिउ जल महि जलु आइ खटाना॥
तिउ जोती संगि जोति समाना॥
मिटि गए गवन पाए बिस्रामु॥
नानक प्रभु कै सद कुरबान॥ *अंग - 278*

जैसे पानी में पानी आकर मिल गया है अब तुम ढूँढ़ कर देखो कि वह अमुक दरियाव वाला पानी कहाँ चला गया? अब वह तो ढूँढ़ने पर भी नहीं मिल पाता है, अतः उस तीर्थ पर स्नान करने से एक तो मैल उतर गई है और दूसरा मन निर्मल हो गया है। हुआ किस चीज के साथ है?

..... अम्रित सरि तीरथि नाइ॥ *अंग - 587*

अमृतसर तीर्थ में हने स्नान कर लिया क्योंकि हमें अपने अन्दर से तीर्थ मिल गया है। जिसे तीर्थ मिल गया है, वह जहाँ पर भी पैर रखता है, वहीं पर तीर्थ बन जाता है। वह तो जंगम तीर्थ बन जाता है। वह जहाँ पर भी बैठ जाता है, जिधर भी चलता जाता है, वहीं पर तीर्थ बनता जाता है और छोटा-मोटा तीर्थ नहीं बल्कि अड़सठ तीर्थों से भी बड़ा बन जाते हैं यथा -

अठसठि तीरथ जह साध पग धरहि॥ *अंग - 890*

जहाँ साधू पैर रख दे वहाँ पर अड़सठ तीर्थ बन जाते

हैं, तीर्थ ही नहीं बनते हैं बल्कि -

तह बैकुंठु जह नामु उचरहि॥ अंग - 890

जहाँ पर नाम का उच्चारण होता है, वहीं पर बैकुण्ठ धाम बन जाता है। गुरू जी कहते हैं -

जन की धूरि कीओ मजनु नानक
जनम जनम के हरे कलंगा॥ अंग - 828

इस प्रकार के महापुरुषों के चरणों की धूल लेकर स्नान किया और वचन सुने, मन का स्नान करवाया तो उसका फल क्या हुआ?

उसके फलस्वरूप करोड़ों जन्मों के पाप मिट जाते हैं। गुरू जी कहते हैं कि अब तुम्हें तीर्थ का पता लग गया है और जिसे भी इस तीर्थ का पता लग गया है, वह पवित्र ही नहीं बल्कि पुनीत हो गया यानि कि सौ गुणा अधिक पवित्र हो गया। गुरू जी कहते हैं कि हमने माघ के महीने में स्नान किया। हम पवित्र हो गए क्योंकि हमें आन्तरिक तीर्थ का पता चल गया है -

माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि अंतरि जानिआ॥
साजन सहजि मिले गुण गहि अंकि समानिआ॥
अंग - 1109

अब नहा लिए तो उससे क्या हुआ? शरीर खुशबूदार हो गया, शरीर में से सुगन्ध आने लग पड़ी है, मैल दूर हो गई है तथा जो सज्जन हमारे अन्दर रह रहा था, उसे हम प्यारे लगने लग पड़े। उसने अपने पास खींच कर हमें अपने साथ मिला लिया है। वह पहले क्यों नहीं मिलाता था? गुरू जी कहते हैं कि पहले शरीर गन्दा था और गन्दे शरीर को कोई भी पास में नहीं आने देता है। यदि शरीर से बदबू आ रही है तो कौन सा ऐसा व्यक्ति है जो अपने पास बैठा लेगा? उसे तो अपनी नाक ही बन्द करनी पड़ेगी। वह तो डरने लग पड़ता है कि कहीं इसकी हवा वाला श्वास भी हमें न आ जाए? लेकिन जब वह सुन्दर हो गया, मैल का नामोनिशान भी उसमें न रहा तो उसने फिर, उसे, अपने आलिंगन में ही ले लिया। यथा -

प्रीतम गुण अंके सुणि प्रभ
बंके तुधु भावा सरि नावा॥ अंग - 1109

यदि मैं तुम्हें अच्छा लगा तभी मुझे यह तीर्थ अच्छा लगा और तभी मैंने इसके अन्दर स्नान किया। इसमें अपना अहंकार नहीं है कि मैंने तीर्थ ढूँढ़ लिया है। आप कहते हैं-

गंग जमुन तह बेणी संगम सात समुंद समावा॥
अंग - 1109

वहाँ पर गंगा यमुना सरस्वती का संगम हो गया जैसे कि इलाहाबाद का संगम होता है, वहाँ पर जाकर दुनिया स्नान करती है। गुरू जी कहते हैं कि वह तीर्थ तो तुम्हारे अन्दर ही है।

पुंन दान पूजा परमेसुर जुगि जुगि एको जाता॥
नानक माघि महा रसु हरि जपि अठसठि तीरथ नाता॥
अंग - 1109

हरि का नाम जप कर अड़सठ तीर्थों का स्नान अन्दर ही हो गया न कहीं पैसा खर्च करने की जरूरत है न कहीं दौड़ भाग करने की जरूरत है, अपने अन्दर ही सब कुछ पड़ा हुआ है। हमारे अन्दर ही सारे तीर्थ हैं। हम लोग तो वैसे ही भटकते रहते हैं कि अमुक स्थान पर परमेश्वर रहता है, अमुक स्थान पर गुरू रहता है। ऐसा हम क्यों करते हैं? ऐसा हम इसलिए करते हैं क्योंकि हमें अपने अन्दर का ज्ञान नहीं है। श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी कहते हैं कि ऐ प्रेमीजनो!

ऊहां तउ जाईअै जउ ईहां न होइ॥ अंग - 1185

वह तो तुम्हारे अन्दर ही है, जिसे तुम ढूँढ़ते फिर रहे हो। तुम क्यों भटकते घूम रहे हो? बस इसका कारण यह है कि हमारे पास वह आँख ही नहीं है, जिसके द्वारा वह दिखाई पड़ता है। जब वह आँख खुल जाती है, वह तभी दिखाई पड़ता है। कबीर साहिब कहते हैं, हमें कहते रहे कि ईश्वर मक्का में रहता है, मैंने उनकी बात मान ली। वे हमें कहते थे कि कबीर साहिब! यदि हमने तुम्हें मक्का में परमेश्वर न दिखाया तो तुम जो चाहो कर लेना। मैंने उनकी बात मान ली और मैं काबे की ओर चल पड़ा कि चलो हम भी हज करने चलते हैं और साथ ही खुदा (परमेश्वर) को भी देख आते हैं कि इनका परमेश्वर कैसा है? आप कहने लगे कि जब मैंने घर से बाहर की ओर कदम बढ़ाया तो मैंने देखा कि परमेश्वर तो मेरे घर के बाहर खड़ा है। वह कहने लगा, ऐ कबीर! ये सब तो मूर्ख लोग हैं, लेकिन तुमने इनका कहना कैसे मान लिया?

कबीर हज काबै हउ जाइ था आगै मिलिआ खुदाइ॥
सांई मुझ सिउ लरि परिआ तुझै किनि फुरमाई गाइ॥
अंग - 1375

वह मेरे साथ बहुत नाराज हो गया और नाराज क्या, उसने तो मेरे साथ झगड़ा कर लिया कि किस पागल ने तुम्हें यह बता दिया कि मैं अमुक स्थान पर रहता हूँ?

दखन देसि हरी का बासा
पछिमि अलह मुकामा॥ अंग - 1345

इन्होंने तो मुझे अपने आप ही बाँट लिया कि पश्चिम में 'अल्लाह' रहता है तथा दक्षिण में 'हरि' रहता है और फिर तुमने भी इन पागलों का कहना मान लिया? मैं तो घर में रहता हूँ, बाहर नहीं। गुरू की कृपा से मेरा ज्ञान हो पाता है।

इस प्रकार गुरू ने मुझे यह दिखला दिया है कि परमेश्वर तो मेरे साथ ही रहता है। वह तो कभी भी मुझसे बिछुड़ता नहीं है, मैं और वाहिगुरू ती कभी भी पृथक होते ही नहीं हैं। अतः

नानक माधि महा रसु हरि जपि अठसठि तीरथ नाता॥
अंग - 1109

यानि कि नाम स्मरण के द्वारा मैंने आन्तरिक रूप से ही, आत्मिक रूप से ही, अड़सठ तीर्थों का स्नान कर लिया है। एक जगह पर एक मुल्ला जी ऊँची आवाज में बांग दे रहे थे, कबीर साहिब जी कहने लगे मुल्ला जी! यह क्या कर रहे हो? तुम ऊँचे स्वर में आवाजें लगा रहे हो? 'अल्लाह-हू-अकबर' कर रहे हो? क्या साईं बहरा हो गया है?

दखन देसि हरी का बासा
पछिमि अलह मुकामा॥ *अंग - 1345*

वहाँ पर मुझे बरमिंघम में कई सिक्ख मिले, वे कहने लगे कि हम लोग ऊँची आवाज में शब्द पढ़ा करते हैं। एक दिन हमारे साथ कुछ गोरे भी थे। वे कहने लगे, ऐ सिक्ख बन्धुओ! तुम लोग इतनी ऊँची आवाज में क्यों गाते हो? इतनी ऊँची आवाज में वाहिगुरू, वाहिगुरू क्यों कहते रहते हो? वे बोले कि हमारा जो परमेश्वर है, वह बहरा है, वह तो इतनी जोर से बोलने से भी सुनता नहीं है। उसने व्यंग्य रूप से सही बात कह दी थी। उधर गोरे का पूछने का तात्पर्य था कि ईश्वर तो अन्दर बैठा है लेकिन इन्हें तो पता ही नहीं है। जब अन्दर जाने का पता चल जाए तब कहीं जाकर परमेश्वर के साथ मिलाप हो पाता है। महाराज जी कहते हैं कि जिन्हें आत्म तीर्थ का पता चल जाता है, वही पुनीत हो पाते हैं। जो इस प्रकार के प्रेमीजन हैं, गुरू जी उनके बारे में कहते हैं कि उनकी तो धूल पाने के लिए हम भी लालायित रहते हैं -

जन की धूरि कीओ मजनु नानक
जनम जनम के हरे कलंगा॥ *अंग - 828*

उनकी धूल में स्नान करके करोड़ों जन्मों के पाप दूर हो गए। गुरू जी कहते हैं कि हम तो उनकी चरण-रज मांगते ही हैं, साथ ही देवता लोग भी उनकी धूल मांगते रहते हैं -

धारना - तीरथ वी लोचदे
संतां दी धूड़ी तांई।

वे भी उन महापुरुषों की धूल को पाने के लिए उद्यम करते हैं, जिन्होंने आन्तरिक तीर्थ में स्नान करके अपने करोड़ों पापों को दूर कर लिया है क्योंकि -

किलविख मैलु भरे परे हमरै विचि
हमरी मैलु साधू की धूरि गवाई॥ *अंग - 1263*

जो अड़सठ तीर्थों के मुखी देवता हैं, वे कहते हैं कि पापी लोगों ने नहा-नहा कर हमारे अन्दर मैल छोड़ दी है, जिसके कारण हम काले हो गए हैं, इसलिए यदि साधू की धूल मिल जाए (जो कि आत्मिक तीर्थ में स्नान करने वाला है) तो हम भी पवित्र हो जाएं।

तीरथि अठसठि मजनु नाई॥
सतसंगति की धूरि परी उडि नेत्री
सभ दुरमति मैलु गवाई॥ *अंग - 1263*

इस धूल में इतनी बरकत है कि उसके प्रभाव से सारी कुबुद्धि दूर हो जाती है।

एक बार एक सौदागर था, वह लाहौर का रहना वाला था, लेकिन अपने कारोबार के सिलसिले में विदेश गया हुआ था और घर पर उसकी घरवाली ही थी। वहीं पर पास में एक उच्च कोटि के महात्मा रहते थे, जो कि बीतराग महात्मा थे। एक दिन क्या हुआ कि उस सौदागर की पत्नी अपनी कोठी की तीसरी मंजिल पर खड़ी होकर अपने केश सुखा रही थी। उधर जो लाहौर का नवाब था, वह भी उस क्षेत्र में गश्त कर रहा था। उस नवाब की दृष्टि उस महिला पर जैसे ही पड़ी तो उसके सुन्दर व सुड़ौल शरीर को देखकर उसकी मंद वासना जागृत हो उठी। वह अपने महल में आकर अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को कहने लगा कि देखो! वह जो मकान है, उसके ऊपर वह जो औरत खड़ी है, उसे मेरे पास ले आओ। वह वजीर और काजी काफी सयाने थे। वह इन्साफ किया करता था। काजी कहने लगा, हुजूर! यदि इस प्रकार से मंगवाया तो फिर बहुत अधिक बदनामी होगी। कहने लगे, फिर कैसे होगा? वह औरत तो हमारे पास आनी ही चाहिए। उसने कहा कि नवाब साहिब! मेरे पास मन्त्र बल है, मैं मन्त्र बल के द्वारा उसे मंगा दूँगा। लेकिन पहले सिपाही को भेज दो क्योंकि यदि वैसे ही आ जाए तो अधिक ठीक है। सिपाहियों को भेज दिया गया, उन्होंने उस महिला के पास जाकर नवाब साहिब के सन्देश को सुना दिया कि तुम्हें नवाब साहिब बुला रहे हैं। वह कहने लगी, देखो! मैं एक पतिव्रता स्त्री हूँ, परपुरुष के बारे में सोचना तो मेरे लिए नामुमकिन बात है, इसलिए मैं तो नहीं आ सकती हूँ, चाहे मेरे टुकड़े-

टुकड़े क्यों न कर दिए जाएं। सिपाहियों ने कहा, श्रीमती जी! वह तुम्हारे बाल-बच्चों को मार डालेगा। तुम्हारे पति को कैद में डाल देगा। वह कहने लगी, चाहे जो कुछ भी हो जाए, मैंने तो अपना पतिव्रता धर्म ही निभाना है। काजी कहने लगा, आप लोग इस प्रकार मत करो, बल्कि मैं मन्त्र बल से उसे मंगा देता हूँ। उसने एक मन्त्र पढ़ा तथा चारपाई के एक पाए के नीचे दबा दिया। उधर उसके मन में भी ख्याल आने लग गया कि यदि उसने पति व बच्चों को मरवा दिया फिर तो बहुत बुरी बात हो जाएगी। सोच सोच कर कहने लगी कि मुझे तो जाना ही चाहिए। वह अपने कपड़े बदलने लग पड़ी। उधर उसने दूसरा मन्त्र चारपाई के दूसरे पाए के नीचे दबा दिया। उस समय यह जाने के लिए बिल्कुल तैयार हो गई तथा श्रृंगार आदि करने लग पड़ी। जब तीसरे पाए के नीचे मन्त्र दबाया तो वह तैयार हो कर बाहर निकलने लग पड़ी। जब चौथा मन्त्र पढ़ा तो मन्त्र की तरफ को खिंची चली जा रही है। रास्ते में वह महात्मा बैठे थे। इसके मन में ख्याल आया कि चलो मैं महापुरुषोंं के चरणों में नमस्कार कर आऊँ। जब वह नमस्कार करने लगी तो महात्मा ने झट से उसके मस्तिष्क को पढ़ लिया कि इसके मन में तो विकार भावना है। आप कहने लगे, बेटा! तुम्हारे पतिदेव तो बाहर गए हुए हैं तो फिर यह श्रृंगार किसके लिए? इसने सारी बात बता दी तथा कहने लगी, महाराज! मुझे तो कुछ भी पता नहीं है कि मुझे क्या हो गया है? मुझे यह भी पता नहीं है कि मैं भला कर रही हूँ या बुरा कर रही हूँ? मुझे तो कोई चीज उस दिशा में खींचती हुई ले जा रही है। इस समय महापुरुषों ने अपने चरणों के नीचे से धूल निकाली और उसके माथे पर क्रास का निशान लगा दिया तथा बोले जाओ! वापिस घर जाओ, तुम्हें कुछ भी नहीं होगा। उसी समय उसे होश आ गई। नवाब ने काजी को पूछा कि इतनी देर हो गई है लेकिन वह आई नहीं? काजी बोला, नवाब साहिब! मेरी विद्या यह बताती है कि वह घर से चल पड़ी थी और सब कुछ हो गया था, लेकिन रास्ते में एक बहुत बड़ी शक्ति मिल गई, जिसने कि उसके माथे के लेखों को काट कर उसे वापिस कर दिया है, इसलिए अब मेरी कोई शक्ति काम नहीं कर रही है। अब तो अच्छा यही है कि तुम अपने मन से ही मन्द वासना को निकाल डालो। उधर महात्मा ने कहा कि बेटा! तुम्हारे माथे में यह मन्द कार्य करना लिखा हुआ था, लेकिन चरण रज ने उस बुरे कार्य को काट डाला।

अब हम भी यहाँ पर ऐसा ही करते हैं कि ऐ बन्धु! यदि तुम बीमार हो तो फिर यहाँ गुरू घर में झाड़ू दो, यहाँ पर असंख्य संगत घूम रही है, न जाने इनमें कौन सा पूर्ण पुरुष है? कोई न कोई तो पूर्ण होगा ही। क्या पता किस पुरुष को वाहिगुरू ने पूर्णता प्राप्त कर रखी है? इसलिए तुम यहाँ की चरण धूल एकत्र कर लो, जहाँ पर तुम्हारे शरीर में दर्द हो रहा है, वहाँ पर लगा लो, मस्तिष्क को लगा लो, ठीक हो जाओगे। यदि शरीर खराब है तो फिर जहाँ पर सिंह स्नान करते हैं, वहाँ का गारा लगा लो। वह जो चरण रज है, वह उसी समय फल देना शुरू कर देती है। सैकड़ों की तादाद में श्रद्धालुजन यहाँ से स्वस्थ होकर जाते हैं।

एक बार हमारे पास एक बड़ा अधिकारी आया उसने अपना मुँह खोल कर दिखलाया, वह कहने लगा, बाबा जी! मैं तो बड़े संकट में फँसा हुआ हूँ, मेरा मुँह अन्दर से बिल्कुल काला हो चुका है, मेरा कोई इलाज नहीं हो पा रहा है। वह डिप्टी एअर मार्शल था। एअर मार्शल जहाजों का सबसे बड़ा अधिकारी होता है। वह कहने लगा, मैं बहुत दुखी हूँ। मैंने कहा, ठीक है, चरण-धूल का तो बहुत अधिक महात्म्य हुआ करता है। इस प्रकार से पढ़ लो -

धारना - देई मालका मैनूं धूड़ी साधूआं दी।

संतन की महिमा कवन वखानउ॥
अगाधि बोधि किछु मिति नही जानउ॥
पारब्रहम मोहि किरपा कीजै॥
धूरि संतन की नानक दीजै॥ *अंग - 181*

अर्थात हे प्रभु जी! आप कृपा करो, मुझे अपने प्यारों की चरण रज प्रदान करो। मैंने कहा, देखो! श्री गुरू जी ने अपने वचनों में जो फुरमान किया है, वह कितना महान रूप में किया है। दूसरी बात यह भी नहीं है कि मैं अंगुली कर दूँ कि वह साधू है और यह भी नहीं है कि साधू की गैर मौजूदगी ही है। संगत के अन्दर ही साधू विद्यमान हैं। यह भी पता नहीं है कि गुरू जी को कौन स्वीकार्य है और कौन स्वीकार्य नहीं है? वे कहने लगे कि फिर किया क्या जाए? मैंने कहा, गुरुद्वारा साहिब में जब संगत मत्था टेकने के लिए जाती है तो उनके आगे एक चुबच्चा सा बना हुआ होता है लोग उसके अन्दर से चरण धोकर ही जाते हैं। उनके चरणों को चरण धूल लगी हुई होती है, वह उसी में रह जाती है, इसलिए तुम उस पानी से कुल्ले कर लो। वह बोला, ठीक है जी। उसके नजदीक ही अंब साहिब गुरुद्वारा था। दोनों लोग वहाँ से चले गए, पहले तो वह अपने साथ बोतल ले गया कि मैं यहाँ से पानी भर लूँगा, तो वह अपने साथ बोतल ले गया कि मैं यहाँ से पानी भर लूँगा परन्तु जब भरने लगे तो उसने सोचा

कि चलो कुल्ले क्या करने हैं, हम लोग इसे पी ही लेते हैं। इस प्रकार तथाकथित गन्दा पानी उन्होंने पी लिया। यदि डाक्टर से पूछो तो वह कहेगा इसके अन्दर तो बहुत सी एलर्जी है क्योंकि लोगों द्वारा पैर धोए हुए पानी को पिला दिया। बीस दिन के बाद वह मुझे मिला तो मैंने कहा कि तुम शबद का पाठ करते रहना। वह कहने लगा, जी मैं तो 75 प्रतिशत ठीक हो गया हूँ और मैंने तो उस पानी को ही पी लिया था। उसके बाद वह डेढ़-दो महीने बाद मिला। मैंने कहा तुम्हारा क्या हाल है? वह बोला, जी मैं तो बिल्कुल ठीक हो गया हूँ। अब डाक्टरों ने स्पष्ट कर दिया कि अब तो तुम्हारी बीमारी बिल्कुल ही ठीक हो गई है। पूछ रहे थे कि तुमने कौन सी दवाई ली है? अतः यह सब गुरू पर विश्वास की बातें हैं। क्या तुमने कभी सुना था कि कैंसर भी इस प्रकार से समाप्त हो सकती है? लेकिन ये सब श्रद्धा व विश्वास की बातें हैं, मन के अन्दर जितनी श्रद्धा है, उतना ही लाभ हुआ करता है। गुरू कहीं पर गया हुआ थोड़े ही न है। हम लोग ही अन्धे हो गए हैं, हमें ही गुरू दिखाई नहीं पड़ता है। हमें पास में ही रहता हुआ गुरू दिखाई नहीं पड़ता है। हम लोग तो सन्तजनों की निन्दा करने में ही रुचि लेते हैं। यह तो ठीक है कि सन्त भी ऐसे ही हो गए हैं, वे भी पैसों से आगे की बात नहीं सोचते हैं और दूसरी तरफ दुनिया भी ऐसी ही हो गई है -

नानक दुनीआ कैसी होई॥
सालकु मितु न रहिओ कोई॥ *अंग - 1410*

इस प्रकार से संसार भी ऐसा ही हो गया और साधू भी वैसे ही हो गए हैं। असली साधू तो साधू ही होता है, उसे तो कोई व्यक्ति दोष ही नहीं दे सकता है क्योंकि उसके अन्दर कोई भी दोष नहीं हुआ करता है, वह तो परमेश्वर ही होता है। लेकिन आजकल के हालात में भेषों के बीच से असली साधू को ढूँढ़ पाना बहुत ही मुश्किल बात है। यदि मनुष्य के भाग्य ही बहुत उत्तम हों तभी पूर्ण साधू मिल पाता है -

पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी॥
मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी॥ *अंग - 204*

यदि किसी मनुष्य के कर्म ही जाग पड़ें तो किसी महापुरुष का मिलाप हो जाए, तो हो जाए, अन्यथा यह तो बहुत ही मुश्किल बात है।

इस प्रकार गुरू जी फुरमान करते हैं कि ऐ प्रेमीजनो! जिसने अपने अन्दर के तीर्थ को जान लिया है, वह जहाँ पर चरण भी रख देता है, तो उस धूल के अन्दर करोड़ों गंगा के बराबर फल हो जाता है। फिर हमने तो इसे आजमा कर देख लिया है। अब कितनी देर इस स्थान को बनते हुए हो गई है। लोग सेवा करते हैं और चरण धूल को ले जाते हैं। कौन आता है, कौन नहीं आता है, इस बात का हमारे पास कोई हिसाब किताब नहीं है। शुरू-शुरू में तो हमने इसका हिसाब किताब रखना शुरू किया लेकिन फिर हट गए क्योंकि हमने सोचा कि इसमें कौन सा हमारा कोई एकाधिकार है? संगत श्रद्धापूर्वक आती है, उसके कार्य होते हैं, इसे गुरू जाने गुरू का कार्य जाने। इस प्रकार से हम लोग माघ महीने की संक्रान्ति को मना रहे हैं। गुरू जी कहते हैं -

माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि अंतरि जानिआ॥
अंग - 1109

जिन्होंने जान लिया है हम लोग उनके महत्व को जानने की कोशिश कर रहे हैं, इस प्रकार गुरू जी कथन करते हैं कि तुम इस प्रकार के साधुओं को मिलो और मिलकर साधुओं की धूल में स्नान करो। इस प्रकार से पढ़ लो -

धारना - माघि मजन संगि साधूआं,
धूड़ी कर इशनान।

गुरू जी कहते हैं कि ऐ प्रेमीजनो! तुम सन्तजनों के वचनों रूपी धूल में स्नान करो, जहाँ पर वे चरण रखते हैं, वह भी पवित्र हैं तथा जो वचन मुख से आते हैं, वह मुख की धूल भी पवित्र है। तुम उसके वचनों रूपी धूल के अन्दर मन का स्नान करवाओ। उसका फल क्या होगा? जो करोड़ों जन्मों की मैल इसे लगी हुई है, वह दूर हो जाएगी -

जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी
काला होआ सिआहु॥ *अंग - 651*

यह मन इतना काला हुआ पड़ा है कि इसे देखने का भी मन नहीं करता है। गुरू जी कहते हैं कि इतना काला मन तो ईश्वर को अच्छा नहीं लगता है क्योंकि यह बहुत मैला हो गया है -

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रंगाए॥
मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए॥
अंग - 721

'चलता'

इंग्लैंड संगत टी.वी. पर साक्षात्कार

सन्त बाबा हरपाल सिंह जी

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक दिसम्बर, पृष्ठ - 51)

टी.वी. वक्ता - बाबा वरियाम सिंह जी अपने आप में बहुत बड़ी हस्ती थे, उन्होंने गुरमति रूहानी ट्रस्ट कायम किया जिसके वर्तमान समय में चेयरमैन सन्त बाबा लखबीर सिंह जी हैं और इस ट्रस्ट के जो वाइस चेयरमैन बाबा हरपाल सिंह जी हैं, वे इस समय हमारे साथ में बैठे हुए हैं। इस ट्रस्ट के द्वारा जन कल्याण के अनेकों कार्य किए जाते हैं। इनके द्वारा स्कूल, अस्पताल व नाम स्मरण की बात भी की जाती है। यहाँ पर सेवा और सिमरन दोनों इकट्ठे ही चलाए जाते हैं।

बाबा जी! जिस प्रकार से पिछले समय में गुरुओं के शताब्दी समारोह मनाए गए थे, श्री गुरू गोबिंद सिंह महाराज का बहुत बड़ा शताब्दी समारोह मनाया गया था, आपने वहाँ पर शब्द लंगर की बात की थी, नेपाल में दुखी लाचारों व जरूरतमन्दों की बात की थी, अब 2019 में श्री गुरू नानक देव जी का साढ़े पाँच सौ वर्ष का समारोह आ रहा है, क्या आपके ट्रस्ट के द्वारा इसके लिए कोई विशेष तैयारी चल रही है?

जो विचार करने वाली बात है वह यह है कि जो श्री गुरू नानक देव महाराज जी का मिशन है, वह विश्व व्यापी मिशन है। दरअस्ल वे केवल सिक्खों के गुरू नहीं हैं बल्कि वे तो पूरे संसार के गुरू हैं। इसीलिए गुरवाणी का कथन है 'सभ तो वडा सतिगुर नानक'। यदि हम गहराई से विचार करें तो प्रत्येक का कोई न कोई गुरू जरूर हुआ है। गुरू नानक महाराज जी को पूछा गया कि आपका गुरू? आपने कहा, मेरा जो गुरू है वह पारब्रह्म परमेश्वर है। आपने मूलमन्त्र के माध्यम से भी इस पर मोहर लगाई है। इसीलिए उन्हें गुरू परमेश्वर कहा जाता है। श्री गुरू नानक देव जी ने कहा कि हमें तो संसार पर कोई ऐसा गुरू मिला ही नहीं -

बीजउ सूझै को नही बहै दुलीचा पाइ ॥ अंग - 936

जो कि हमारे सामने टिक सके यानि कि उनका तप-तेज इतना अधिक हो। गुरुमन्त्र के बिना नाम तक की पहुँच नहीं हो पाती है। आप फिर गुरमन्त्र लेने के लिए दरगाह में पहुँचे और आप वहाँ से 'वाहिगुरू' गुरमन्त्र लेकर आए 'वाहिगुरू गुरमन्त्र है जपु हउमै खोई।।' कल्युग में शारीरिक आयु बहुत कम होती है, इसलिए व्यक्ति के पास समय कम है, इसीलिए यह मन्त्र भी छोटा है। अभ्यास के द्वारा यह श्वास पर आ जाता है, श्वास अन्दर को जाता है तो 'वाहि' कहो बाहर की तरफ आता है तो 'गुरू' कहो। इसके बाद आपने गुरमन्त्र के स्वरूप को मूलमन्त्र के माध्यम से कथन किया। संसार के अन्दर नाम तो कोई भी नहीं दे सकता है। यह बहुत ही गलतफहमी हो जाती है कि लोग प्रायः कहते हैं कि हमने अमुक जगह से या अमुक धार्मिक हस्ती से नाम प्राप्त किया है। गुरू घर में पाँच प्यारे गुरुमन्त्र देते हैं और गुरमन्त्र की कमाई करके उस नाम तक पहुँचा जाता है। नाम तो हमारे अन्दर ही है -

नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु ॥
देही महि इस का बिस्रामु ॥ अंग - 293

इस प्रकार से जो सतगुरू सच्चे पातशाह जी ने नाम वाणी का प्रवाह चलाया है, उसे आगे किस प्रकार से बढ़ाना है, इस बात पर हमारा सम्प्रदाय राड़ा साहिब और रतवाड़ा साहिब पहरा दे रहे हैं। कितने ही जत्थे देशों-परदेशों में इस बात का प्रचार कर रहे हैं। फिर बड़ी बात यह है कि हमारे सम्प्रदाय का यह उसूल है कि गुरवाणी का कीर्तन-प्रचार करते रहना है, जहाँ भी गुरुद्वारा साहिब में कीर्तन करना है तो सिरोपाओ तो चलो दिया ही जाता है लेकिन उस पर कभी माया नहीं लेनी है। कीर्तन-शबद की भेंट नहीं रखाई जाती है। फिर इस सम्प्रदाय की तरफ से कभी अपील नहीं की जाती है और न ही कभी 'उगराही' की जाती है। जब आप नाम स्मरण करते हो तो रिद्धियाँ-सिद्धियाँ स्वतः ही आ जाया करती हैं।

जब आपके यहाँ श्रीमान सन्त बाबा ईशर सिंह जी महाराज आए यह सन् 1974-75 की बात है तो लन्दन के साउथ हाल गुरुद्वारा साहिब से उन्हें दस हजार पौंड का चेक काट कर दिया गया कि यह माया लंगर में लगा देना।

महापुरुष कहने लगे कि इस प्रकार से एक जगह से पैसा निकाल कर दूसरी जगह डाल देना ठीक नहीं होता है। यहाँ पर भी तो गुरू घर है। दरअस्ल हम लोग सारे संसार को ही अपना घर मानते हैं और विश्वमयी दृष्टि होने के कारण महापुरुषों ने सोचा कि नाम-वाणी के प्रचार का कोई साधन सोचा जाए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमारे ट्रस्ट ने यह निर्णय लिया है कि जितना भी साहित्य है उसे अर्द्धशुल्क पर प्रदान किया जाएगा, मैगजीन नि:शुल्क वितरित किया जाता है। बाकी जो लंगर है वह तो चलता ही रहता है और उसने चलता ही रहना है।

प्रश्न - बाबा वरियाम सिंह जी बहुत बड़े विद्वान थे, वे मैगजीन भी निकालते थे, उनके द्वारा की गई कथाएँ भी प्राप्त होती हैं, उन्होंने कुछ किताबें भी लिखी थीं, जिनमें से कुछेक को पढ़ने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ है। लगभग कितनी किताबें उन्होंने लिखी होंगी?

प्रश्नोत्तर - उनकी पंजाबी की पुस्तकों से हिन्दी और ईंग्लिश में अनुवाद होकर लगभग 150 पुस्तकें लाइब्रेरी में हैं जो कि प्रत्येक बार प्रकाशित की जाती हैं जो 'सुरति शबद मारग' नामक पुस्तक है, जिसमें कि धन्य गुरू गोबिंद सिंह महाराज जी माता जीतो जी को उपदेश देते हैं कि सुरति को शब्द के साथ कैसे जोड़ना है, महापुरुषों के सात दीवानों का संग्रह है। इसमें 'सूरज प्रकाश' ग्रन्थ से भी कथांश लिए गए हैं। इस पुस्तक को हमने छठी बार प्रकाशित करवाया है। प्रत्येक बार हम दस हजार पुस्तकें प्रकाशित करवाते हैं। इन पुस्तकों की माँग प्रत्येक वर्ष बढ़ती ही जाती है। यह वह साहित्य है जो कि महापुरुषों के अनुभव में से प्रकट हुआ है। आप सुरति को जोड़कर ही सत्संग किया करते थे और आप किसी भी विषय पर बहुत ही सुन्दर ढंग से बोलते थे। मीडिए का युग होने के कारण सारा कुछ रिकार्ड हो गया है। आपकी विश्वमयी दृष्टि थी। आपकी भाषा, लोक भाषा होने के कारण वह प्रत्येक हृदय में बस जाती थी। इस प्रकार से सारी पुस्तकें अस्तित्व में आ गईं।

प्रश्न - बाबा जी की जितनी भी पुस्तकें हैं क्या वे अब सारी उपलब्ध हैं?

उत्तर - हाँ जी! हमारे पास लगभग सभी पुस्तकें मौजूद हैं। यदि किसी पुस्तक की सभी प्रतियाँ बिक जाती हैं तो वह दोबारा छपवा ली जाती हैं। दूसरी बात यह है कि पुस्तकों के जो मूल्य 20-25 वर्ष पहले तय किए गए थे, अब भी मूल्य वही चले आ रहे हैं और वे केवल लागत मात्र हैं। उन निर्धारित तथा प्रिंट मूल्यों का भी अर्द्धशुल्क ही लिया जाता है। यह तो एक प्यार भेंट स्वरूप है क्योंकि इसमें तो केवल नाम की ही बात की गई है -

इह बाणी जो जीअहु जाणै
तिसु अंतरि रवै हरि नामा ॥ ***अंग - 797***

गुरवाणी 'नाम' के साथ जोड़ती है। चाहे स्वयं को कोई व्यक्ति कितना भी बड़ा क्यों न समझे लेकिन नाम के साथ जुड़ने के लिए तो गुरवाणी का माध्यम ही परमावश्यक है। ऐसी बात नहीं है कि कोई यह बात कहने लग जाए कि मैं स्वंय ही यह कार्य कर सकता हूँ। चाहे सत्युग का समय ही था, लेकिन उस समय भी गुरवाणी का ही महत्व था। यथा - 'राती जाइ सुणै गुरवाणी।।' इस प्रकार गुरवाणी तो सदा से ही चली आ रही है। गुरवाणी हमें नाम के साथ जोड़ती है। यह बात अलग है कि हम लोग इस अमूल्य गुरवाणी के बारे में संसार को बतला नहीं सके। यह तो सारे संसार की साझी गुरवाणी है।

बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥
आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥ ***अंग - 294***

यह तो सबके लिए उपदेश है -

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा॥
अंग - 748

इसीलिए इसके प्रचार व प्रसार के लिए हमारे ट्रस्ट की तरफ से विशेष उपाय किए जाते हैं।

प्रश्न - बाबा जी ने यह बात कही थी कि गुरु, मन्त्र देता है या यूँ कह लो कि गुरु, गुरुमन्त्र देता है लेकिन वह 'नाम' नहीं देता है और कोई भी गुरु किसी को नाम दे भी नहीं सकता है। आजकल जो गुरमति विरोधी डेरे हैं, अथवा पाखण्डी गुरु हैं, जिन्हें कि हम लोग आजकल देख ही रहे हैं, जब 'नाम दान' देने की बात करते हैं या नाम दान देकर जोड़ने की बात करते हैं तो यह समझ लो कि वे 'नाम' के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं और फिर वे पाखण्ड कर रहे हैं। अत: सन्त बाबा वरियाम सिंह जी, उनसे पहले सन्त बाबा ईशर सिंह जी - राड़ा साहिब, उनसे पहले बाबा बीर सिंह नौरंगाबाद वाले, सन्त बाबा अतर सिंह जे रेरू साहिब वाले, सन्त बाबा करम सिंह जी होती मरदान वाले और उनसे भी पहले यह सम्प्रदाय चला आ रहा है। धन्य-धन्य साहिब श्री गुरू गोबिंद सिंह जी महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त पाँचों प्यारों के मुखी भाई दया सिंह जी से। उसी समय से इस

सम्प्रदाय ने अपने मूल्यों को सम्भाल कर रखा हुआ है और उनके सिद्धान्तों के अन्तगर्त यह मुख्य बात थी कि गुरू नाम नहीं बल्कि गुरमन्त्र देता है। श्री गुरू नानक देव जी जो मूलमन्त्र दरगाह से लेकर आए थे, बस उसी का प्रचार व प्रसार किया जाता है, और उसी के साथ जुड़ने की आवश्यकता है। यदि कोई श्रद्धावान व्यक्ति अध्यात्मिक उन्नति करना चाहता है, अपने आत्मिक स्तर को ऊँचा उठाना चाहता है तो इस बात की आवश्यकता है कि वह पाखण्डियों का साथ छोड़कर गुरू घर के साथ जुड़ जाए। जो सच्चे-सुच्चे गुरसिक्ख हैं, वे भी जन साधारण को गुरू घर के साथ जोड़ रहे हैं तथा धन्य श्री गुरू गोबिंद सिंह जी की बात कर रहे हैं।

बाबा जी! जब आप सुरति शबद मार्ग की बात कर रहे थे, तो उस समय मेरे मन में ख्याल आया कि आज के समय में अधिकतर लोग, जो कि पाखण्डी हैं, उन्हें मन का टिकाव कैसे आ सकता है? कहने का तात्पर्य यह है कि मन के टिकाव के लिए सर्वाधिक सरल विधि कौन सी है?

उत्तर - हमारा यह जो सम्प्रदाय है यह नाम-अभ्यासियों का सम्प्रदाय है इसमें सबसे बड़ी बात यह है कि -

आपस कउ जो जाणै नीचा ॥
सोउ गनीऐ सभ ते उचा ॥ ***अंग - 266***

स्वयं को जो नीचा कहलवाता है, जो छोटा बनकर रहता है या जो स्वयं को नगण्य समझता है, उसे ही कहा जा सकता है कि यह नाम के साथ जुड़ गया है क्योंकि गुरू घर की तो शर्त ही यह है कि -

पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥
अंग - 1102

इसलिए आपने जो बात कही है उसके सन्दर्भ में बात यह है कि यदि आप अपनी लकीर को बड़े स्वरूप में खींच लो तो दूसरी स्वतः ही छोटी हो जाती है। वे लोग भी गुरवाणी का ही सहारा लेकर चलते हैं और कथा भी गुरवाणी की ही करते हैं लेकिन जब नाम के दाते बनने की बात आती है तो वे स्वंय आगे आ जाते हैं। वहाँ पर उनकी अविद्या आगे जाती है। इसीलिए महापुरुषों ने सभी भ्रमों को दूर किया है कि नाम कहीं बाहर से नहीं मिलता है। हाँ नाम तक पहुँचने के लिए गुरुमन्त्र अवश्य लिया जाता है। हमारे गुरू घर में पाँच प्यारे इस मन्त्र को दृढ़ करवाते हैं। जब श्री दशमेश जी ने हम सबको श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के साथ जोड़ा तो उन्होंने कहा कि ये पाँच प्यारे ही गुरुमन्त्र देने की प्रक्रिया किया करेंगे। 'वाहिगुरू मन्त्र' जब श्वास पर आ जाता है, तो यह मन को रोकता है क्योंकि 'इहु मनु उडन पंखेरू बन का।।' मन का स्वभाव है कि यह वायु की सवारी करता है। श्वास को नियन्त्रित कर लो यानि कि इसकी सवारी को ही नियन्त्रित कर लो तो फिर मन स्वतः ही नियन्त्रण में आ जाएगा। जब आप श्वास पर ध्यान दोगे तो आप गहरे श्वास लो और अन्दर की तरफ हम ऑक्सीजन खींचते हैं तथा बाहर की तरफ कार्बनडाइआक्साइड छोड़ते हैं। इस प्रक्रिया पर ही मन्त्र को सवार कर लो यानि कि इसे खाली न जाने दो। अन्दर सुनना है -

वाहि.....गुरु।

आप जितना गहरा श्वास लोगे मन उतना ही टिकाव में आएगा। इसके साथ ही जब आप श्वास छोड़ो तो गुरू कहो और जब श्वास अन्दर लेना है तो वाहि कहो, जब हम इसे खाली पेट करते हैं तो फिर तुम्हारी सारी बीमारियाँ बाहर आ जाती हैं।

परमेसरि दिता बंना ॥
दुख रोग का डेरा भंना ॥ ***अंग - 627***

जब कार्बनडाइऑक्साइड बाहर निकलेगी तो उसकी आपूर्ति करने के लिए प्राण वायु ऑक्सीजन अन्दर जाएगी और वह भी मन्त्र बल के साथ क्योंकि -

सरब रोग का अउखदु नामु ॥ ***अंग - 274***

वास्तव में तो यह दवाई सबके अन्दर ही पड़ी हुई है। यथा-

हरि अउखधु सभ घट है भाई ॥
गुर पूरे बिनु बिधि न बनाई ॥ ***अंग - 259***

इसके लिए युक्ति की जरूरत पड़ती है फिर गुरू नानक के घर की यह विशेषता है कि जब हम संगत में बैठ कर, एकाग्र होकर गुरवाणी को श्रवण करते हैं, नाम वाणी के साथ जुड़ते हैं तो फिर हमें युक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं, युक्ति के द्वारा फिर मुक्ति भी मिल ही जाती है -

आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥ ***अंग - 295***

प्रश्न - बाबा जी! जब आप गुरु मन्त्र के जप की बात कर रहे थे तो मुझे एकदम याद आ रहा था कि जब भी हम किसी के पास जाकर अच्छे स्वास्थ्य का राज पूछते हैं तो वे हमें गहरे श्वास लेने की सलाह देते हैं। योगाभ्यास में भी

गहरे श्वास लेने की बात कही जाती है जबकि हम लोग आमतौर पर उथले श्वास ही लेते रहते हैं यानि कि हमारा श्वास तो गहराई में जाता ही नहीं है लेकिन हमारा तो गुरुमन्त्र का जप ही इस तरीके का है कि उसके अभ्यास के लिए भी हमें गहरे श्वास लेने पड़ते हैं, यानि कि वाहिगुरू मन्त्र के जप के द्वारा तुम्हारा शरीर भी निरोग रहता है और मन भी टिकाव में आ जाता है। अतः बाबा जी द्वारा बतलाए गए तरीके को आजमा कर जरूर देखना चाहिए। घर में जाकर इसका अभ्यास करके अवश्य देखना। श्वासों को बिल्कुल सहज में चलने देना। जब आपने श्वासों पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया तो फिर आपका मन भी टिकाव में आ जाएगा। बाबा जी! हम जब भी श्वासों की बात करते हैं तो ये संसार में रहने के लिए पुल की भांति हैं। श्वास नहीं तो जीवन भी नहीं है। अतः हमारा सारा जीवन श्वासों पर ही खड़ा हुआ है। यथा -

दमि दमि सदा समालदा दंमु न बिरथा जाइ ॥

अंग - 556

इसीलिए यह बात की गई है। आप बाबा वरियाम सिंह जी के साथ सन् 1986 से लेकर 2001 तक लगभग 15 वर्षों तक रहे। इन पन्द्रह वर्षों में कोई ऐसी यादगारी घटना जिसमें कि बाबा जी के जीवन ने आपके हृदय को छू लिया हो और जिसे सुनकर हमारे दर्शन व श्रोतागण भी हार्दिक रूप प्रभावित हुए बिना न रह पाएँ?

उत्तर - महापुरुषों की जो सोच होती है वह गुरवाणी पर आधारित हुआ करती है और उनका जीवन गुरवाणी के अनुसार ही बना होता है। यही कारण है कि उन्हें सभी लोग प्यार करते हैं -

फरीदा जे तूं मेरा होइ रहहि सभु जगु तेरा होइ ॥

अंग - 1382

दो बड़े उदाहरण अपने सिक्ख धर्म में मिलते हैं - पहला था सन्त अतर सिंह जी मस्तूआणे वालों का, उन्होंने वाराणसी में संस्कृत कालेज का शिलान्यास किया जो कि आज हिन्दू विश्वविद्यालय के नाम से विख्यात है -

(टी.वी. वक्ता) - बाबा जी! आप जी ने जो बात अभी की है मैं भी उसे अपने दर्शकों के साथ शेयर कर लूँ क्योंकि वह बहुत बड़ी बात थी। मदन मोहन मालवीय जो कि हिन्दू सभा के प्रधान थे, ने भारतवर्ष के प्रथम विश्वविद्यालय का शिलान्यास सन्त बाबा अतर सिंह जी से करवाया। वहीं पर मदन मोहन मालवीय ने घोषणा की कि ऐ मेरे देशवासियो! यदि आप लोग अपने देश को अंग्रेजों से मुक्त करवाना चाहते हो तो प्रत्येक घर में से एक बच्चे को गुरसिक्ख बनाया जाए। यही कारण है कि उस समय जब बाबा अतर सिंह जी अमृत संचार किया करते थे तो बहुत सारे हिन्दू घरों में से भी गुरसिक्ख बना करते थे। उस समय पहले जो सिक्खों की गिनती लगभग 18 लाख तक थी, वही सन्त बाबा अतर सिंह जी के समय में 40 लाख से भी ऊपर पहुँच गई थी।

बाबा जी - दूसरा उदाहरण यह मिलता है कि सन् 1993 ई. में जॉली ग्रान्ट देहरादून में मैडिकल कालेज का शिलान्यास सन्त बाबा वरियाम सिंह जी रतवाड़ा साहिब वालों ने किया यह मैडिकल कालेज भी अब मैडिकल विश्वविद्यालय बन चुका है। यह मैडिकल कालेज विश्व विख्यात डा. स्वामी राम जी के अस्पताल में स्थित है। डा. स्वामी राम जी बहुत बड़े योगी थे, उनका आश्रम पैनसनवालिया (अमेरिका) में भी था। सन् 1995 में वे अपने शरीर का त्याग कर गए। बाबा जी ने वहाँ पर भी यह बात की थी कि 'सरब रोग का अउखदु नामु।।' यानि कि गुरुमन्त्र द्वारा सारे उपचार किए जा सकते हैं। इसलिए मन्त्र चिकित्सा को अपनाना चाहिए। गहरा श्वास लेकर छोड़ो, बीमारियाँ स्वतः ही बाहर आ जाती हैं। गुरू नानक के घर का मन्त्र बहुत शक्तिशाली है।

बाबा जी! आपने स्वामी राम जी की बात की है, प्रो. पूरन सिंह जी जो कि पंजाबी के बहुत बड़े शायर हुए हैं, उनसे बहुत अधिक प्रभावित थे और किसी समय वे उनके सन्यासी भी बन गए थे।

बाबा जी - वे स्वामी राम तीर्थ जी थे, ये स्वामी राम जी देहरादून वाले थे। जो स्वामी राम तीर्थ जी थे, उनसे प्रभावित होकर प्रो. पूरन सिंह जी एक बार अपने केश कटा कर पूर्णरूपेण योगी बन गए थे। इसके बाद डा. भाई वीर सिंह जी ने उनसे कहा कि 'नानक के घरि केवल नामु'। आपने कहा प्रो. साहिब! गुरू घर के अन्दर गुरवाणी के अन्दर सब कुछ है, इसलिए इस प्रकार से तुम्हें अपना धर्म नहीं छोड़ना चाहिए। सिक्खी-सिदक तो केशों सहित अन्तिम श्वासों तक निभना चाहिए। फिर उनकी प्रेरणा से प्रो. पूरन सिंह जी ने अमृतपान किया था।

'चलता'

टूटी गाढनहार गोपाल ...
(40 मुक्तों को समर्पित)

डा. जगजीत सिंह

सिक्ख पन्थ में मुक्तसर साहिब (खिदराणे की ढाब) में माघ की संक्रान्ति को विशेष धार्मिक दीवान सजाए जाते हैं, जहाँ पर कि उन गौरवशाली बहादुर सिंहों को याद किया जाता है, जिन्होंने साहिब श्री गुरू गोबिंद सिंह जी के धर्म युद्ध में सन् 1705 ई. में सरहिन्द की मुगल फौज के दाँत खट्टे कर दिए थे। एक एक योद्धा हजारों विरोधी फौजियों पर भारी पड़ा था। उन योद्धाओं ने अनगिनत दुश्मनों का दलेराना तरीके से मुकाबिला किया। वे स्वयं तो शहीदियाँ पा गए लेकिन दुश्मनों को मैदान-ए-जंग में करारी शिकस्त दी। उन्होंने गुरू जी का यह वाक्य सच्चा करके दिखला दिया कि -

सवा लाख से एक लड़ाउं तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाउ।

श्री आनन्दपुर साहिब के लम्बे घेरे के समय कुछ सिक्खों का मनोबल गिर जाने के कारण वे गुरू से बेमुख होकर अपने घरों की तरफ लौट गए थे। माता भाग कौर ने उनके स्वाभिमान को जब चुनौती दी तो वे अपनी भूल को माफ करवाने के लिए घर से चल पड़े। अपने गुरू की तलाश करते समय वे खिदराणे की ढाब पर हुए हमले को रोकने के लिए मुगल सेना के साथ टकरा गए और मुगल सेनाओं को भागने पर मजबूर कर दिया। बेदावा देकर गए सारे सिक्ख योद्धा इस युद्ध में शहीद हो गए।

गुरू महाराज जी ने एक-एक शहीद सिक्ख का सिर चूमा, उन्हें प्यार किया, वरदान दिए कि 'मेरा पाँच हजारी', 'मेरा प्यारा दस हजारी', 'मेरा निर्भय योद्धा' ..। तथा जब आप इन सिक्ख योद्धाओं के जत्थेदार भाई महा सिंह जी के पास पहुँचे तो अभी उन्होंने अपने प्राणों का त्याग नहीं किया था। गुरू जी ने उनके शीश को अपनी गोद में रखकर बहुत प्यार किया। उनकी बहादुरी और कुर्बानी पर प्रसन्न होकर गुरू जी बोले, तुम सबकी कुर्बानी बेमिसाल है। आज गुरू घर से जो भी माँगो, मिलेगा। राज भाग, सरदारियाँ, चारों पदार्थ, जो भी मांगो, मिलेगा। सजल नेत्रों से संकोच भाव को धारण किए हुए महा सिंह जी बोले, ऐ दो जहाँ के स्वामी सत्गुरू जी! कोटि अपराधों को क्षमा कर देने वाले सतगुरू जी! यदि आप प्रसन्न ही हो गए हो तो श्री आनन्दपुर साहिब के युद्ध में भूख-प्यास से तंग आकर सिक्खों की तरफ से दिए गए बेदावे को फाड़ देने की कृपा कर दीजिए तथा बेमुख हुए हम सब, अपने सिक्खों को पुनः अपने चरणों के साथ जोड़ लीजिए, यही मेरी तथा मेरे सभी शहीद हुए सिक्ख साथियों की विनती है जी। गुरू जी भी वैराग्य में आ गए तथा उन्होंने महा सिंह को बहुत प्यार किया। घट-घट की जानने वाले दशमेश पिता जी ने बेदावा पत्र शायद इसी घड़ी के लिए सम्भाल कर रखा हुआ था। कमर कसे में से आपने पत्र निकाला, उसे टुकड़े-टुकड़े किया तथा शहीद सिंहों को माफ करते हुए उनकी कुर्बानियों पर कुर्बान होते हुए उन्हें अनेकानेक वरदान दिए। संगत ने इस खिदराणे की ढाब को, इन मुक्त हुए सिक्खों की याद में 'मुक्तसर' का नाम दिया। खिदराणे की ढाब (श्री मुक्तसर साहिब) में यह युद्ध जनवरी सन् 1705 ई. में हुआ था, लेकिन कुछ विशेष जरूरतों के अधीन यह शहीदी समागम माघ माह की संक्रान्ति को आयोजित किए जाते हैं।

श्री गुरू गोबिंद सिंह जी ने मानवीय स्वरूप धारण करने का मनोरथ स्पष्ट तौर पर इस प्रकार से बताया है कि-

याही काज धारा हम जनमं
समझ लेहु साधू सभ मनमं॥
धरम चलावन संत उबारन॥
दुशट सभन को मूल उपारन॥

जबर जुल्म तथा अन्याय के विरुद्ध पहली पातशाही से ही संघर्ष आरम्भ हो गया था। गुरू महाराज जी मानवता को प्यार करते थे आप अपनी सभी यात्राओं के दौरान 'एक पिता एकस के हम बारिक' तथा 'सभ महि जोति जोति है सोइ', 'तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ' का ही सन्देश देते रहे। ऊंच-नीच, गरीब-अमीर, जाति-पात आदि सबका आपने पुरजोर खण्डन किया तथा आपने पाप व जुल्म करने वाले हुक्मरानों को 'राजे शींह मुकद्दम कुत्ते' कहकर उन्हें शर्मनाक किया तथा जन साधारण को स्वाभिमानी जीवन जीने की शिक्षा दी, सांझी संगत और पंगत की परम्परा शुरू की। श्री गुरू अरजन देव जी सच्चाई के पक्ष में गवाही देते हुए शहीद हुए। गुरू हरि गोबिंद महाराज जी ने स्वाभिमान की

रक्षा के लिए मीरी-पीरी की दो तलवारें धारण कीं। गुरू गोबिंद सिंह महाराज जी ने सन् 1699 ई. की बैसाखी को गुरू नानक देव जी द्वारा चलाए गए पन्थ को, खालसा पन्थ के सृजन के साथ सम्पूर्णता प्रदान की लेकिन यह विदेशी हुकूमत यानि कि मुगल साम्राज्य के लिए खतरे की घंटी थी, यही कारण था कि खालसा व मुगलों के बीच कशमकश शुरू हो गई। गुरू जी को अपने जीवन काल में 14 ऐसे धर्मयुद्ध लड़ने पड़े जो कि किसी जर, जोरू व जमीन के लिए नहीं थे, ऐसा उनका आदर्श भी नहीं था। वे तो अमन व शान्ति के पुजारी थे लेकिन कायर होना उन्हें तनिक भी पसन्द नहीं था। जब अन्य सारे उपाय विफल हो जाएँ तो कृपाण उठा लेना हमारा धर्म व दायित्व है, ऐसी उनकी विचारधारा है -

चुकार अज हमह हीलते दर गुजशत।
हलालसत बुरदन बशमशीर दसत। (जफरनामा)

अत्याचार व अन्याय के विरुद्ध गुरू महाराज जी ने कुल चौदह युद्ध लड़े। पहला युद्ध आपने भंगाणी (पांवटा साहिब) में अप्रैल सन् 1686 ई. में लड़ा जिसमें पहाड़ी राजा फतहशाह के साथी राजाओं के साथ आपको अकारण युद्ध करना पड़ा। गुरू जी के अनुसार -

फतेशाह कोपा तबी राजा।
लोह पड़ा हम सो बिन काजा॥

इस युद्ध में पहाड़ी राजाओं को अपने मुँह की खानी पड़ी। गुरू जी का फुरमान है -

भई जीत मेरी।
किपा काल केरी।

दूसरा युद्ध ब्यास नदी के तट पर नादौन में 20 मार्च सन् 1688 ई. को औरंगजेब के अहिलकारों दिलावर खान तथा अलफ खान के साथ हुआ। गुरू जी को इसमें विजय प्राप्त हुई। तीसरा युद्ध श्री आनन्दपुर साहिब में सतलुज के तट पर दिसम्बर सन् 1695 ई. को दिलावर खान के अपने पुत्र नईमखान की कमांड में भेजी गई सेना के साथ हुआ। तीरों, तोपों व बन्दूकों की गड़गड़ाहट सुनकर मुगल सेना भाग खड़ी हुई -

इते बीर गूजे, भए नाद भारे।
भजे खान खूनी, बिनाँ शसतर झारे।

चौथा युद्ध गुलेर (कांगड़ा) में 20 फरवरी सन् 1696 ई. को हुसैन खान तथा पहाड़ी राजा अजमेर चन्द, कृपाल चन्द तथा हिम्मत राय की सेना के साथ हुआ। इस युद्ध में हुसैन खान, कृपाल चन्द तथा हिम्मत राय को मौत के घाट उतार दिया गया और सिक्ख सेना को जीत प्राप्त हुई।

पाँचवां युद्ध भुलान में सन् 1696 ई. में दिलावर खान की सेना के साथ हुआ लेकिन सिक्ख सेनाओं के साथ सीधी टक्कर नहीं हुई क्योंकि उसने पहाड़ी राजाओं की तरफ रुख कर लिया था। छठा युद्ध दून बिलासपुर में सन् 1699 ई. में बलिया चन्द तथा आलम चन्द के साथ हुआ। सिक्ख जरनैल उदय सिंह के तीखे वार ने आलम चन्द की दाहिनी बाँह को काट डाला, फलस्वरूप उनकी सेना भाग खड़ी हुई। गुरू जी की फौज को जीत हासिल हुई। सातवां युद्ध कीरतपुर साहिब (श्री आनन्दपुर साहिब) में जुलाई 1700 ई. को पैंदे खान तथा दीनाबेग के साथ हुआ। गुरू जी के एक ही तीर के साथ पैंदे खान का अन्त हो गया और दूसरे के साथ दीना बेग घायल हो गया। फौजों में भगदड़ मच गई। आठवां युद्ध लोहगढ़ (श्री आनन्दपुर साहिब) में अगस्त 1701 ई. में हुआ। इस युद्ध में हमलावर थे पहाड़ी राजा केसरी चन्द व जगतुल्ला आदि। इसी युद्ध में गुरू जी ने भाई बचित्र सिंह को नागनी बरछा देकर मस्त हाथी का मुकाबिला करने के लिए भेजा था। नौवां युद्ध निर्मोहगढ़ में अक्टूबर 1701 ई. में हुआ। इस युद्ध के दौरान रुस्तम खान, युद्ध में मारा गया। फलस्वरूप सेनाओं को भागने में देर न लगी। दसवां युद्ध बसौली में 1702 ई. को हुआ। राजा कहिलूर ने अधीनगी स्वीकार करके अपनी जान बचाई। ग्यारहवां युद्ध श्री आनन्दपुर साहिब में सन् 1703 ई. को हुआ। सैदखान ने हथियार डालकर गुलामी स्वीकार कर ली। वारहवां युद्ध श्री आनन्दपुर साहिब में सन् 1704 ई. को हुआ। इस युद्ध में विरोधी थे सारे पहाड़ी राजा, लाहौर से आई मुगल सेना सरहिन्द तथा जम्मू के नवाब। इस दौरान आनन्दपुर साहिब शाही व पहाड़ी सेनाओं के द्वारा 10 माह तक घिरा रहा। कुरान और गीता की झूठी कसमें खाकर किले को खाली करवाया गया। यहाँ पर ही सिक्खों ने भूख से तंग आकर बेदावा लिखा था। तेरहवीं लड़ाई 22 दिसम्बर सन् 1704 ई. को चमकौर साहिब में हुई जो कि संसार का सबसे विलक्षण युद्ध था। इसमें एक तरफ दस लाख की शाही व पहाड़ी सेना थी और दूसरी तरफ भूखे-प्यासे व थके हारे 40 सिक्ख। यहाँ पर ही सिक्खों के साथ गुरू जी के दो बड़े साहिबजादे बाबा अजीत सिंह तथा बाबा जुझार सिंह जी शहीद हुए। चौदहवां तथा आखिरी युद्ध खिदराणे की ढाब (मुक्तसर साहिब) माघी वाले दिन 1705 ई. को हुआ। हमलावर था नवाब सरहिन्द ....। गुरू जी चमकौर साहिब से माछीवाड़ा, घुलाल, कनेच, हेहर, जट्टपुरा दीना, गुरसर, भगता, भूँदड़, बाबल, कोटकपूरा ढिलवा पतो, जैतो मनोआणा होते हुए अभी खिदराणे की ढाब पर पहुँचे ही थे कि शाही सेनाओं ने धावा बोल दिया। दूसरी तरफ जो सिक्ख बेदावा लिखकर

(शेष पृष्ठ 61 पर)

गुरू गोबिंद सिंह रचित - जफरनामा

सन्त निरंजन सिंह नूर

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक दिसम्बर, पृष्ठ - 53)

मूल

55. हमाँ मरद बायद शव्द सुखनवर।
न शिकमि दिगर दर दहानि दिगर।

शब्दार्थ - हमां = सारे, सुखनवर = जुबान के धनी, शिकमि = पेट, दहान = मुँह।

अनुवाद

उही मरद है जो बचन पालदा,
दिलों कुझ मूंहों कुझ ताँ काफर निरा।

मर्द का दायित्व है कि वह जुबान का धनी हो और यह बात ठीक नहीं है कि उसके दिल में कुछ और हो और मुँह पर कुछ और हो।

मूल

56. किह काजी मरा गुफतह बेरूं नयम।
अगर रासती खुद बयारे कदम।

शब्दार्थ - बेरूँ नयम = बाहर नहीं, रासती = सच्चाई, बयारे कदम = अपने कदम।

अनुवाद

अजे वी जे तूं ठीक रसता लिआ,
तेरे पहिले पैगाम ते हाँ मैं खड़ा।

मैं अब भी काजी के द्वारा आए सन्देश से बाहर नहीं हूँ, यदि तुम ठीक मार्ग की तरफ कदम बढ़ाओ।

मूल

57. तुरा गर बबायद ओ कौलि कुरआँ।
बनिजदे शुमा रा रसानम हमाँ।

शब्दार्थ - तुरा = तुम्हें, बबायद = चाहिए, बनिजदे शुमां = तेरे पास, रसानम हमां = मैं भेज देता हूँ।

अनुवाद

कुरानी जिलद ते लिखी कसम वी,
मैं घलदाँ तिरी नजर-सानी लई।

यदि तुम कुरान की उस जिल्द को देखना चाहते हो जिस पर इकरारनामा लिखा हुआ है तो मैं वह भी तुम्हारे पास भेज देता हूँ।

मूल

58. "किह तशरफि दर कसबह काँगड़ कुन्द।
वजाँ पस मुलाकात बाहम शव्द।"

शब्दार्थ - तशरीफ = आओ, वजां = इसके बाद, बाहम = एक दूसरे के साथ।

अनुवाद

आनंद-पुर नूं छ्ड के जेकर काँगड़ नूं टुर जाए,
आपाँ दोवें मिल सकदे हाँ, छ्ड के सभ टकराए।

आप आनन्दपुर को छोड़कर काँगड़ आ जाओ तो इसके बाद अपनी मुलाकात होगी।

मूल

59. न जरादरीं राह खतरा तुरासत।
हमा कौमि बैराड़ हुकमि मरासत।

शब्दार्थ - दरी राह = इस राह में, तुरासत = तुम्हें है, हुकमि = मेरे हुक्म में है।

अनुवाद

"काँगड़ दे राह विच तुहानूं खतरा मूल ना काई,
किउंकि कुल बराड़ कौम है मेरे हुकम 'च आई।"

कांगड़ के मार्ग में तुम्हें कोई खतरा नहीं है क्योंकि सारी बराड़ कौम मेरे हुक्म में है।

मूल

60. बया ता सुज्न खुद जबानी कुनेम।
बरूए शुमा मिहरबानी कुनेम।

शब्दार्थ - बया = आप आओ, बरूए शुमा = तुम्हारे सामने।

अनुवाद

मित्राँ वाँगूं बैठ रूबरू करसाँ, सुणसाँ दिल दी,
पाणी नूं जिओं पाणी मिलदा, पौण पौण नूं मिलदी।

यदि आप इधर आ जाओ तो अपने लोग आमने-सामने बैठ कर बातचीत कर लें। आपके साथ मेहरबानी भरा सुलूक किया जाएगा।

मूल

61. यके आप शासितह ए यक हजार।
बया ता बगीरी जि मन ईं दयार।

शब्दार्थ - यकअपस = एक घोड़ा, शाइसतह = सिधाया हुआ, बगीरी = आप प्राप्त करो।

अनुवाद

इक हजारी दी सरदारी ह्क तुहाडा होसी।
एस इलाके नूं जे आए, मेल असाडा होसी।

आप इधर आओ और इस क्षेत्र में तुम्हें 'यक असप' अक हजारी का मनसब भी प्रदान करते हैं, मेरे पास से यह इलाका लेने के लिए तुम आओ।

मूल

62. शहिनशाह रा बंदहए चाकरेम।
अगर हुकम आयद बजाँ हाजरेम।

शब्दार्थ - शहिनशाह = परमात्मा, बंद हए चाकरेम = गुलाम/नौकर, अगर हुकम आयद = यदि हुक्म आए, बजां हजारेम = तुरन्त हाजिर हो जाऊँ।

अनुवाद

करे हुकम जे र्ब शाहाँ दा शाह,
असीं उस दे चाकर, लिआईए बजा।

मूल

63. अगरचिह बिआयद ब फुरमानि मन।
हजूरत बिआयम हमह जानो तन।

अनुवाद

अजे वी वसाह मैनूं इनसान ते।
मैं आवाँगा पर सच्चे फरमान ते।

अब भी यदि मुझे शाही फुरमान आ जाए तो मैं तन-मन से आने के लिए तैयार हूँ।

मूल

64. अगर तूं बयजदाँ प्रसती कुनी।
ब कारि मरा ईं न सुसती कुनी।

शब्दार्थ - बयजदा प्रसती = परमात्मा की पूजा, बकारि मरा = मेरे काम में।

अनुवाद

खुदा पूज हैं ताँ खुदा तों डरीं
ते इस नेक अमली 'च ढिल ना करीं।

यदि तुम सच्चे खुदाप्रस्त हो तो इस नेक कार्य को करने में तनिक सी भी देरी मत करना।

मूल

65. बबायद किह यजदाँ शनासी कुनी।
न गुफतह कसाँ कस खरासी कुनी।

शब्दार्थ - बबायद = तुम्हें चाहिए, यजदा शनाशी = खुदा की पहचान, न गुफता कसे = किसी के कहने पर, हरासी कुनी = डराना।

अनुवाद

पछाणी खुदा, मुड़ जुलम ना करीं,
ते चुके चुकाए सितम ना करीं।

तुम्हें यह करना चाहिए कि तुम सच्चे खुदा की पहचान करो न कि तुम किसी के बहकावे में आकर किसी पर भी जुल्म करो।

मूल

66. तू मसनद नशीं सरवरि काइनात।
किह अजब्सत इिनसाफ ईं हम शिफात।

शब्दार्थ - मसनद नशीं = गद्दी पर बैठा सरवरि काइनात = बादशाह, ईं हमशिफात = ये सारी विशेषताएँ होते हुए।

अनुवाद

तूं गद्दी ते बैठैं सिशटी दा शाह,
ते इनसाफ तेरा खुदा दी पनाह।

तुम गद्दी पर बैठे हुए बादशाह हो लेकिन इन सारी विशेषताओं के बावजूद भी तुम्हारा न्याय! तौबा! तौबा! यह तो बहुत हैरानीजनक बात है।

'चलता'

गुरु नानक आगमन

(श्री गुरु नानक चमत्कार)

पद्म भूषण डा. भाई वीर सिंह जी

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक जून, पृष्ठ - 57)

सतगुरू जी का प्यारा सिक्ख व लाहौर का व्यापारी मनसुख जब गुरू उदासी धारण करके जगत के कल्याणार्थ चल पड़े तो उनके ध्यान में मग्न किसी जरूरी व्यापार के लिए संगलादीप को गया। वहाँ पर शिवनाभ राजा के शहर में, श्री गुरू नानक देव जी के प्यारे सिक्ख ने न तो व्रत धारण किया और न ही साजिब कीर्तन का भोग पड़ गया और श्री गुरू जी उस टीले पर, शान्त चल रही यमुना के दर्शन करने के लिए चढ़े तो आप जल तरंगों की मधुर ध्वनि को देखने के लिए बैठ गए। उस समय कीर्तन के दिव्य-रस में मस्त हो चुके कानों में किसी के रोने की भी आवाज सुनाई देने लगी। प्यार में सराबोर दिल, कविता व सूक्ष्म भावों की प्रतीति से द्रवित हृदय वाले श्री गुरू नानक देव जी के अन्दर इन्सानी दिल की पीड़ा का अहसास होने लग पड़ा। आप ने ख्याल किया कि हे भगवान! जगत किस प्रकार से दुखी है, जिधर भी देखो, दुख ही दुख है। हे दाता! अपने संसार के ऊपर आप स्वयं ही कृपा करो। आप इन भावों से अरदास करने में मग्न थे कि रोने-कुरलाने की आवाज और तीव्र हो गई। अब आपने मरदाना जी को कहा, जाओ मरदाना! दिल की पीड़ा के बुलावे पर पहुँचो और कीर्तनी रसों के रसिक कानों के साथ इन्सानी रुदन को भी श्रवण करो और पता लेकर आओ कि उसे कौन सी पीड़ा हुई है? यदि हम लोगों से उसकी कुछ सहायता बन सके तो करने का प्रयत्न करें। मरदाना गया और कुछ समय बाद पता करके वापिस लौट आया और कहने लगा, दाता जी! जिन महावतों ने अपनी खातिरदारी की थी उनका हाथी मर गया है। इसलिए वे रो रहे हैं। उस समय कृपासिन्धु वनों में भ्रमण करने वाले लेकिन इन्सानी पीड़ा को हरने के लिए इन्सानों में आकर बैठने वाले, सर्व सुख दाता जी स्वयं वहाँ पर पहुँच गए। आपका टिकाना पास में ही था। आप वहाँ जाकर उन्हें पूछने लग पड़े, प्रेमीजनो! तुम लोग क्यों रो रहे हो?

महावत - ऐ खुदा के बन्दे फकीर साईं! हाथी मर गया है।

श्री गुरू जी - फिर हाथी तो बादशाह सलामत का है उसे धन की क्या परवाह है? एक मर गया है, वह दस ले आएगा। तुम लोग क्यों रो रहे हो?

महावत - महाराज जी! एक तो रोना इस बात का है कि इसके मरने का कोप कहीं हमारे ऊपर ही न टूट पड़े कि हम लोगों की गलती के कारण ही इसकी मृत्यु हुई है। दूसरी बात यह है कि यह हाथी हम सबकी आजीविका का साधन था। हम लोग तो आज से ही बेरोजगार हो जाएँगे। फिर जब और हाथी आएगा तो न जाने फिर हमें उसकी सेवा में नियुक्त किया भी जाएगा या फिर कोई अन्य महावत हमारी जगह ले लेगा। इसकी क्या गारंटी है? हमारी रोजी बहुत मुश्किल है क्योंकि हाथी को आम लोग तो रखते नहीं हैं। इसे तो राजा-महाराजा लोग ही रखते हैं, इसलिए महावत की नौकरी बहुत मुश्किल से ही प्राप्त हो पाती है।

यह महावत तो अपनी कथा सुना रहा था और उसका परिवार साथ ही हाय-विलाप करता जा रहा था, जिस वजह से दया सिन्धु का दिल और भी द्रवीभूत होता जा रहा था। उस समय आप जी ने फुरमान किया, बच्चो! तुम लोग चुप करो और मेरी बात को सुनो! यदि तुम्हारा हाथी जीवित हो जाए फिर तो तुम लोग नहीं रोओगे न? उन्होंने चुप धारण करके गुरू जी की बात सुनी और कहने लगे, महाराज जी! फिर हम लोग क्यों रोएँगे बल्कि फिर तो हम लोग खुश होंगे और नाचे गाएँगे लेकिन फकीर साईं! मृत हो जाने वाले कब जीवित हुए हैं? उस समय आपके नेत्र ऊँचे हुए और इलाही गले से आवाज आई -

सबदि मरै ता मारि मरु भागो किसु पहि जाउ ॥
जिस कै डरि भै भागीअै अंम्रितु ता को नाउ ॥
मारहि राखहि इकु तू बीजउ नाही थाउ ॥ अंग-1010

बार-बार गा रहे हैं और नेत्र मिटत जाते हैं। महावत और उसका परिवार तथा अन्य महावत लोग चुपचाप खड़े होकर देख रहे हैं। भय का वातावरण चहुँओर व्याप्त है, चहुँओर चुप्पी है, तथा अल्लाह वाले की तरफ सभी लोग देख रहे हैं। गरीब लोगों के अन्दर विश्वास अधिक हुआ करता है और विश्वास वालों के बेड़े ही पार हुआ करते हैं। सभी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि सन्त फकीर है, न जाने कोई करिश्मा हो ही जाए। थोड़ी देर बाद गुरू जी के नेत्र खुले, जगत जलन्दा की सार करने वाले के नेत्र संसार-प्यार में सजल हो रहे थे। आपने उन सजल नेत्रों के द्वारा उन दुखी लोगों की तरफ देखा और अपनी सुन्दर रसना (जिह्वा) के द्वारा वचन किया 'जाओ! इस हाथी के मुंह पर हाथ फेरो तथा वाहिगुरू कहो।' आज्ञा मानकर महावत ने हाथी के मुँह पर हाथ फेरा और मुख से उच्चारण किया - वाहिगुरू! वाहिगुरू के प्यारे हाथी को देख रहे थे और वाहिगुरू लीला कर रहा था। हाथी

वाहिगुरू की जीवन-शक्ति की रौ के द्वारा हिल पड़ा उसने अंगड़ाई ली तथा अपने छोटे-छोटे नेत्र खोले तथा काँपता हुआ उठकर खड़ा हो गया तथा अपने कानों को पंखों की भांति हिलाने लग पड़ा। अपनी सूँड के मुँह को खोलकर उसने अपने प्राणदाता जी की तरफ देखा। हाँ भाई मनुष्यों को आजीविका प्रदान करने वाले हाथी जी! तुम्हें इसीलिए खड़ा किया गया है क्योंकि तुम्हें इन्हें रोजी-रोटी उपलब्ध करवाने वाले हो।

हाथी जीवित हो गया और यह खबर जंगल की आग की तरह से चहुँओर फैल गई। बादशाह को खबर पहुँच चुकी थी कि आपका मनपसन्द हाथी मर गया है। हाथियों का उपचार करने वाले की रिपोर्ट भी पहुँच चुकी थी कि वह किस कारण से मरा है। अब अचानक यह खबर भी आ गई कि एक अनोखे फकीर साईं ने, अल्लाह के दरवेश ने हाथी को जिन्दा कर दिया है। उस समय जासूस भेजे गए कि सारी बात की जानकारी लेकर आओ। उन्होंने रिपोर्ट प्रस्तुत की कि बात पक्की है। हाथियों के मुख्य महावत ने भी जाकर स्थिति को देखा और बताया कि पातशाह! खबर पक्की है वह हाथी जीवित हो गया है। पातशाह भी आश्चर्यचकित होकर स्वयं मौके की स्थिति को देखने के लिए चल पड़ा। वह लोधी, पठान, जिसके हाथों से अनेकों हिन्दू कष्ट पा चुके थे, अनकों फकीर दुखी हो चुके थे, स्वयं आया और उसने देखा कि हाथी जीवित है। इसके साथ ही उसने यह भी तसल्ली की कि पहले वह वास्तव में ही मर गया था। उस समय वह गुरू बाबा जी के पास आ जाता है और पूछने लगा ऐ दरवेश! यह हाथी तुमने जीवित किया है? उस समय गुरू बाबा जी ने कहा, ऐ मनुष्यों के बादशाह! मारने व जीवित करने वाला तो खुदा स्वयं ही है, फकीरों की तो दुआ होती है और कृपा अल्लाह की होती है।

बादशाह - दरवेश! मुझे बात समझ में नहीं आई।

गुरू बाबा जी - बादशाह सलामत! मारना और जिन्दा करना तो अल्लाह का अपना कार्य है, उसके अतिरिक्त यह कार्य कोई दूसरा नहीं कर सकता है। हाँ फकीर के पास दुआ होती है वह भी नेक कार्य हेतु कभी कभी दुआ उसके दिल से हो जाती है, जिसे कि वह साईं सुन लेता है। फकीर केवल दुआ करता है, कृपा करने वाला तो खुदा ही है। पातशाह हैरान होकर कहने लगा, यदि आप दुआ करो तो फिर यह मर भी सकता है? मार कर दिखलाओ? उस समय गुरू जी मुस्कुराए और फिर आपके नेत्र गम्भीर हो गए, माथे पर एक सिलवट सी बनी और उसके बाद आप अर्शों की तरफ देखकर बोले, मारे जीवाले सोइ।। नानक एकसु बिनु अवरु न कोई।। आप यह कहते गए और हाथी नीचे की ओर झुकता हुआ नीचे लेट गया। लम्बे-लम्बे श्वास भरता हुआ वह पुनः श्वास रहित हो गया। यानि कि हाथी की इहलीला समाप्त हो गई। यह देखकर बादशाह और उसके साथी दंग रह गए। चहुँओर चुप्पी छा गई कुछ क्षणों के बाद बादशाह को ख्याल आया और वह कहने लगा, दरवेश साईं! अब इसे पुनः जीवित कर दो।

गुरू जी बादशाह की बात को सुनकर हँसने लग पड़े तथा बोले, ऐ मनुष्यों पर हुक्म करने वाले बादशाह! अब यह उठ नहीं पाएगा। यह कोई खेल-तमाशा नहीं था बल्कि यह तो फकीरी की दुआ और अल्लाह की कृपा की बात थी, जहाँ पर कि हमें अल्लाह का सम्मान रखना चाहिए। उससमय बादशाह ने कहा, कारण क्या है? गुरू जी बोले, बादशाह सलामत! सुनो! लोहा, लोहा होता है आग नहीं लेकिन यदि उसे आग में डाल दो तो वह लाल अंगारा हो जाता है और फिर यदि उसे हाथ पर उठा लो तो वह जलाए बिना नहीं छोड़ेगा जबकि यदि तुम आग के अंगारे को हाथ पर उठाते हो तो हो सकता है कि वह दो-चार सेकंड तक न जलाए। इसी प्रकार से खुदा के रंग में लाल हो चुके फकीर साईं तो उसकी गिराई हुई चीज को उठा लेते हैं लेकिन जब फकीर गिरा दें तो फिर उसे साईं भी नहीं उठाता है। भाव यह था कि फकीर तो खुदा का बन्दा है, लेकिन दिन-रात उसकी याद में रहने के कारण आग में पड़े हुए लोहे की भांति आग का ही रूप बना हुआ है। इसलिए जब फकीर कोई दुआ करता है तो उसे खुदा झट से पूरी कर देता है। लेकिन जो बात उसका प्यारा कर देता है तो वह उसे फिर बदलता नहीं है। वह बादशाह जो अत्यन्त कड़े स्वभाव का था वह इस बात को सुनकर कुछ नरम हो गया और कहने लगा, ऐ दरवेश! कुछ हमारी सेवा कबूल करो। उस समय गुरू जी ने कहा, हमें तो केवल उस खुदा की ही माँग है और उसी की भूख है, उसके अतिरिक्त हमारी समस्त भूखें मर चुकी हैं। बस उसके दीदार की ही लालसा है। अब बादशाह समझ गया कि यह कोई पूर्ण फकीर है। वह जिस चीज को फकीरों में देखना चाहता था, उसे देखकर व तसल्ली करके वापिस लौट गया तथा गुरू बाबा जी वहाँ पर काफी समय तक सत्संग करते रहे।

सूचना - पहली उदासी तो उस समय शुरू हो गई जिस समय हट्टी को छोड़कर सुल्तानपुर के जंगलों को छोड़कर सुल्तानविंड के पास बेरियों के झुरमुट में, जहाँ पर कि अब अमृतसर है, सैदपुर संडयाली जाकर आपने तपस्या की थी और भाई लालो आदि का उद्धार करने के बाद आप जगत के कल्याणार्थ चल पड़े थे, लेकिन पुरातन जनम साखी में पहली उदासी की शुरूआत यहाँ पर बताई गई है और उसमें दिल्ली से चलते समय की वेशभूषा इस प्रकार की बतलाई गई है -

श्री गुरू जी ने पहली उदासी पूरब की तरफ की और इस उदासी में आपके साथ रवाब बजाने वाला मरदाना था। उस समय आपने पवनाहार ही किया और पहनावे के तौर पर एक वस्त्र पीला और एक वस्त्र सफेद धारण किया पैरों में खड़ाऊँ, गले में कफनी, सिर पर कलन्दरी टोपी, गले में हड्डियों की माला तथा माथे पर केसर का तिलक धारण

किया।

यह वेश-भूषा हिन्दू और मुसलमान फकीरों की मिलीजुली थी और दोनों को मजाक करने वाली थी। जैसे कि यदि आमदन व खर्च की तरफ एक समान रकम लिखी हुई हो तो इसका तात्पर्य है कि शेष शून्य रह गया है। इसी प्रकार से गुरू जी द्वारा दोनों भेष किए हुए यह प्रदर्शित करते हैं कि बाबा जी किसी भी भेष में विश्वास नहीं रखते थे। इस सांझे भेष ोक देखकर हिन्दुओं व मुसलमानों दोनों ने आश्चर्यचकित होना था। इस भेष में चलते हुए अभी आप दिल्ली से कोई ज्यादा दूर नहीं गए थे कि आगे की तरफ से आपको शेख वजीद पालकी में आता हुआ मिला। उसका प्रसंग इस प्रकार है -

शेख वजीद सय्यद

यहाँ से अब श्री गुरू जी घर की तरफ नहीं गए बल्कि आप दिल्ली से आगे की तरफ ही चल पड़े। भेष अजीब प्रकार की फकीरी का ही था और किसी एक मत की कोई बात नहीं थी। प्रस्थान करने के बाद एक जगह पर रुककर आपने कीर्तन श्रवण किया और फिर आप आराम करने के लिए बैठ गए। आपके सामने कुछ दूरी पर एक छायादार वृक्ष था। कुछ समय बाद वहाँ पर एक पालकी आकर रुकी। पालकी के अन्दर पूरे जलाल वाला एक पीर था। छः कहारों ने यह पालकी उठाई हुई थी। जो पीर जी पालकी में सफर कर रहे थे, उनका नाम शेख वजीद था। पालकी में से उतर कर पीर जी टहलने लग पड़े और कहारों ने बिछाई कर दी उसके बाद पीर जी उस पर लेट गए। अब कुछ कहार तो उन्हें दबाने व मालिश करने लग पड़े तथा कुछ उसे पंखा करने लग पड़े तथा एक कहार कुएँ की तरफ पानी लेने के लिए चला गया। जब मरदाना जी ने इस सारे दृश्य को देखा तो वह श्री गुरू जी को पूछने लग पड़ा कि गुरू जी! खुदा एक है या दो? बाबा जी हँस कर बोले, मरदाना! खुदा तो एक ही है। फिर मरदाना जी ने दोबारा प्रश्न किया महाराज जो ये पालकी उठाकर लाए हैं, ये किसकी सन्तान हैं और जो यह पालकी में बैठकर आया यह किसकी सन्तान है? एक तो यह पीर पालकी में बैठकर आया है और दूसरा यह थक गया है। वे एक तो स्वयं बोझ उठाकर लाए हैं और दूसरा वे लोग मालिश आदि करके उसकी सेवा कर रहे हैं तथा और भी काम कर रहे हैं।

सतगुरू जी - भाई मरदाना! चलने के स्वभाव वाले चलते-चलते थकते नहीं हैं। इसका कारण यह है कि चलने से भूख लगती है, फिर वे खाते हैं और इस तरह से हृष्ट-पुष्ट रहते हैं। दूसरी तरफ बैठे रहने वाले तो थक जाते हैं, उनकी भूख भी मर जाती है और थोड़ा खाने से शारीरिक शक्ति का ह्रास हो जाता है, फलस्वरूप शरीर जल्दी थकने लग पड़ता है और यदि वे अधिक खाएँ तो भी वे स्वस्थ नहीं रह पाते हैं तथा फिर भी शरीर जल्दी थकने लग पड़ता है। इसलिए कहावत है कि 'चलता-फिरता न मरे बैठा हुआ मर जाए'।

मरदाना - लेकिन महाराज जी! यह पीर, पालकी में तो इसीलिए बैठा था कि मैं न थकूँ, लेकिन अब पता नहीं यह थका है या नहीं और फिर अब यह अपने शरीर को दबवाने लगा हुआ है। गुरू जी मुस्कुराए और कहने लगे, मरदाना! इस बेचारे को दो प्रकार की थकान चढ़ी हुई है, अब यह अपने शरीर को घुटवाए (दबवाए) न तो और क्या करे? इसने पिछले जन्म में तप किए, हठ किए, रात-रात भर जाग कर साधनाएँ कीं, कड़कड़ाती ठंड को अपने ऊपर सहारा, तीर्थ व हज किए ताकि सिद्धियाँ प्राप्त हों इसीलिए यह थक गया है। अब इसकी तपस्या को फल लगा है, राज भाग मिला है। इसके प्रबन्ध कार्य में और मिले सुखों को भोगने में भी थकान होती है। इसलिए इसे दोहरी थकान हो रही है तो फिर यह अपने आपकी सेवा न करवाए, दबवाए न तो और क्या करे? (यह कहकरगुरू जी मुस्कुरा पड़े)।

मरदाना - महाराज जी! फिर यहाँ पर कोई दुखी है और कोई सुखी है तो फिर इसका क्या कारण है?

श्री गुरू जी - कारण तो कर्ता जाने क्योंकि कारणओं का कारण तो वही है। लेकिन बात यह है कि देहधारी कर्म करता है। अब कर्म या तो भला होता है या फिर बुरा। दोनों का संस्कार अन्दर अंकित हो जाता है और उसी के अनुसार स्वभाव बन जाता है। यह स्वभाव ही सुख व दुख देने वाला है और फिर जैसा बोओगे वैसा ही तो काटोगे। यदि दुख बोओगे तो दुख उगेगा और यदि सुख बोओगे तो सुख उगेगा। अतः बीजने वाला अपने कर्मों के अनुसार सुख या दुख पाता है। जो तप, हठ, पुण्य, दान आदि राजभाग के लिए करते हैं, वे राजभाग प्राप्त करने के बाद फिर बुरे कार्य करने लग पड़ते हैं, अपनी अकड़ के कारण जोर-जुल्म करने लग पड़ते हैं तो उनके इन्हीं कर्मों के कारण फिर वे दुखों के अधिकारी बन जाते हैं, इसीलिए कहा गया है कि 'तपो राज, राजो नर्क'।

मरदाना - क्या मनुष्य द्वारा किए गए कर्म कभी मिट भी जाते हैं?

श्री गुरू जी - कर्मों के संस्कार व्यक्ति के अन्दर पक्के बैठ जाते हैं, इसलिए ये कर्मों के लेख इतनी आसानी से मिटते नहीं हैं लेकिन भद्रपुरुष! कर्म तो जीव ने देह को धारण करके ही किए हैं, इसलिए जिस चीज का आदि है, उसका अन्त भी है। अतः कर्म मिटते भी हैं। जिस प्रकार एक आग की चिंगारी से लकड़ियों के बड़े-बड़े ढेर राख बन जाते हैं, उसी प्रकार से परमेश्वर के साथ प्रेम करने से कर्म भी राख बन जाते हैं। यदि व्यक्ति परमेश्वर के साथ अपनी सुरति को जोड़े, अपने ध्यान को कर्ता-पुरुष में जोड़े तो अन्दर पड़ी हुई कर्मों की संस्कारी रेखाएँ धुल जाती हैं। सुख, दुख, देह,

(शेष पृष्ठ 56 पर)

गुरबाणी अर्थ भण्डार

सन्त हरी सिंह जी रन्धावे वाले

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक दिसम्बर, पृष्ठ - 56)

सिरीरागु महला 1

हरि हरि जपहु पिआरिआ

गुरमति ले हरि बोलि॥

पिआरिआ = ऐ प्यारे सिक्ख! उस हरि (प्रभु) का नाम जपहु = जपो जो कि हरि = प्रत्येक प्रकार के दुखों व सारे पापों का नाश करने वाला है अथवा हरि = जो हरि (प्रभु) 'तू' पद का अर्थ रूप है।

मनु सच कसवटी लाईऐ

तुलीऐ पूरै तोलि॥

इस मन को सच्चे नाम की कसौटी पर लगा कर देखें कि यह कितना नाम सिमरन करता है अथवा मन को सर्राफ रूपी सच = सच्चे सतगुरू जी की कसौटी अथवा सच = सच्ची भक्ति की कसौटी पर लाइऐ = लगाएँ ताकि जो परमार्थ का सम्पूर्ण तोलि = विचार है उस पर पूरै = पूरे तुलीऐ = तौला जाता है अथवा विचार रूपी पूरै तोलि = बाँटों के साथ तुलीऐ = तौला जाता है। भावार्थ जब पाँचों कर्मेन्द्रियाँ, पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ, मन व बुद्धि आदि विकारों की तरफ से रुक जाएँ और मन, नाम में जुड़ जाए तो फिर सत्य की कसौटी पर बारह बन्नी (शत प्रतिशत शुद्ध सोना) के सोने की भांति खरा उतरता है।

कीमति किनै न पाईऐ;

रिद माणक मोलि अमोलि॥

उस वाहिगुरू जी की कीमत कोई नहीं पा सका है और न ही कोई पा सकेगा। वह तो मानिक की भांति बेशकीमती प्रभु सबके हृदयों में शुद्ध स्वरूप होकर स्थित है। जो अमोलि = मूल्य से रहित है भावार्थ वह किसी भी साधन के बदले मोल नहीं खरीदा जा सकता है जैसे कि मानो सौ अश्वमेघ यज्ञ कर लिए या जप, तप, योगाभ्यास आदि कर लिए तो ये सारे साधन उसके मुल्य के बराबर नहीं पहुँच सकते हैं।

भाई रे हरि हीरा गुर माहि॥

हे भाई हरि रूपी हीरा गुर = सतगुरू जी के हिरदे = हृदय माहि = में साक्षात रूप में विद्यमान है।

सतसंगति सतगुरु पाईऐ;

अहिनिसि सबदि सलाहि॥1॥रहाउ॥

और यह वस्तु सतगुरू जी की सत्संगत में से तद पाईऐ = तभी प्राप्त हो पाती है जबकि अहिनिस = दिन-रात सतगुरू जी के शबद का सलाहि = यशगान करते रहें भावार्थ संकल्प रहित होकर दिन-रात उस प्रभु जी का सिमरन करते रहें।

सचु वखरु धनु रासि लै;

पाईऐ गुर परगासि॥

हे भाई! सचु वखरु = सच्चा सौदा जो परमेश्वर का नाम है, यही रासि = श्रद्धा रूपी पूँजी तथा नाम रूपी धन लेकर इसके द्वारा सतगुरु जी के माध्यम से निज स्वरूप का प्रकाश प्राप्त कर लिया जाता है जिनके मस्तिष्क के भाग्य जागृत हों वही अमूल्य वस्तु की प्राप्ति करते हैं।

जिउ अगनि मरै जलि पाईऐ;

तिउ त्रिसना दासनि दास॥

जिउ = जिस प्रकार से पानी को पाइऐ = डालने से आग बुझ जाति है तिउ = उसी प्रकार से सतगुरू जी के दासनि दास = दासों के दास बनने से तृष्णा रूपी अग्नि बुझ जाती है भावार्थ जो धन, पदार्थों और विकारों की तृष्णा की अग्नि मन में सदैव लगी रहती है वह परमेश्वर के नाम रूपी जल के द्वारा तथा गुरू जी के दासों के दास बनकर ही बुझती है।

जम जंदारु न लगई;

इउ भउजलु तरै तरासि॥

फिर उसे जम = यम जो कि जंदारु = जल्लाद की तरह से है, वह दुखी नहीं करता है अथवा जम जो कि जंदारु = जिन्दगी का दुश्मन है अथवा जंदारु = जो कि डण्डाधारी है, वह दुखी नहीं करता है। इउ = इस प्रकार भउजल = संसार सागर के तरासि = डर से तरै = पार हो जाया जाता है अथवा तरै तरासि = वे अन्य भी पार हो जाएँगे जिन्हें कि पार हो जाने की उम्मीद है।

गुरमुखि कूड़ु न भावई;

सचि रते सच भाइ॥

जो गुरमुख हैं, उन्हें कूड़ = झूठ बोलना न भावई = अच्छा नहीं लगता है अथवा गुरमुखों को कूड़ = झूठ बोलना न भाबई = अच्छा नहीं लगता है अथवा गुरमुखों को कूड़ = झूठे पदार्थ अथवा कूड़ = झूठा कुसंग आदि अच्छा नहीं लगता है क्योंकि जो सचि रते = सच्चे नाम में रंगे हुए हैं, उन्हें सच भाइ = सत्य ही अच्छा लगता है।

साकत सचु न भावई कूड़ै कूड़ी पाँइ॥

जो साकत = कठोर चित्त वाले पुरुष हैं, उन्हें सचु = सत्य बोलना या सच्चा नाम न भावई = अच्छा नहीं लगता है क्योंकि कूड़ै = झूठे पुरुष कूड़ी = झूठी शोभा को ही पांइ = प्राप्त कर पाते हैं और अन्त में तो सब कूड़ ही हो जाते हैं।

सचि रते गुरि मेलिऐ
सचे सचि समाइ॥

जो गुरमुखजन गुरि मेलिऐ = सतगुरू जी ने अपने साथ मिला लिए हैं, वे सचि रते = सच्चे नाम में रते = रंगे जा चुके हैं। वे सच्चे पुरुष सत्य स्वरूप में समाइ = समा जाते हैं भावार्थ गुरमुखजन सत्य में रंग गए हैं जबकि साकत पुरुष यानि कि जो माया के पुजारी हैं, वे झूठे कार्यों में ही लगे रहते हैं।

मन महि माणकु लालु नामु
रतनु पदारथु हीरु॥

उनके मन = हृदय महि = में नाम सिमरन करके श्रवण, मनन व चिन्तन रूपी माणिक, प्रेम रूपी लाल वैराग्य रूपी रत्न शुभ गुणों रूपी पदार्थ ज्ञान रूपी हीरा प्राप्त हो जाता है।

सचु वखरु धनु नामु है घटि घटि गहिर गंभीरु॥

हे भाई सच वखरु = सच्चा सौदा नाम धन ही है। परमेश्वर का जो सच्चा नाम घटि घटि = शरीरों में विद्यमान है वह गहिर = गहरा तथा गंभीरु = चुपचाप है।

नानक गुरमुखि पाईऐ
दइआ करे हरि हीरु॥4॥21॥

सतगुरू नानक देव जी फुरमान करते हैं कि हे भाई! उस सच्चे नाम को, गुरुमुखों ने गुरू जी की कृपा के द्वारा ही प्राप्त किया है। जो हरि = प्रभु जी हीरे की भांति है और यदि वे दया करें तो ही सतगुरू जी के माध्यम से नाम की प्राप्ति होती है।

'चलता'

(पृष्ठ 54 का शेष)

जन्म, मरण आदि सब कर्मों के अनुसार ही हैं, लेकिन मुक्ति परमेश्वर की कृपा पर ही निर्भर है और यह दिव्य कृपा उन्हीं पर होती है जो कृपा को अपनी तरफ खींचते हैं। परमेश्वर की कृपा को कौन खींच सकता है? कृपा को वही खींच सकता है जो कि कृपा करने वाले के साथ प्यार करता है। प्रेम की लगन आकर्षण है जो कि प्रियतम को भी खींच लेती है। अदृश्य परमेश्वर के साथ प्रेम उसकी याद के द्वारा पड़ता है, उसका गुणगान करने से पड़ता है। उसकी कृपा तो उसकी मर्जी से ही होती है लेकिन उसका मार्ग यही है कि उसकी याद में रहा जाए, प्यार में रहा जाए, यथासम्भव संसार के कल्याण की बात करनी, जगत भलाई के कार्य करने, नेकी करनी तथा बुराइयों से बच कर रहना।

श्री गुरू जी ने इस साखी में जो उपदेश दिया है वह सवाल प्रत्येक मनुष्य के मन में आता रहता है। गुरू जी ने अपनी वाणी में बतलाया है कि कर्म करने से जो लेख बन जाते हैं, वे मिटते नहीं हैं। लेकिन वे मिटते भी हैं क्योंकि कर्म तो जीव ने देह धारण करने के बाद किए हैं। देह धारण करने से पहले कर्म कहाँ थे, जिन्होंने यह देह प्रदान की? अतः कर्मों का आदि है और फिर यह जीव भी तो सीमा में बँधा हुआ है और इसका समय भी तो समाप्त होता है इसलिए कर्म शाश्वत नहीं हो सकते हैं। जिस चीज का आदि है तो उसका अन्त आवश्यम्भावी है। कर्मों के समाप्त होने का मार्ग यह है कि यह जीव आगे के लिए शुभ कर्म करे ताकि भविष्य में अशुभ कर्मों के संस्कार और अधिक न बढ़ें। इसके साथ ही जहाँ तक शुभ कर्मों को करने की बात है तो उसे शिरोमणी कर्म सत्संग करना चाहिए, करतार का कीर्तन करना चाहिए, उसका गुणगान करना चाहिए। इस प्रकार से उसका मन कर्ता में टिकेगा। उसकी पवित्रता मन को पवित्र करेगी। आग से दूर जाने पर ठंड लगती है और आग के नजदीक आने पर गर्मी मिलती है। बुरे कर्मों के कारण परमेश्वर से बिछोड़ा पड़ता है और उसके दूरी बन जाती है। दूसरी तरफ शुभ कर्मों के द्वारा तथा उसकी याद अपने दिल में बैठा कर उसका पास हुआ जाता है। जितना हम उसके नजदीक होते हैं, उतना ही सुखी होते जाते हैं। फिर प्रत्येक समय का कीर्तन यह है कि उसकी याद हमारे अन्दर सहज स्वभाव ही टिक जाए। याद, प्यार ही होती है, लेकिन याद हमारे अन्दर सहजता में तभी टिक पाती है जब हम उसके नाम का अभ्यास करते हैं, उसका नाम जपते हैं और मन को उसकी हुजूरी हाजिर रहने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं -

है हजूरि हाजरु अरदासि॥
दुखु सुखु साच करते प्रभ पासि॥

इस विधि से कर्म व कर्मों के फल समाप्त भी होजाते हैं।

'चलता'

नौवें रत्न - सन्त ईशर सिंह जी महाराज, राड़ा साहिब

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक सितम्बर, पृष्ठ - 58)

सन्त महाराज के प्रचार दौर

सन्त महाराज जी ने जीवन के आन्तिम बीस वर्ष निरोल परोपकार तथा लोक भलाई के साधनों में ही बिताये थे। आप लोक सेवा के समय कभी कभी शारीरिक क्रिया भी भूल जाया करते थे। शरीर अब कष्ट सहन करने के लायक नहीं था, फिर भी आप इससे भी अधिक कार्य करने के आतुर थे।

आज आप राड़े साहिब में कीर्तन कर रहे हैं तो दूसरी ही रात को दिल्ली के बिड़ला मन्दिर के बाहर कीर्तन करते हुए दिखाई देते थे। फिर वहाँ से दीवान समाप्त होते ही थे कि यू. पी. का नम्बर लग जाता था। हापुड़, गाज़ियाबाद, लखनऊ फिर हरिद्वार, बिलासपुर से लेकर नानक मत्ता तक सारा ही सिख हलका उनकी चरण धूलि को बार-बार प्राप्त करता था। हर समय सन्त के खोजी आप जी को चौतरफे से घेरे रखते थे। लोक भलाई की यह दशा थी कि एक हाई स्कूल पूरा होता, तो वह कालिज बना दिया जाता और फिर वह सरकार को लाखों रूपये सहित देकर भी आराम नहीं किया। फिर स्कूल की इमारत और बनानी पड़ी।

गुरूद्वारा करमसर तो और बढ़ना ही था उसकी हर चीज़ें जो पहले बड़ी थी अब छोटी होकर रह गई थीं। दीवान स्थान पहले से ही काफी बड़ा था, अब वहाँ मजबूरी में ही दीवान सजते थे क्योंकि यह जगह तो रोजाना के दीवानों के लिये ही कम पड़ती थी। सालाना तथा बड़े दीवानों के लिये कोई स्थान नहीं था। श्री हरि मन्दिर के सामने ही जगह को बाहर से खाली करके सारा ही खोल दिया। पहले विचार था कि 10-12 कमरे ही बहुत होंगे, फिर 20 बने, अब सैकड़ों तक की कहानी भी पूरी हो गई, पर संगत की बहुत आमद ने हर चीज़ तथा हर जगह को भी छोटा करके बना दिया था।

गुरूद्वारे के बाहर ही कुछ दुकानों जो कभी लंगर की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिये हर समय, विशेष रूप से चाय, लंगर आदि की पूर्ति होती थी, यही देख कर बनाई गई थीं। अब और भी कई दुकानें बन गई हैं। मध्यम श्रेणी का हस्पताल है जो पहले गुरूद्वारे का था अब वह सरकार को सौंप दिया है, पर दवाईयों की कमी को हर समय महसूस किया जाता है।

हम सन्त जी महाराज की व्यस्तताओं के बारे में चर्चा कर रहे थे। पहले दीवानों की संख्या सैकड़ों, फिर हज़ारों और अब अन्तिम वर्षों के अन्दर लाखों तक पहुँच चुकी थी। विशेष रूप से लुधियाना शहर तथा नगरों की तो यह हालत थी, वहाँ हर जगह मेला ही लग जाता था। पहले तो सरदार परमजीत सिंघ या फिर और अन्य बसों वाले प्रेमी, बसें चलाकर संगत को ले आया करते थे। लुधियाना से भी संगत रात के समय ही करमसर आकर वापिस चली जाती थी पर अब हर तरफ से संगत आकर डेरे में पहुँचती है। लुधियाना, कोटला, सरहन्द, खन्ना, अहमदगढ़, दोराहा, सूबा राड़े साहिब से लगभग दस बार बसें अलग-अलग स्थानों के लिये चलती हैं, पर फिर भी गुरूद्वारे में संगत की हर समय आवाजाई बनी रहती है। लंगर किसी समय दो अंको तक ही सीमित था फिर सैकड़ों तक होने लगा, फिर पाँच सौ से लेकर हज़ार तक प्रेमी रोज ही भोजन करते हैं और सक्रान्ति तथा पूर्णमाशी की हाजिरी 10-15 हजार से कभी कम नहीं होती।

कुर्सी

सन्त ईशर सिंघ जी महाराज राज योगी थे तथा वे बाबा साहिब सिंघ जी बेदी तथा बाबा बीर सिंघ जी नौरंगाबाद, बाबा महाराज सिंघ जी, उस सम्प्रदाय के स्तम्भ थे जो बाकायदा दरबार लगाते थे। बड़े-बड़े लोग दरबार में हाजिरी लगाया करते थे। बाबा जी के फोटो जो आज भी मिलते हैं, अन्दर भी सिंघ साहिब महाराजा रणजीत सिंघ और उनका शाही परिवार बाबा जी की हाज़िरी में बैठा दिखाई देता है। उनके बराबर में पीछे बाबा बीर सिंघ जी नौरंगाबाद तथा अन्य सन्त समाज के प्रमुख बैठे दिखाई देते हैं।

पहले जब संगत की आवाजाई काफी बढ़ी, तो सन्त महाराज ने लोगों को अधिक समय देने के लिये ही कुर्सी का ढंग चलाया था। मतलब तो लोक सम्पर्क था ताकि हर एक प्राणी को जो उन्हें मिलना चाहे दर्शन करके लाभ प्राप्त कर सके। फिर इसी समय खुले तौर पर जहाँ आत्मिक तथा महानता सिमरण साधन की बातें चलती थीं। वहाँ पर कई

बार राजनैतिक दावपेचों की चर्चा भी हो जाया करती थी। उस समय सन्त जी अपनी राय दिल खोलकर दिया करते थे।

जिस समय पंजाबी मोर्चे के समय सन्त फतह सिंघ जी ने सन्त महाराज को कहा था कि, ''आप खालसा पंथ की बागडोर सम्भालो, तब पन्थ उन्नति की ओर जायेगा साथ ही जो कमी तथा नुकसान किसी और व्यक्ति में होकर सारी कौम के लिये हानिकारक सिद्ध हो सकता है, वह नहीं रहेगा।''

सन्त महाराज जी ने तुरन्त ही फ़रमान किया था, ''सन्त जी! राजनैतिक लड़ाई तो अंगारों की भट्ठी है।''

आप स्वयं एकान्त तथा कीर्तन की शान्ति भरी जिन्दगी छोड़ कर इस भट्ठी में पड़ गये। अब वही भट्ठी हमें दिखाते हो। कृपा करके हमें क्षमा करो। वैसे हम गुरू पन्थ के दास हैं। हर समय उसकी उन्नति तथा महानता के लिये प्रार्थना करते हैं। पन्थ गुरू का रूप है फिर कोई गुरू का सिख उससे दूर तथा अलग हो भी कैसे सकता है? हम, हर समय तुम्हारे साथ हैं। राजनैतिक लड़ाई छोड़कर गुरू पन्थ की उन्नति तथा अमृत प्रचार धर्म की उन्नति के साधन हर समय करने को तैयार है। पर आगे होकर मोर्चा चलाना, राजनैतिक चालें चलकर एक दूसरे को मात देने का षड़यन्त्र रचना, अपने पाप को छिपाकर दूसरे की छोटी मोटी भूल को शेर तथा अपनी पहाड़ जैसी गलती को सेवा बताना, यह हमसे नहीं हो सकता। सो आप जो ठीक समझते हो, करते रहो। हमारे वश की बात यह बिल्कुल ही नहीं है। हाँ, अमृत प्रचार, सदाचार, फिर नशों के प्रयोग का विरोध, ये ऐसी बातें हैं जिसका हम लोगों में प्रचार करते हैं। उसका लाभ गुरू पन्थ को ही पहुँचता है। पनीरी तो हम बनाते हैं फिर आप उसके वृक्ष बना लो, यह मुश्किल नहीं है।''

हम बात कुर्सी की कर रहे थे, महापुरुषों की कुर्सी किसी गुरूडम का दिखावा बिल्कुल भी नहीं था। वे कभी भी अपने आप को सतगुरू जी के, किसी भी तरह, कोई अंग भी नहीं मानते थे बल्कि किसी समय कोई गुरू ग्रन्थ साहिब के आदर में फर्क दिखाई देता तो झाड़ दिया करते थे। उन्होंने कभी किसी को गुरू मन्त्र देकर सिख नहीं बनाया। वे सदा ही जब कोई शबद के साधन सिमरण की बात करता तो पहले ही कह दिया करते थे, ''आप पाँच प्यारों से अमृत की दात प्राप्त करके गुरू मन्त्र धारण कर चुके हो कि नहीं? यदि नहीं तो तुम सिंघ रूप में निगुरे हो। सिखी में गुरू से गाँठ केवल पाँच प्यारों द्वारा ही पड़ती है। केश धारण किये बिना, पाहुल के बिना भेखी भ्रमित सिख है।''

जो आदमी सन्त जी महाराज के कट्टर विरोधी तथा उनसे सदा ही दूर रहे वे भी यह नहीं बता सकते कि सन्त जी महाराज का कोई और भी राह सिखी के अतिरिक्त था।

कमादो फार्म पर भूत

अहमदगढ़ मण्डी के कई सन्त महाराज के प्रेमियों ने आकर कमोदे में सरदारों से धरती मोल ली। यह उस समय तो कौड़ियों के भाव केवल 50-60 रूपये और फिर ज्यादा से ज्यादा 100 रूपये एकड़ में मिल जाती थी। करतार सिंघ जी तथा उनके भाईयों ने धरती को आबाद किया। इसी जंगल में पीपल के पेड़ों की भरमार थी। चारों ओर लकड़ियों के ढेर लगे हुए थे। कोई एक वृक्ष खास जरूरत के लिये रख लिया। एक नौकर ने उस वृक्ष के पास बैठकर पेशाब कर दिया। उसी समय घर में ईटों तथा गन्दगी की वर्षा होती दिखाई दी।

घर की बहुएं दूध रिड़कना शुरू करती तो चाटी (मटकी) बीच में से ही टूट जाती। आग पर रखा दूध का मिट्टी का बर्तन (काड़ना) चक्कर खाकर गिर पड़ता। चलते-चलते कोई पीछे से पत्थर आ लगता। पाठ कराने की सोचें तो चन्दोआ भी पत्थरों से भरा हुआ मिलता। डर के मारे कोई पाठ भी न करता। करतार सिंघ ने परिवार के जीवों ने, सन्त महाराज के पास प्रार्थना की कि हमारे घर से यह संकट दूर करो। करतार सिंघ के प्राणियों ने सन्त महाराज के गुरूद्वारे से प्रसाद मंगवाया और हुक्म दिया, उस अमुक वृक्ष के नीचे रख दो, वह अभी अभी मुक्त हो जायेगा। हमें भी जब समय मिला उस स्थान पर आ जायेंगे।

प्रेमियों ने वह प्रसाद उस बरोटे (वृक्ष) के नीचे रख दिया। उसी दिन से वह सारी धीगा मस्ती बन्द हो गई और फिर कभी भी कोई शिकायत न आई।

सन्त महाराज जी दिल्ली जाते हुए, पिपली से कुरूक्षेत्र होते हुए कच्चे रास्ते ही कमौदे गए तथा इस फार्म के लोगों की प्रेम भावनाएं सुनी। सभी सेवकों, बहनों, भाईयों ने धन्यवाद के रूप में भेंट हाज़िर की। विशेष तौर पर पूर्वी नौकरों ने प्रेम सहित नमस्कार करके कहा था, ''यदि आपकी कृपा न होती, तो हम में से कोई भी यहाँ न टिक सकता।''

सुलेमान का उद्धार

कई वर्षों से सन्त महाराज यू. पी. के दीवोनों तथा दर्शन मिलाप के लिये काफी समय दिया करते थे। बात 1967

अक्तूबर महीने की है जब सत्रह तारीख को सुबह एक नवयुवक लड़का कुर्सी के समय खेलने लग गया। इसकी सूरत मुसलमानों जैसी थी। क्रिया गन्दी थी, उर्दू ही आम तौर पर बोलता था। जब सिर ही मारता रहा, तब स्वाभाविक ही महापुरुषों ने दया करके पूछा, ''क्या बात है? यह कौन है?'' इसने कहा, ''मैं आज तक किसी के आगे झुका नहीं, न ही किसी के साथ कोई बात की है, पर आपको उत्तर देने में असमर्थ हूँ। कृपा करके निजी तौर पर मेहर करके, एकान्त में समय बख्शो ताकि मेरी आपदा दूर होकर, मेरे कल्याण का कोई मार्ग निकल सके।'' महापुरुषों ने दयालु होकर, अगले दिन एकान्त गुफा पर पहुँचने के लिये आज्ञा दे दी।

वह दूसरे दिन सुबह ही पहुँच गया। महापुरुषों ने कृपा दृष्टि करके, इसका दुख हरने के लिये द्रवित हृदय से पूछा, ''बताओ भाई क्या है? हम तेरे लिये क्या कर सकते हैं?''

इसने कहना शुरू कर दिया, ''मैं ईरान का वासी हूँ और महमूद गज़नवी के आक्रमण के समय अपने देश से इधर आया था। वह केवल लूटने के लिये ही आया था। अपना उल्लू सीधा करके चला गया पर मैं यहाँ एक नगर में ठहर गया जो बाद में जाकर मुगलों के समय मुगल खेड़ा बन गया, पहले केवल खेड़ा ही नाम था। मेरी तीन पत्नियाँ थीं। सन्तान केवल एक लड़की थी। मैं जादू-टोने तावीज़ आदि किया करता था और भूतों की खेल किया करता था। कईयों को स्वंय ही भूत आदि का शिकार बनाकर उनसे पैसे वसूल किया करता था। कई बेगुनाह हिन्दू मेरी धींगा-मुशी का शिकार हो गये। एक नौजवान लड़का, मेरी लड़की को प्यार करता था। मैं उसे पसन्द नहीं करता था। सत्तर साल के बाद मेरी मौत हो गई। भूतों का गुरू भूत ही बनेगा। मेरी क़ब्र बन गई जो आज भी है, लोग उसका आदर करते हैं, शीरनियाँ चढ़ाते हैं। अज़राईल फरेश्ता के दूत आए और मुझे खुदावन्द की दरगाह से बाहर निकाल दिया कि यह एक महान पलीत मनुष्य है। इसे दोज़ख में नहीं रख सकते। बे-पीर मुरशद होने के कारण गुनाहों की तलाफी कौन करता? सो मुझे अधोगति की यौनि भोगने के लिये धरती पर धक्का दे दिया। मैंने परवरदिगार से गुनाहों की माफी के लिये दरख्वासत की तब हुक्म हुआ कि काफी लम्बा समय बीतने के बाद, कोई बख्शी हुई पावन आत्मा ही तेरे कल्याण का कारण बन सकेगी।

सदियाँ बीत गई हैं। मेरी भटकन शिखरों पर पहुँच चुकी है। शरीर का कोई बोझ नहीं, पर तृष्णा की हद नहीं है। कभी भी मन को शान्ति तथा तृप्ति प्राप्त नहीं होती। मनुष्य यौनि में बसे हुए लोगों को सुखी तथा कर्म, धर्म, पावन कर्म करता देखकर मैं हर समय बेचैन रहता हूँ। मैं अपनी कब्र के चौतरफे ही भटकता फिरता रहता हूँ।

1947 के बाद डाक्टर शेर सिंघ जो मेरे इस कब्ज़ा किये हुए घर में रहता है, नवयुवक के पिता को ज़मीन अलाट हुई थी। मैंने इस लड़के को आते ही पहचान लिया कि यह मेरी लड़की का आशिक दिखाई देता है जिसे मैं नफरत किया करता था, पर अब यह सिख के घर पैदा हुआ है। इसने मेरी कब्र के साथ ही आकर पेशाब कर दिया, तब यह पलीत होने के कारण मेरे कब्ज़े में आ गया। शुद्ध क्रिया और शुद्ध मन पर कभी भी किसी भी बदरूह को कब्ज़ा करने का हक नहीं हो सकता, अब यह मेरा शिकार था। चार साल तक तो सांस भी नहीं निकला, फिर बड़भाग सिंघ जी की धौली धार के नीचे, मैंने यह माना कि मेरा नाम सुलेमान है, पर मैंने इसे छोड़ना नहीं। इसके पिता ने कई मान्दरी, जन्त्र-मन्त्र तथा तावीज़ वाले बुलाए पर वे मन्त्र तथा कई कलाम मुझे स्वंय ही याद थे फिर मुझ पर उनका क्या प्रभाव होना था?

कल आपकी दरगाह में हाज़िर हुआ, तब मेरी जमीर ने कहा, ''अब रूकावट मत डालना और सीधा सादा बनकर कल्याण का रास्ता पकड़, यही वार-ए-गाह इलाही से तुझे बख्शवा देंगे। अब इसके बाद और कोई ठिकाना नहीं होगा। सो कृपा करो और मुझे इस दोजख की आग से निजात दिलाओ।''

महापुरुष दयाल हुए और फ़रमान किया, ''कल्याण तो सिमरण साधन द्वारा तथा आत्म ज्ञान की प्राप्ति द्वारा ही हो सकता है। यदि चाहे, हम खुदावन्द करीम से तेरे लिए एक मानस जन्म की माँग कर सकते हैं, वह कृपा करके प्रदान कर देगा, फिर तू शरीर के द्वारा सिमरण साधन करना और अन्त में कल्याण के रास्ते पर चलकर, फिर अन्तिम समय खुदावन्द करीम की दरगाह में पवित्र एवं साफ सेवकों, सन्तों तथा सिखों वाला मन्त्र ले जायेगा, बख्शीश हो जायेगी।''

सुलेमान ने प्रार्थना की बताईये मैं किस तरह तथा कहाँ जाकर जन्म लूँ। उस समय जब सुलेमान ने यह पूछा। महापुरुषों की दृष्टि ज्ञानी गुरदेव सिंघ स्नेवाल ललतों पर पड़ी जो सिर नीचे झुकाए, सारी वार्ता सुन रहा था। इसके घर केवल एक ही लड़की थी और कोई भी सन्तान नहीं हुई थी।

सन्त महाराज ने फ़रमान किया, ''सुना गहगड्ड यदि तू चाहे तो तेरे द्वारा सुलेमान का उद्धार हो सकता है। यह तेरे ही गृह में बच्चा बनकर आयेगा और फिर बड़ा होकर सिखी धारण करेगा।'' हँस कर कहा, ''सुलेमान! यहाँ तू धनी तो नहीं पर सिखी सिदक का धन जरूर हासिल कर लेगा।'' सत-वचन मुझे धन नहीं सिदक शान्ति और अन्त में खुदावन्द के दरबार से बख्शीश मिले। अन्य पदार्थों की जरूरत नहीं है। सन्त महाराज ने एक सेब अपने हाथों से गुरदेव सिंघ को दिया और कहा जाकर घर वाली को दे देना। वाहिगुरू की कृपा होगी।

पूरे नौ महीने तथा दस दिनों के बाद, आँठवे महीने की दस तारीख को गहगड्ड के गृह में बच्चे ने जन्म लिया और फिर सन्त महाराज की आज्ञा तथा गुरू महाराज के महावाक्य लिये और नाम गुरमीत सिंघ बख्शीश हुआ था।

यह समाचार छपने पर काफी गर्म प्रचारकों ने, पन्थ में काफी हलचली मचाई थी। कुछ समाचार पत्रों ने इसके पक्ष में तथा कुछ ने विरोध में लेख लिखे थे। मैंने हिन्द समाचार में एक विरोधी लेख पढ़ा था जिसका सार था कि प्रेत आधी जली हुई लाश को कहा जाता है, फिर वह दूसरे में प्रवेश नहीं कर सकता मैंने उत्तर में लाला जी को पत्र लिखा जिसका हवाला देना जरूरी समझता हूँ।

मैं किसी बहस में और दलीलबाजी में नहीं पड़ना चाहता मैं तो मोटी बुद्धि का मालिक हूँ। अपनी मति के अनुसार ही अर्ज़ करता हूँ। सन्तों का धर्म, संसार को तड़पन से बचाना होता है और लोगों के दुख दूर करने का यत्न करना है। एक ही समय में, एक ही स्थान पर दो दुखी, बीमार तथा तड़पते हुए मनुष्य सन्त जी महाराज के पास पहुँचते हैं। एक दिमागी तथा मानसिक रूप से बीमार है। उसकी मनोकलपना इतनी दुखी है कि वह न तो स्वंय सुखी है और न ही कोई और ही उसके पास बैठकर सुखी हो सकता है। फिर घर के लोगों का सुखी होना असम्भव बात है। यह पहली प्रकार का दुखी है, मन मोहन सिंघ है जिसका शारीरिक इलाज़ नहीं है बल्कि मानसिक तौर पर ही रोग निवृत्त हो सकता है।

दूसरा दुखी और बेचैन मनुष्य है जिसके घर में सन्तान की कमी है। वह गुरू पीरों से यह मुराद मांगता है कि मेरे घर सन्तान हो। सन्त कृपा करके अपनी रसना द्वारा, दृढ़ता सहित दोनों का सांझा इलाज़ करते हैं। एक का शारीरिक दुख दूर करने के लिये, उसकी मानसिक पीड़ा दूर करने के लिये, उसकी बेचैनी और तड़पन ही बन्द करते हैं और फिर उसे मनुष्य जन्म धारण करने की भी आज्ञा देते हैं।

दूसरे को जो पुत्र की कमी से, मारे हुए मनुष्य को वह वरदान देते हैं, ''जाओ, तुम्हारे घर पुत्र होगा।'' वह सुखी है, उसका शरीर सुखी तथा निरोग, भटकन से रहित हो गया। दूसरे पक्ष को निश्चय के कारण बच्चा मिल गया। सन्तों ने दोनों के लिये प्रार्थना ही की है। फिर बताओ इसमें बुरी तथा गन्दी बात क्या है? दुख हरण करके तड़पन रहित संसार, सन्तों की कल्पना है। जिसके लिये वह प्रार्थना करते हैं।

'चलता'

(गिआनी मेहर सिंह द्वारा रचित
नौ रत्न में से धन्यवाद सहित)

(पृष्ठ 49 का शेष)

दे गए थे, वे माता भाग कौर की चुनौती व फटकार सुनकर क्षमा माँगने के लिए चले हुए थे। पानी को पास में ही जानकर गुरू जी ने खिदराणे की ढाब पर ही मोर्चा लगा लिया। माझे से आए हुए सिक्खों ने जाकर मुगलों को घेर लिया, बेदावे वाले सिक्ख भी आकर उनके साथ मिल गए, बहुत ही घमासान सा युद्ध हुआ। शाही फौजें, सिक्ख योद्धाओं का मुकाबिला न कर सकीं और सिर पर पाँव रखकर रफूचक्कर हो गईं। यहीं पर गुरू जी ने जख्मी पड़े हुए सिक्खों का पातशाहियाँ प्रदान कीं। राजभाग के आशीर्वाद प्रदान किए और यहीं पर महा सिंह ने गुरू जी को बेदावा फाड़ने के लिए विनती की। गुरू जी ने बेदावा फाड़कर महा सिंह को अपने गले के साथ लगाया और उसे निहालो-निहाल कर दिया। गुरू जी के हाथों में ही भाई साहिब ने अपने प्राणों का त्याग किया। यहीं पर समस्त शहीदों की याद में 'शहीदगंज' बनाया तथा आप जी ने फुरमान किया -

मुकते सबै वहु पयारे।

तथा खिदराणे की ढाब का नाम श्री मुक्तसर साहिब प्रसिद्ध हुआ -

सिर दे सभ मुकतेसर लरे॥
नाम मुकतसर ता ते धरे॥

मुक्तसर के समस्त शहीदों को प्रणाम, कोटि-कोटि प्रणाम।

स्वामी राम जी के प्रेरणात्मक विचार
(Inspired Thoughts of Swami Ram)

डा. स्वामी राम जी

अनुवादिका - डा. तेजिन्दर मल्होत्रा

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक दिसम्बर, पृष्ठ - 61)

पतंजलि योग सूत्र का पहला शब्द है - '**Atha**' अथा जिसका अर्थ है अब। यानि कि अपने आपको तैयार करके अब तुम योग के मार्ग पर चलने के लिए तैयार हो। अतः योग विज्ञान को पढ़ने से पहले, समझने से पहले, अभ्यास करने से पहले तुम्हें स्वयं को तैयार कर लेना चाहिए, स्वयं को अनुशासन में ले आना चाहिए। बहुत सारे लोग, विशेष तौर पर पश्चिम के लोग अनुशासन शब्द से बहुत डरते हैं। उन्हें अनुशासन शब्द पसन्द ही नहीं हैं लेकिन अनुशासन का तात्पर्य यह है कि यदि तुम किसी चीज को देख रहे हो तो उसे पूरे ध्यान से देखो न कि ऊपर-ऊपर से बिना ध्यान के देखो। आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन भ्रमित जीवन है। दरअस्ल हम लोग अपनी इन्द्रियों में ही उलझे रहते हैं और इन्द्रियाँ बाह्य संसार के साथ जुड़ी रहती हैं लेकिन वास्तविकता यह है कि जो हम देखते हैं वह सत्य नहीं है और यही कारण है कि हम लोग परेशान रहते हैं।

उदाहरण के तौर पर तुम कोई चीज देखते हो लेकिन तुम्हारे मित्रगण उसी चीज को कुछ और ढंग से देखते हैं फिर इसी बात पर तुम्हारा टकराव हो जाता है और तुम उनसे सहमत नहीं हो पाते हो और वे तुमसे सहमत नहीं हो पाते हैं। इसका कारण यह है कि तुम सभी लोगों ने उस चीज को पृथक-पृथक तरीके से देखा है। अतः तुम्हें सावधान रहना चाहिए। तुम्हें स्वयं का शोधन करना है, स्वयं को अनुशासन में लाना है। तुम किसी अध्यापक के, समाज के या किसी गुरू के अधीन नहीं होओगे। बस तुम कहोगे कि मैंने स्वयं का शोधन करना है। यही विचार उत्तम है, इसी विचार को पक्का करो। एक समय आएगा फिर तुम जो चाहोगे वही कर सकोगे।

संसार में रहो, संसार के बनो नहीं

इस विचार को किस प्रकार से पक्का किया जा सकता है? तुम्हें अपने मन के पृथक-पृथक कार्यों को समझ लेना चाहिए। तुम्हारे शरीर को कुछ नहीं हुआ है, यह तो एक वस्तु है। तुम्हारी आत्मा को भी कुछ नहीं हुआ है, वह तो एक चित्त है, रूह है। समस्या तुम्हारे मन की है, मन के शोधन की है, परिवर्तन की है, मन के पृथक-पृथक कार्यों की है। यदि आवश्यकता है तो बस इन्हें नियन्त्रित करने की है, जब तुम इन्हें नियन्त्रित करना सीख लेते हो तो फिर तुम समाधि को प्राप्त कर लेते हो जो कि सर्वोच्च अवस्था है और इस अवस्था को तुम इसी जीवन में प्राप्त कर सकते हो। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि तुम्हें संसार का त्याग करना पड़ेगा। यदि तुमने संसार का त्याग कर दिया और तुम्हें मैडिटेशन करनी नहीं आती है तो फिर तुम कभी भी समाधि तक नहीं पहुँच पाओगे, दूसरी तरफ यदि तुम संसार में हो और तुम्हें मैडिटेशन करनी आती है यानि कि तुम यह जानते हो कि एक योगी की तरह से इस संसार में कैसे रहना है तो फिर तुम एक कमल की तरह से हो फिर तुम संसार में तो रहते हो लेकिन संसार से उसी प्रकार ऊपर हो जैसे कि कमल का फूल कीचड़ में तो उगता है लेकिन कीचड़ से ऊपर रहता है यानि की कीचड़ का प्रभाव अपने ऊपर नहीं होने देता है। ठीक इसी प्रकार से तुम संसार में रहते हुए भी संसार में भीगते नहीं हो, संसार के पानी में डूबते नहीं हो।

अब यहाँ पर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह किस प्रकार से किया जाए? यानि कि संसार के अन्दर रहते हुए उससे निर्लिप्त कैसे रहा जाए? आप चाहे किसी भी धर्म के अनुयाई हो या किसी भी दर्शन में विश्वास रखने वाले हो, बस आवश्यकता है मन को समझने की, उसके परिवर्तन को समझने की, उस विज्ञान को समझने की जो कि इस अवस्था को प्राप्त कर सकता है और वह विज्ञान है - मनोविज्ञान। दरअस्ल मनुष्य की समस्या क्या है? योग, मनोविज्ञान बहुत अच्छी तरह से बतलाता है कि सारे मनुष्य स्वयं को सांसारिक वस्तुओं के साथ जोड़कर रखते हैं।

जब तुम अपने निजत्व को भूल जाते हो तो फिर तुम दुखी होते हो। दुखी इसलिए होते हो क्योंकि संसार में तो सब कुछ क्षणभंगुर है, नाशवान है। तुम तो उन चीजों के साथ जुड़े हुए हो जो कि अजर व अमर नहीं हैं और यही तुम्हारे दुख का कारण है। संसार के अन्दर जो भी मनुष्य दुखी है उसका कारण बस यही है यानि कि उसने स्वयं को सांसारिक वस्तुओं के साथ जोड़ा हुआ है।

तुम स्वयं को सांसारिक वस्तुओं के साथ किस प्रकार से जोड़ते हो? तुम वस्तु को देखते हो, तुमने वृक्ष को देखा, तुम्हारे दिमाग में झन्नाहट सी चली गई, संवेदना चली गई, फिर दिमाग के माध्यम से तुम्हारे नाड़ी तन्त्र में आई और फिर शरीर के अन्य भागों में चली गई, तुम्हें दुख हुआ, खुशी हुई, तुम अपने शरीर के साथ जुड़ जाते हो और अपने मूल अस्तित्व को भूल जाते हो। संसार की प्रत्येक चीज बदलती है और तुम असुरक्षित हो जाते हो क्योंकि तुमने स्वयं को उनके साथ जोड़ा हुआ है। उदाहरण के तौर पर तुम मरने से डरते हो लेकिन वास्तव में तो तुम कभी भी मरते नहीं हो। दरअस्ल तुम अनन्त के बच्चे हो और अजर व अमर हो लेकिन तुम परम सत्य को भूल चुके हो, ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम लगातार स्वयं को सांसारिक चीजों के साथ ही जोड़कर रखते हो। आओ अब अपने घर को लौट चलें।

सारा संसार दुखी है या यूँ कह लो कि यह संसार तो है ही दुखों का घर। आम लोग कहते हैं कि यह संसार ही बुरा है, यह रचना ही बुरी है लेकिन वास्तव में यह बात सत्य नहीं है। दरअस्ल बात यह है कि मनुष्य ने स्वयं ही अपने लिए दुख व संताप बनाया हुआ है, उसने स्वयं ही स्वयं को भँवर में फँसाया हुआ है, जिसमें से उनका बाहर निकल पाना यदि असम्भव नहीं तो कठिन जरूर है। योग सूत्र कहता है कि स्वयं को जानो तुम यह कर सकते हो क्योंकि ऐसा करने के लिए तुम्हारे पास सब कुछ है बशर्ते तुम यह बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि तुम्हें आत्म सुधार की आवश्यकता है। सूत्र तुम्हें यह भी बताते हैं कि तुम्हें किस प्रकार से साधना करके स्वयं का शोधन करना है, वे केवल अनुशासन थोपने का ही कार्य नहीं करते हैं। वे किसी भी प्रकार के दरगाह के हुक्म की बात नहीं करते हैं। कहीं पर भी यह नहीं कहा गया है कि यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो नर्क में जाओगे। इस प्रकार का कोई कथन कहीं नहीं है। संसार के सारे धर्म तुम्हें यह बताते हैं कि यह करो और यह न करो लेकिन वे यह नहीं बताते हैं कि यह किस प्रकार से करना है दूसरी तरफ योग विज्ञान तुम्हें यह बताता है कि तुम्हें यह सब किस प्रकार से करना है। सबसे पहले जो करने की जरूरत है वह यह है कि स्वयं को सांसारिक वस्तुओं के साथ जोड़ना बन्द करो और स्वयं की जांच करो और तुम जल्दी ही पाओगे कि तुम शरीर से पृथक हो। अतः तुम्हें स्वयं को अनुशासन में लाने की जरूरत है, अपनी चेतना को जाँचने-परखने की जरूरत है।

अनुशासन का तात्पर्य है - पूरा ध्यान

कभी भी अनुशासन को अपने ऊपर थोपो नहीं, स्वयं के लिए समस्या खड़ी न करो। कभी भी यह मत कहो कि मैं कल से झूठ नहीं बोलूँगी, मैं हलाल नहीं खाऊँगी। सदैव अपने साथ विनम्र रहो, नम्रता में रहो क्योंकि नम्रता ही शक्ति है। दूसरों के साथ विनम्र रहो, हिंसक लोग इसीलिए हिंसक होते हैं क्योंकि वे अपने अन्दर से शान्त नहीं होते हैं। अतः सदैव शान्त रहो, विनम्र रहो। यदि तुम विनम्र रहोगे तभी तुम अपनी सोचनी, कथनी व करनी में नम्रता का इजहार कर सकोगे। अनुशासन का तात्पर्य है कि मैं अपने सारे यत्न अपने सामर्थ्य के अनुसार ही करूँगी। इसका अर्थ यह है कि मुझे ध्यान देना सीखना चाहिए और इसमें शक्ति का तनिक भी ह्रास नहीं होता है। ऐसा करते समय कोई व्याकुलता नहीं होनी चाहिए, कोई विघ्न नहीं होना चाहिए। मैं जो भी करूँ, ध्यानपूर्वक करूँ।

जो भी करो उसे सुख सहित करो और उसमें से आनन्द उठाओ। अपना सारा जीवन आनन्द उठाने के लिए सुनियोजित करो। लेकिन तुम ऐसा नहीं करते हो और इसीलिए तुम्हें समस्याएँ आती हैं। दरअस्ल तुम ध्यान नहीं देते हो और इसीलिए अपने लिए समस्याएँ खड़ी कर लेते हो। जब तुम यह देखते हो कि तुम्हारी अज्ञानता के कारण यह गलत हो गया है तो तुम उसे पाप के तौर पर मान लेते हो और फिर तुम उसे छोड़ देते हो फिर तुम कहते हो कि मैं यह नहीं कर सकता हूँ या ईश्वर मुझे माफ कैसे करेगा? आवश्यकता तो इस बात की है कि तुम स्वयं को ही माफ करना सीख लो। पतंजलि के अनुसार तुम पापी नहीं हो इसलिए स्वयं को कमजोर मत बनाओ। इस बात को बिल्कुल मत मानो कि तुम पापी हो। तुम अपने लिए बहुत सारी रुकावटें खड़ी कर लेते हो तुम्हें इस पर चिन्तन करना चाहिए।

'चलता'

रतवाड़ा साहिब में महापुरुषों के प्रवचनों का कार्यक्रम

प्रत्येक रविवार रतवाड़ा साहिब

(12.00 बजे से 4.00 बजे तक)

पूर्णमाशी - 2 तथा 31 जनवरी, दिन मंगलवार तथा बुद्धवार।

(रात्रि 12.00 बजे से प्रातः 4.00 बजे तक)

संक्रान्ति - माघि, 14 जनवरी, दिन रविवार।

(प्रातः 5.30 बजे से 8.00 बजे तक)

अमृत संचार - महीने के प्रथम रविवार को गुरुद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहिब में सुबह 11.00 बजे होता है।

INTERNET MEDIA AND LIVE TELECAST

Website : www.ratwarasahib.in

Website : www.ratwarasahib.org

Instagram : RATWARA SAHIB (https://instagram.com/ratwara.sahib/)

You Tube : https://www.youtube.com/user/babalakhbirsingh

Facebook : https://www.facebook.com/ratwarasahib1

Twitter : https://mobile.twitter.com/ratwarasahib13

Live Audio Link 1 - https://www.awdio.com/Ratwara Sahib

Live Audio Link 2 - https://mixlr.com/ratwara-sahib

E-mail :- sratwarasahib.in@gmail.com

Contact - 9569455861, 9417912900, 9814612900

आवश्यक निवेदन

आत्म मार्ग मैगज़ीन की मैंबरशिप/रिन्यिूवल या दसवंद पंजाब एंड सिंध बैंक की किसी भी शाखा द्वारा निम्नलिखित बैंक खातों में भेजी जा सकती है।

भारत (INDIA)

आत्म मार्ग मैगज़ीन की मैंबरशिप/रिन्यिूवल भेजने के लिए -

VGRMCT / Atam Marg Magajine
S/B A/C No. 12861000000003 RTGS/IFSC Code - PSIB0021286
Branch Code - C1286

दसवंद भेजने के लिए -

Vishav Gurmat Roohani Mission Charitable Trust
SB A/C No. 12861100000005 RTGS/IFSC Code - PSIB0021286
Branch Code - C1286

विदेश (ABROAD)

Vishav Gurmat Roohani Mission Charitable Trust
Punjab National Bank SB A/C No. 0779000100179603
RTGS/IFSC Code - PUNB0077900 Branch Code - 077900

यदि चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा राशि भेजनी हो तो ऊपरलिखित खातों अनुसार **Gurdwara Ishar Parkash Ratwara Sahib, P.O. Mullanpur Garibdas. Distt S.A.S. Nagar (Mohali) - 140901** पर भेजने की कृपा करें। यदि **Online** राशि भेजनी हो तो राशि की जानकारी देते समय अपना नाम व पूरा पता मोबाइल नं. +91-98889-10777 पर **SMS** भेजें जी।

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि यदि आपने अभी तक आत्म मार्ग मासिक पत्रिका की सदस्यता ग्रहण नहीं की है तो आप कृप्या अधोलिखित प्रारूप पत्र को भरकर सदस्यता ग्रहण करने की कृपा करें। यदि आप पहले से ही सदस्यता ग्रहण कर चुके हैं, तो पुनर्नवीनीकरण हेतु इस प्रारूप पत्र के साथ आवश्यक चैक/ड्राफ्ट "VGRMCT/ATAM MARG MAGAJINE" के नाम पर प्रेषित करने की कृपा करें।

Subscription form ✓ ☐ नई सदस्यता ☐ पुनर्नवीनीकरण ☐ आजीवन सदस्यता

within India

Subscription Period	By Ordinary Post/Cheque	By Registered Post/Cheque
1 Year	Rs. 300/320	
3 Year	Rs. 750/770	
5 Year	Rs. 1200/1220	
Life	Rs 3000/3020	

	Annual	Life
U.S.A.	60 US$	600 US$
U.K.	40 £	400 £
Canada	80 Can $	800 Can $
Australia	80 Aus $	800 Aus $

जनवरी ☐ फरवरी ☐ मार्च ☐ अप्रैल ☐ मई ☐ जून ☐ जुलाई ☐ अगस्त ☐ सितम्बर ☐ अक्तूबर ☐ नवम्बर ☐ दिसम्बर ☐

नाम/Name पता/Address.....

.....Pin Code..... Phone ..... E-mail :.....

मैं.....रुपये मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चैक नं.....दिनाँक.....द्वारा प्रेषित कर रहा हूँ। हस्ताक्षर.....

सन्त वरियाम सिंह चैरिटेबल अस्पताल, रतवाड़ा साहिब

समय - सुबह 9.30 बजे से 2.00 बजे तक (रविवार से शुक्रवार)

डाक्टरों का समय - सुबह 10.00 बजे से 12.00 बजे तक

दूरभाष नं. 98786-95178, 92176-93845

डा. का नाम	विशेषज्ञ	दिन
1. डा. जसबीर कौर	जनरल मैडिसन	सोमवार
2. डा. श्वेता	फिजियोथेरेपिस्ट	सोमवार से शुक्रवार
3. डा. हरबंस सिंह	अस्थि रोग तथा जनरल मैडिसन	मंगलवार
4. डा. तेजिंदर सिंह	जनरल मैडिसन	मंगलवार
5. जे.पी.आई. अस्पताल मोहाली के डाक्टर	आँखों के विशेषज्ञ	मंगलवार
6. श्री माइकल जी	एक्स-रे विशेषज्ञ	मंगलवार तथा वीरवार
7. डा. भगत सिंह मक्कड़	जनरल मैडिसन/ई.एन.टी./ब्लॅड शूगर आदि	बुद्धवार
8. डा. जे. एस. गुजराल	जनरल मैडिसन/शिशु रोग विशेषज्ञ	बुद्धवार
9. डा. आर. एस. संधू	अस्थि रोग तथा जनरल मैडिसन	वीरवार
10. डा. संतोष अनेजा	जनरल मैडिसन	वीरवार
11. डा. एस. के. बांसल	जनरल मैडिसन	शुक्रवार
12. डा. बरिन्दर सिंह	जनरल मैडिसन तथा त्वचा रोग विशेषज्ञ, एअरो स्पेस मैडिसन	शुक्रवार
13. डा. भगत सिंह मक्कड़	जनरल मैडिसन/ई.एन.टी./ब्लॅड शूगर आदि	रविवार
14. डा. जिंदल, डा. गर्ग	जनरल मैडिसन	रविवार
15. डा. गुरप्रीत कौर गिल	होम्योपैथिक	बुद्धवार

-: लैबोरेटरी टैस्ट तथा अन्य सुविधाएँ :-

1. खून टैस्ट, 2. सारे खून सैल काउंट टैस्ट 3. ब्लड शुगर टैस्ट, 4, किडनी टैस्ट, 5. लीवर टैस्ट, 6. लिपिड परोफाइल टैस्ट, 7. थायराइड टैस्ट, 8. हिमोग्लोबिन टैस्ट, 9. पेशाब टैस्ट, 10. स्टूल टैस्ट, 11. ई.सी.जी., 12. एक्स-रे (क्ष-किरण)

सारे लैबोरेटरी टैस्ट आधे शुल्क पर किये जाते हैं तथा मरीज को दवाई मुफ्त दी जाती है।

जरूरी सूचना

प्रत्येक रविवार को अस्पताल खुला रहेगा। समय 11.00 से 1.00 बजे तक। प्रत्येक शनिवार को अस्पताल बन्द रहेगा।

विश्व गुरमत रूहानी मिशन चैरिटेबल ट्रस्ट

के मुख्य संस्थापक प्यारे महापुरुष सन्त बाबा वरियाम सिंह जी द्वारा लिखित व प्रकाशित पुस्तकें

यह पुस्तकें श्री गुरू ग्रन्थ साहब जी के गूढ़ सिद्धान्तों को सरल रूप में स्पष्ट करके जिज्ञासुओं के समक्ष प्रस्तुत करती हैं। इनकी विषय वस्तु के रूप में नाम, सेवा व स्मरण की विधियों को प्रस्तुत करते हुए जन साधारण की भाषा का अत्यन्त सरल, मार्मिक व हृदयस्पर्शी प्रयोग किया गया है। यह दुर्लभ पुस्तकें, प्रत्येक जिज्ञासु व साधक के लिए एक अमूल्य निधि के रूप में हैं। अध्यात्मिक सुख व शान्ति प्राप्त करने हेतु आप इन्हें प्राप्त करके स्वयं पढ़ें तथा अन्य श्रद्धालुजनों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। यह सभी पुस्तकें गुरुद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहब में आपकी सेवार्थ उपलब्ध हैं -

हिन्दी	
1. सुरति शबद मार्ग	70/-
2. किव कुड़ै तुटै पालि	35/-
3. बात अगंम की - सात भागों में	400/-
4. किव सचिआरा होइए - भाग पहला	35/-
5. किव सचिआरा होइए - भाग दूसरा	65/-
6. किव सचिआरा होइए - भाग तीसरा	100/-
7. होवै आनन्द घणा	30/-
8. बाबाणियाँ कहानियाँ	50/-
9. सुरतिआं उपजै चाउ	40/-
10. सर्व प्रिय गुरू गोबिंद सिंह जी	10/-
11. भक्त प्रहलाद	10/-
12. अमृत फुहार	10/-
13. अगम अगोचर का मार्ग	70/-
14. जपुजी साहिब सटीक	15/-
15. अमर ज्योतियाँ	15/-
16. अमर गाथा	100/-
17. वैशाखी	10/-
18. साजन चले प्यारिआ	10/-
19. अविनाशी ज्योति - भाग 1	90/-
20. रूहानी गुलदस्ता	70/-
21. चउथै पहरि सबाह कै	60/-

English Version	Price
1. Baisakhi	Rs. 5/-
2. How Rend The Veil of Untruth	Rs. 70/-
C. Discourses on the Beyond -1	Rs 50/-
4. Discourses on the Beyond -2	Rs. 50/-
5. Discourses on the Beyond -3	Rs. 50/-
6. Discourses on the Beyond -4	Rs. 60/-
7. Discourses on the Beyond -5	Rs. 60/-
8. The way to the imperceptible	Rs. 80/-
9. The Lights Immortal	Rs. 20/-
10. Transcendental Bliss	Rs. 70/-
11. How to Know Thy Real Self-(Vol-1)	Rs. 80/-
12. How to Know Thy Real Self-(Vol-2)	Rs. 80/-
13. How to Know Thy Real Self-(Vol-3)	Rs. 110/-
14. The Dawn of Khalsa Ideals	Rs. 10/-
15. A Glimpse of His Holiness - Baba ji	Rs. 5/-
16. Divine Word Contemplation Path	Rs. 150/-
17. The Story of Immortality	Rs. 260/-
18. Why not Contemplate the Lord	Rs. 200/-

ऊपरलिखित पुस्तकें आप जी मनीआर्डर, चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा रतवाड़ा साहिब से मंगवा सकते हैं या ट्रस्ट के अकाउंट में राशि जमां करवा कर मोबाइल नं. 9417214391, 9592009106, 9417214379 पर सूचित कर सकते हैं। **Bank Name : Pb & Sind Bank, A/c Name. VGRMCT/Atam Marg Magajine, S/B A/C No. 12861000000003, RTGS/IFSC Code - PSIB0021286, Branch Code - C1286**